A DESCRIPTIVE CATALOGUE of SANSKRIT MANUSCRIPTS OF ORISSA.

IN THE COLLECTION OF THE ORISSA STATE MUSEUM.

VOLUME–I.

SMṚTI MANUSCRIPTS.

By

SRI KEDARNATH MAHAPATRA, B. A., (Hons.) D. Ed.,

CURATOR, ORISSA STATE MUSEUM.

Published by

SRI B. V. NATH, M. A., B. L., DIP-IN MUSEOLOGY

SUPERINTENDENT OF RESEARCH & MUSEUM

GOVERNMENT OF ORISSA.

NEW CAPITAL, BHUBANESWAR.

1958.

PRICE Rs. 10/—

Digitized by PPRACHIN, SOA

Contents

Serial No.	Cat No	Name of the work	Author	Page
1	Dh 137(a)	अग्निहोत्र होमपद्धतिः	शम्भुकर	1
2	Dh163	अभिषेक विधिः		1
3	Dh 164	अद्भुत दर्पण	माधव	2
4	Dh 1-5	अद्भुत सागर	बल्लालसेन	3
5	Dh 165	आसनशुद्ध्यादि		3
6	Dh 123	उपनयन पद्धतिः		4
7	Dh 166	उपनयन पद्धतिः		4
8	P 29 (a)	एकाम्र चन्द्रिका		4
9	Dh 97	एकाम्र चन्द्रिका		5
10	Dh 217	एकाम्र चन्द्रिका		6
11	P 18	एकाम्र पुराणम्		6
12	Dh 218	कपिल संहिता		7
13	Dh 168	कर्मकाण्डः		8
14	Dh 35	कर्माङ्गपद्धतिः		8
15	Dh 3[illegible]	क्रमदीपिका or गोपाल दीपिका	केशवाचार्य	9
16	Dh 74	कामन्दकीय नीतिसारः		10
17	Dh 41 (b)	कालदीपः	दिव्यसिंह महापात्र	11
18	Dh 92(b)	,,	,,	12
19	Dh 129	,,	,,	12
20	Dh 168	,,	,,	12
21	Dh 7	काल निर्णयः	माधवाचार्य	13
22	Dh 9	,,	,,	14
23	Dh 10	,,	,,	15
24	Dh 149	,,	,,	15
25	Dh 169	,,	रघुनाथ दास	16
26	Dh 115	काल सर्वस्वम्	महामहोपाध्याय कृष्णमिश्र	17
27	Dh 116	,,	,,	20
28	Dh 48(b)	,,	,,	20
29	Dh 155	कालसारः	गदाधर राजगुरु	21
30	Dh 44	किशोर नित्यकर्मपद्धतिः		22
31	Jy 19(a)	कुण्डलक्ष्म विवृतिः	रामचन्द्र वाजपेयी	22
32	Dh 55	कृत्यकौमुदी	बृहस्पति	23
33	Dh 59 (b)	,,	,,	25
34	Dh 162	,,	,,	25

Digitized by PPRACHIN, SOA

Serial No	Cat No	Name of the work	Author	Page
35	Dh 63	कृत्यसारमञ्जरी	कृष्णप्रियादास	26
36	Dh 104	कृष्णप्रेमरसचन्द्रतत्त्वमञ्जलहरी		27
37	Dh 149	केदारकल्प:		28
38	Dh 36	गणेशाचार चन्द्रिका	दामोदर	28
39	Dh 170	गणेश पूजाविधि:		29
40	Dh 109	गृहयज्ञ विधि		29
41	Dh 118	,,	याज्ञवल्क्य	29
42	Dh 160	गृहयज्ञ पद्धति:	,,	30
43	Dh 171	ग्रहयज्ञ:	,,	30
44	Dh 172	गृहयज्ञ होमविधि:	,,	30
45	Dh 31	गायत्री जप पद्धति:		31
46	Dh 18	गृहप्रतिमा संस्कार पद्धति:		31
47	Dh 79	गोपालार्च्चन विधि or नीलाद्रि महोदयार्च्चन पूजाविधि:	महाराजा पुरुषोत्तम देव	32
48	Dh 69 (d)	,,	,,	32
49	Dh 173	,,	,,	33
50	S.ms. 9	गोपालपूजा पद्धति:	,,	33
51	Dh 179	गोपालार्च्चन पद्धति:	वासुदेव	33
52	Dh 93	चातुर्मास्य महात्म्यम्		34
53	Dh 111	चतुर्वर्गचिन्तामणि (कालनिर्णय:)	हेमाद्रि	34
54	B.S.Ms. 10	तिथितत्त्वम्	रघुनन्दन	35
55	Dh 156	दशकर्म पद्धति:		35
56	Dh 137(b)	दर्शपौर्णमासेष्टि पद्धति:	शम्भुकर	36
57	Dh 46	दक्षिणामूर्ति पूजाविधि:		36
58	Dh 122	दानवाक्यविधि:	नारायण भट्टाचार्य	37
59	Dh 23 (b)	दायभागतत्त्वम्	रघुनन्दन	37
60	Dh 52 (c)	दुर्गोत्सव चन्द्रिका	गजपति रामचन्द्र देव	38
61	Dh 174	,,	,,	38
62	T 16	,,	,,	38
63	T 23	,,	,,	39
64	Dh 175	दुर्गोत्सवपूजा		40
65	Dh 121	दुर्बलपद्धति:		40
66	Dh 176	देवीपूजा		41
67	Dh 71	देवी महात्म्य, देवीपूजा		41

Digitized by PPRACHIN, SOA

Serial No	Cat No	Name of the work	Author	Page
68	S. Ms.23	धर्मरत्नस्मृतिः	जीमूतवाहन	41
69	Dh 42	नटकूट यन्त्रम्		42
70	Dh 65	नवग्रहपूजा होमादयः		43
71	Dh 87	नवग्रह यज्ञः		43
72	Dh 67	नानाविध व्रतम्		43
73	Dh 51	नित्याचार पद्धतिः		44
74	Dh 177 (a)	नित्याचार पद्धतिः or नित्याचार क्रम सूचिका	कृष्णदास	44
75	Dh 11	नित्याचार प्रदीपः (प्रथमभाग कृत्यम्)	नरसिंह वाजपेयी	45
76	Dh 110	,,	,,	46
77	Dh 59 (a)	नित्याचार प्रकरणम्	कृष्णदास	46
78	Dh 73	नीलाद्रिनाथ पूजाविधि	महाराजा पुरुषोत्तमदेव	47
79	Dh 173	,,	,,	47
80	P 22	नीलाद्रि महोदयः		48
81	Dh 180	नृसिंहगायत्री पूजाविधिः		48
82	Dh 40 (b)	पञ्चाक्षर कल्पः	उपमन्यु	49
83	Dh 69 (c)	पञ्चपूजाविधिः		49
84	Dh 66	पण्डित सर्वस्वम्		50
85	Dh 121 (b)	पण्डित सर्वस्वम्	हलायुध	51
86	Dh 181	,,	देव	51
87	Dh 143	,,	हलायुध	52
88	Dh 13 (b)	पराशर संहिता	पराशर	52
89	Dh 43 (a)	,,	,,	53
90	Dh 96 (b)	,,	,,	54
91	Dh 183	,,	,,	55
92	Dh 12	प्रतिष्ठा प्रदीपः	नरसिंह वाजपेयी	55
93	Dh 45	प्रतिष्ठा	(पितामहोक्त)	56
94	Dh 47	प्रतिष्ठा		57
95	Dh 57	प्रतिष्ठा	मागुणि मिश्र	57
96	Dh 75	प्रतिष्ठा	(हयशीर्षोक्त)	58
97	Dh 76	प्रतिष्ठा	(नृसिंह पुराणोक्त)	58
98	Dh 90	प्रतिष्ठा	(मत्स्यपुराणोक्त)	59
99	Dh 117	प्रतिष्ठाविधिः		59

Digitized by PPRACHIN, SOA

Serial No	Cat No	Name of the work	Author	Page
100	Dh 119	प्रतिष्ठा		59
101	Dh 121 (a)	प्रतिष्ठा		60
102	Dh 148	प्रतिष्ठा		61
103	Dh 1[illegible]4	प्रतिष्ठा		61
104	Dh 144	प्रतिष्ठासारसंग्रहः	चन्द्रशेखर	61
105	Dh 159	पार्वणश्राद्ध प्रदीपिका	कोशलेश्वर	62
106	B.S. 24	प्रायश्चित्त विवेकः	शूलपाणि	63
107	Dh 2[illegible] (a)	,,	,,	63
108	Dh 91 (b)	प्रायश्चित्त दीपिका	रामचन्द्र वाजपेयी	64
109	Dh 114	प्रायश्चित्त मनोहरः	मुरारिमिश्र	64
110	Dh 182	,,	,,	65
111	Dh 184	पितृतर्पण विधिः		65
112	Dh 52 (b)	पुरश्चरण चन्द्रिका	देवेन्द्राश्रम	66
113	Dh 52 (a)	पुरश्चरण दीपिका	चन्द्रशेखर	67
114	Dh 185	,,	,,	67
115	P 19	पुरुषोत्तम माहात्म्यम्	(पद्मपुराणोक्त)	68
116	P 21	,,		68
117	P 21	,,	(स्कन्द पुराणोक्त)	68
118	P 25	,,	(बृहन्नारदीय पुराणोक्त)	69
119	Dh 186	पुरुषसूक्तम्		70
120	B.S.	पूजा पद्धतिः		70
121	Dh 24	भक्तिरत्नावली	विष्णुपुरी	71
122	Dh 34	,,	,,	72
123	Dh 53	भक्तिरत्नावली	(कान्तिमाला टीका समेता)	72
124	Dh 187	,,	,,	73
125	B. S. 7	,,	,,	73
126	Dh 135 (a)	,,	,,	73
127	Dh 31	भारत सावित्री		74
128	Dh 21	मण्डल सर्वस्वम्		74
129	Dh 25	मण्डल प्रकाशः	वासुदेव रथ	75
130	Eh 50	मधुसूदन मन्त्रजप विधिः		76
131	Do 85	मानव धर्मशास्त्रम्	मनु	76
132	Dh 5	महार्णव कर्मविपाकः	मान्धाता	77
133	Dh 6	,,	विश्वेश्वर महापात्र	77

Digitized by PPRACHIN, SOA

Serial No	Cat No	Name of the work	Author	Page
134	P 29 (b)	मुक्ति चिन्तामणि:	गजपति पुरुषोत्तम देव	78
135	Dh 69 (a)	यन्त्रचिन्तामणि:	शिव	79
136	Dh 103	यात्राभागवतम्	बालुङ्की पाठी	79
137	Dh 112	याज्ञवल्क्य टीका	विज्ञानेश्वर	80
138	Dh 94	,,	,,	81
139	Dh 135 (b)	रागवर्त्म चन्द्रिका	विश्वनाथ चक्रवर्ती	81
140	Dh 20 (b)	राधाकृष्ण उपासना पद्धति:		82
141	Dh 188	रुद्रचण्डी		82
142	Dh 189	रुद्राभिषेक:		83
143	Dh 20	रुद्राभिषेक विधि:		83
144	Dh 190	लिङ्ग पूजाविधि:		83
145	Dh 17 (a)	वशिष्ठकल्प:		84
146	B. S. 2	व्रतकथा		84
147	Dh 150	व्रत कथा		85
148	Dh 17(b)	व्रतकथा		85
149	Dh 151	व्रतकथा		85
150	Dh 153	व्रतकथा		86
151	Dh 142	व्रत पद्धति:	विद्याकर वाजपेयी	86
152	Dh 80	विवाह पद्धति:		87
153	Dh 132	विवाह पद्धति:	दामोदर	87
154	Dh 125	विवाहकर्म		88
155	Dh 126	,,		88
156	Dh 95	विभिन्न व्रतकथा		88
157	Dh 62	विभिन्न पूजाविधि:		89
158	Dh 61	विभिन्नव्रत प्रकरणम्		89
159	Dh 64	विभूतियोग: and मधुसूदन मन्त्रविधि:		90
160	P. 24	विरजा माहात्म्यम्		90
161	Dh 17 (c)	विश्वामित्र कल्प:		90
162	Dh 19	विष्णुभक्ति चन्द्रोदय:	नृसिंहारण्य महामुनि	91
163	Dh 127	वृषोत्सर्ग विधि:	दक्ष	92
164	Dh 191	शतरुद्र: विनायक कल्पादयश्च		92
165	T 13	शारदाशारदार्चन पद्धति:	गोदावर मिश्र	93
166	T 27	,,	,,	94

Digitized by PPRACHIN, SOA

Serial No	Cat No	Name of the work	Author	Page
167	Dh 29	श्राद्ध विधिः		94
168	Dh 192 (a)	श्राद्ध कल्पसूत्रम्		94
169	Dh 41 (a)	श्राद्धदीपः	दिव्यसिंह महापात्र	95
170	Dh 92 (a)	,,	,,	96
171	B S Ms 3	श्राद्धपद्धतिः		96
172	Dh 20(b)	,,		96
173	Dh 158	,,		97
174	Dh 152	शिव पूजाविधिः or शैव चिन्तामणिः		97
175	Dh 22	शुद्धि चन्द्रिका	कालिदास चयनी	98
176	Dh 48(a)	शुद्धिचन्द्रिका टीका	सन्तिरथ	98
177	Dh 68	शुद्धिचन्द्रिका with टीका	विद्यावागीश	99
178	B. S. Ms 20	शुद्धि तत्त्वम्	रघुनन्दन	100
179	Dh 39	शुद्धि दीपिका	श्रीनिवास	100
180	Dh 58	,,	,,	101
181	Dh 138	शुद्धिदीपिका with अर्थकौमुदी टीका	कविकङ्कण गोविन्दानन्द	102
182	Dh 193	शुद्धिदीपिका	श्रीनिवास	102
183	Dh 194	,,	,,	103
184	Dh 91 (c)	शुल्वभाष्यम्		104
185	Dh 86	शुद्धाह्निक पद्धतिः	गोपीनाथ पट्टनायक	105
186	Dh 33	शैवकल्पद्रुमः	लक्ष्मीधर मिश्र	105
187	Dh 195	,,	,,	106
188	Dh 40 (a)	,,	,,	106
189	Dh 70	शैवार्चन चन्द्रिका		107
190	Dh 37	शैवचिन्तामणिः		107
191	Dh 131	,,		108
192	Dh 196	,,		108
193	Dh 197	,,		108
194	Dh 56	,,		109
195	Dh 78	शैवपद्धतिः	मागुणि मिश्र	109
196	Dh 113	शैव प्रतिष्ठासारः		109
197	Dh 161	शौचाचारम्		109
198	Dh 216	सदाचार विवेक	वाणीदास बड़पण्डा महापात्र	109

Digitized by PPRACHIN, SOA

Serial No	Cat No	Name of the work	Author	Page
199	B.S.Ms 22	सन्तान गोपालपूजा		110
200	Dh 91 (a)	सर्वतोमुख पद्धतिः		110
201	Dh 219	स्वर्णाद्रिमहोदयः		111
202	Dh 192	स्मार्तरत्नावली		111
203	Dh 26	सूरिसर्वस्वम्	कविभूषण गोविन्द सामन्तराय	112
204	Dh 27	"	"	113
205	Dh 28	"	"	116
206	Dh 96 (a)	स्मृतिसरोज कलिका	विष्णुशर्म्मा	117
207	Dh 198	स्मृति चन्द्रिका	"	118
208	Dh 199	स्मृति संग्रह or दिव्यसिंहकारिका	दिव्यसिंहसुधी	118
209	Dh 13	स्मृतिसार संग्रहः	विश्वनाथ मिश्र	119
210	Dh 14 (b)	"	"	120
211	Dh 15	"	"	121
212	Dh 16	"	"	121
213	Dh 108	"	"	121
214	Dh 157	"	"	121
215	Dh 200	स्मृतिसारोद्धारः		122
216	Dh 60	"		122
217	Dh 72	हरिभक्ति विलासः	गोपालभट्ट	123
218	Dh 59	"	"	123
219	B.S.Ms 21	" with दिग्दर्शनीटीका		124
220	Dh 103 (b)	हरिहरचतुरङ्गः	गोदावर मिश्र	125

Miscellaneous.

— स्तव स्तोत्राणि —

Serial No	Cat No	Name of the work	Author	Page
221	Dh 20	अष्टकमाला		126
222	Dh 106 (a)	आनन्दलहरी with टीका	रघुनन्दनः	127
223	Dh 88	केशव सहस्रनाम		127
224	Dh 49 (a)	गोपाल सहस्र नाम		128
225	B. S. 1	"		128
226	Dh 84	गोविन्द विरुदावली		128
227	Dh 202	दुर्गाष्टकादयः		129
228	Dh 203	देवीस्तव with टीका		129
229	Dh 204	नृसिंह पुराणोक्त वक्रतुण्ड कवचादयः		129

Serial No.	Cat No	Name of the work	Author	Page
230	Dh 102	विभिन्न पञ्जर स्तोत्राद्य:		130
231	Dh 107	विभिन्न स्तवस्तोत्राद्य:		130
232	Dh 139	विभिन्न स्तोत्राद्य:		131
233	Dh 120	,,	,,	131
234	Dh 205	मदनसार मोहपञ्जर:		132
235	Dh 106	महिम्नस्तोत्र with टीका	मधुसूदन सरस्वती	132
236	Dh 39(b)	राधा सहस्र नाम		133
237	Dh 140(a)	बगलामुखी प्रयोग		133
238	Dh 206	बटुक भैरव स्तोत्रम्		133
239	Dh 207	,,		134
240	Dh 88(b)	विष्णुसहस्र नाम		134
241	Dh 220	,,		134
242	P 108	,, with टीका		135
243	Dh 98	,,		135
244	Dh 208	शिव सहस्र नाम		136
245	Dh 128	,,		136
246	Dh 209	श्रीकृष्ण स्तोत्रावली		136
247	Dh 101	स्तवस्तोत्रमाला		137
248	Dh 210	,,		138
249	Dh 211	स्तवावली		138
250	Dh 212	स्तुतिस्तोत्राद्य:		138
251	Dh 140(b)	स्तोत्रकवचाद्य:		139
252	Dh 213	स्तोत्रमन्त्रावली		139
253	Dh 214	स्तोत्रावली		140
254	Dh 215	,,		140
255	Dh 81	,,		140
256	Dh 17	,,		141
257	Dh 126	हनुमत् कवचम्		141

Digitized by PPRACHIN, SOA

PREFACE.

Mahamahopadhyaya P. V. Kane in his monumental work entitled "History of Dharmaśāstra" covering five big volumes has devoted only five pages to the Dharmaśāstra works of Orissa written during the reign of Gajapati Prataparudra Deva, (1) and has also given the names of few other Smṛti works of Orissa in the list appended at the end of the volume. The names of some Smṛti manuscripts discovered in Orissa find mention in the Descriptive Catalogue of Sanskṛt manuscripts prepared and published by the Asiatic Society of Bengal (2).

Search of manuscripts carried in Orissa during the last three decades has brought to light a large number of manuscripts on Dharmaśāstra which were either compiled or copied in Orissa. They are mostly preserved in the Raghunandana library at Puri, Manuscripts Library of the Utkal University, Cuttack and the Manuscripts library of the Orissa State Museum, Bhubaneswar. But only the manuscripts preserved in the Museum have so far been classified according to subject-matter and Descriptive Catalogues of the manuscripts acquired by the end of the year 1956—57 have been prepared. This first volume of the Descriptive Catalogue of Sanskṛt manuscripts contains descriptions of about 250 manuscripts on Smṛti lying in the collection of the Orissa State Museum.

From the history of Dharmaśāstra, it is known that the ancient Dharmaśāstras of Gautama, Baudhayana, Apastamba and others and the famous Manusmṛti were written during the first period dating from at least the sixth century B. C. to the beginning of the Christian era. The next period when most of the versified Smṛtis were composed ranges from the first century of the Christian era to about 800 A. D. The third period covers about a thousand years during which the commentaries on older Smṛti-works and digests or Nibandhas were compiled, (3). In our collection there is only one manuscript (Dh/120) of Manava Dharmaśāstra or

---

(1) . History of Dharmaśāstra Vol. I, P. 410—414.

(2) . Descriptive Catalogue, of Sanskrit Manuscripts in the collection of the Asiatic Society of Bengal. Vol. IV. Smṛti Manuscripts.

(3) , History of Dharmaśāstra Vol. I. P. 246,

Digitized by PPRACHIN, SOA

Manu Smṛti, which is a work of the earliest period, referred to above. There are only two manuscripts (Dh/125, Dh/126) containing the commentary on Yājnavalkya Smṛti written by the famous Vijñāneśvara. Most of the manuscripts in our collection contain works compiled during a period ranging from C 1100-1750 A. D.

ŚATANANDA ACHARYA.

It is not definitely known when complete codes of Smṛti works began to be written in Orissa. The large number of copperplate charters and stone inscriptions, so far discovered in Orissa are silent about this matter. By research work carried during the last seven years on this subject, it is now known that Śatānanda Āchārya was the earliest Smṛti writer of Orissa. But he was more renowned for his notable work on Astronomy called 'Bhāsvatī' or पञ्चसिद्धान्ती भास्वती which was finished in Yugābda 4200 or Saka year 1021, which is equivalent to 1099 A. D. as recorded in the first and last verses of this work. He was a native of Purushottama or Purī and was the son of Śaṃkara and Sarasvatī, his family surname being Āchārya. He based his astronomical calculations from the meridian of his native town Purī (4)

But Śatānanda was also reputed as the author of two other works namely 'Śatānanda Ratnamālā' and 'Śatānanda Saṃgraha'. Of these two the latter was definitely a work on Smṛti, as it is profusely quoted by the later Smṛti writers of Orissa. Śatānanda Saṃgraha which is definitely one of the earliest Smṛti works of Orissa, is now practically lost as no information about the discovery of its manuscript is found in reports on the search of manuscripts so far available to us. But by quotations made from this work in almost all the later Smṛti works of Orissa, it is proved to have been accepted as an authority for about seven centuries after its compilation. So a rough idea about the nature and contents of this valuable work is given below, which is based on the study of quotations made from this. From our knowledge so far gained, this work can be put into the category of a digest on 'Kāla' (काल) treating of the principles of Jyotisha as applied to Smṛti. The contents of this known by research are as follows:-

(4) . Vide my article 'Śatānanda', a famous Astronomer and Smṛti writer of Orissa O. H. R. J. Vol. V Nos. 3 & 4. pp. 183- 189

Digitized by PPRACHIN, SOA

सम्वत्सरनिर्णयः, मासनिर्णयः, तिथिनिर्णयः, नक्षत्रमासनिर्णयः, प्रतिपन्-निर्णयः, सावनमानं, अशुभकाल प्रकरणं, मलमास प्रकरणं, गुर्वादित्य कारिका, सिंह-वृहस्पति योगः, व्रतादौ अशुभकाल निरूपणं, सीमन्तोन्नयनं, विवाह प्रकरणम्, उपाकर्म-शस्त्रादि हतानां चतुर्दशी श्राद्धं वा मृताहकाल निर्णयः, प्रदीपामावास्या श्राद्धविस्तारः। .... अशोकाष्टमी, कामदेव त्रयोदशी वा मदनत्रयोदशी, चैत्रशुक्ल त्रयोदशी, चैत्र-कृष्ण चतुर्दशी, महाचैत्री वा चैत्र पौर्णमी, महा वैशाखी, महाकार्त्तिकी, सङ्गमस्नानं, सावित्री व्रतं, भूमिरजस्वला निर्णयः, आषाढैकादशी वा हरिशयनैकादशी, बलभद्र पूर्णिमा वा श्रावण पूर्णिमा, भाद्रशुक्ल तृतीया वा गौरीव्रतं, भाद्र शुक्ल चतुर्थी वा शिवचतुर्थी, भाद्र शितपञ्चमी वा ऋषि पञ्चमी, सप्तपुरिकामावास्या, इन्द्रपूर्णिमा, अप-राजितादशमी, आश्विनशुक्लादशमी, कौमुदीपौर्णमासी वा कुमारपूर्णिमा, प्रदीपामावास्या, आकाशदीपदानं, कार्त्तिककृष्ण त्रयोदशी, भद्राष्टमी, पौषशुक्लाष्टमी, माघ कृष्ण चतुर्दशी, वरदा चतुर्थी वा माघशुक्लचतुर्थी, श्रीपञ्चमी माघ शुक्ल पञ्चमी, दोलयात्रा (फाल्गुन पूर्णिमा)

This work on Smṛti was compiled by Śatananda either towards the end of the eleventh century or in the first part of the twelfth century when Anantavarma Chodaganga Deva, the founder of the Gaṅga Empire was ruling in Orissa (1077-1147 A. D.) and as such it is historically very important.

The other work of Śatananda called Śatananda Ratnamala after the name of the author was also a digest on Smṛti as it is quoted in the later Smṛti works of Orissa. A palm leaf manuscript of Ratnamala or Ratnavalī was discovered some twenty years ago in a Brahman village near Puri by a Pandit named Śrī Narasimha Ratha. From the notes left by Śrī Ratha it is known that Śatananda begins this work with a prayer to God Purushottama or Jagannatha and a laration of his revered father. Śatananda mentions the following authors and works in his Ratnamala. e. g., Javali, Valmiki, Vishṇu, Virañchi, Rshyasriṅga, Atri, Gautama, Pracheta, Bhagavata, Varahapuraṇa, Kūrma puraṇa, Agneya Puraṇa (5). Thus Śatananda Saṁgraha and Śatananda Ratnamala may be taken as the earliest Smṛti works of Orissa.

SRĪDHARA SARMA:-

From the Antigram plates of Yasabhanja Deva (6) who ruled in the middle of the twelfth century in the Gumsar area of the Ganjam

(5) . Notices of palmleaf manuscripts surveyed in Orissa. No. 168 A. These unpublished volumes are now preserved in the Orissa State Museum.

(6) . E. I. Vol. XVIII P. 299.

Digitized by PPRACHIN, SOA

District it is known that a family of scholars proficient in Śruti, Smṛti and Jyotishśastra which lived in the Kotaravaṅga vishaya or the present Kotarabhaṅga pragana of the Puri district received the patronage of the Bhanja royal family e. g. **कोंटरवङ्ग विषयान्तः पाति पट टवाडपाटकवास्तव्याय भारद्वाज गोत्रायाङ्गिरस बार्हस्पत्य भारद्वाजत्रिप्रवराय; यजुर्वेदाध्यायिने, माध्यन्दिनीय शाखाय, अनन्तकण्ठपण्डित प्रपौत्राय ज्योतिषक श्रीधर पौत्राय श्रुति-स्मृति ज्योतिःशास्त्र-विद् धराधरपुत्राय श्रौत-स्मार्त्त-कर्म निपुण, ज्योतिः शास्त्रैकधीर दीक्षित जगधर शर्म्मणे"**

× × ×

There was a well known Smṛti-writer named Śrīdhara, referred to in the later Smṛti works, who may be identified with the **ज्योतिषक श्रीधर** of the above copper-plate grant, as both of them belong to the same age. But nothing definite can be said about the matter until and unless the works written by them are discovered and studied.

NĪLAMBARA ACHARYA:-

Nīlambara Acharya, father of the poet Udayana Acharya and Govardhana Acharya, author of the famous Arya Śaptaśati was known to posterity as a Smṛti writer. His date may be fixed with some amount of certainty in the last quarter of the twelfth century, as his son Udayana Acharya composed the inscription of the Megheśvara temple (7) at Bhubaneswar during the reign of Anaṅgabhīma Deva II (1190-1198 A.D.) Udayana also composed the inscription of the Sobhaneśvara temple at village Niali (8) lying on the border of the Puri and Cuttack districts. By the discovery of the above two inscriptions it can be said without fear of contradiction that Nīlambara Acharya, the father of Udayana belonged to Orissa. It is not possible to say at the present state of our knowledge, the names of Smṛti works compiled by Nīlambara Acharya. This will only be possible after a thorough search, collection and study of manuscripts that still remain unknown.

SAMKHADHARA:-

The next well-known Smṛti writer belonging to Orissa (9) was Śaṁkhadhara, the author o 'Smṛti samuchchaya' which was accepted as

(7) . E. I. Vol. VI. 1901 edited by K. Keilhorn.
(8) . J. B. O. R. S. Vol XVII, 1931. PP119—135.
(9) . Indian Historical Quarterly Vol. XXIII, No. 2 June, 1946.

Digitized by PPRACHIN, SOA

an authority by the Smrtikaras of Utkala, Gauda and Mithila. Jīmūta vahana, an earlier Smṛti-writer of Bengal has quoted 20 times from the Smrti-samuchchaya in his Kalaviveka and in another place he has criticised the views of Śaṅkhadhara and other writers. Śaṅkhadhara is cited by Śūlapaṇi, Śrīkara Acharya, Raghunandana and other Bengali Smrti writers. Chaṇḍeśvara Thakura, the greatest Smṛti writer of Mithila belonging to the 14th century refers to Śmṛti-smuchchaya in his Gṛhastha Ratnakara. Vidyapati Thakura has quoted twice from this work in his 'Gaṅgavakyavalī', whereas this work is cited once in each of the two works named 'Vyavahara chintamaṇi' and Śuddhi chintamaṇi' by the Maithila Vachaspati Miśra.

Śmṛti-samuchchaya is quoted five times in the Kṛtyakaumudī by Bṛhaspati Sūri, an earlier Smṛti-writer of Orissa and is referred to twice in the Nityachara Pradīpa by the famous Narasimha Vajapeyī of the 16th century. Viśvanatha Misra of Orissa cites four times from this work in his Smṛti-sara-saṃgraha. Though this work was once very popular in eastern India, no manuscript of this has yet been discovered. Saṅkhadhara who is found quoted by Chandeśvara Thakura of Mithila can definitely be placed before 1300 A. D.

ŚAMBHUKARA VAJAPEYĪ & VIDYAKARA VAJAPEYĪ:-

The two most notable Smṛti writers of Orissa who flourished after Śaṅkhadhara were Śambhukara Vajapeyī and his son Vidyakara Vajapeyī. The biography of these two eminent scholars as found out by research is as follows. Both of them belonged to a famous Vajapeyī family, which was living in some Brahmin Śasana or village near about the sacred town of Puri. Their family surname was Miśra and gotra Bharadvaja. The descendants of this family are still living in the village Daṇḍa Mukuṇḍapur near Pipili on the Jagannadha Road which was founded between 1500-08 A. D. It is known from the Kośalananda Kavya composed by poet Gaṅgadhara Miśra in 1615 A. D. that a branch of the family of Śambhukara migrated to Sambalpur where it received the patronage of the ruling Chauhan family and Gaṅgadhara was a descendant of this eminent Smṛti-writer, which is described in the verse quoted below:-

Digitized by PPRACHIN, SOA

पूर्वः सर्वसुपर्वनायकगुरुस्पर्द्धि सम्प्रूर्द्धरसा-
पृष्ठस्याखिल शास्त्रतत्त्वनिगमस्यानैकधारानिधिः ।
जातः शम्भुकराभिधः कविवरो विद्याकरस्तत्सुताः
सम्भूताः कवितालतोम्नतिकराः सर्वाः प्रकर्षान्विताः ।
तद्वंश्यस्य कुले सुधांशु विमले रत्नाकरे धीमतां
गोपीनाथक एष पण्डित-वरो हीरांकुरो वर्त्तते ।
जातं जन्म ममेति तत्र सहसा नैषा विधत्ते मुदं
विद्या ह्यतराम्यसंसद्दि परा गोत्राधिकः पूज्यते ।10।

According to traditional account Śambhukara was held in high esteem in his days, for his vast learning, scholarship and saintly charachter. The then ruler of Orissa who had great admiration for the accomplishments and virtues of this saintlike scholar desired to make him the दानाध्यक्ष of one of the 'Brāhmaṇaśāsanas,' which he was founding. But Śambhukara refused to comply with the request of the king saying :

राजप्रतिग्रहो घोरो मध्वास्वादी विषोपमः
पुत्रमांसं वरं भोक्तुं नतु राजपरिग्रहः ।

By his refusal, he incurred the displeasure of the king of Orissa and consequently he had to leave his hearth and home with his wife Satyavati and son Vidyākara and settled at Kāśi for the rest of his life.

This traditional account about Śambhukara is supported by a verse from the unpublished work of Vidyākara named 'Kramadīpikā' which has been quoted by the Editor of the Nityāchāra Paddhati e. g.

नानाशासनदृत् नृपालपरमात् श्रीमन्नृसिंहाभिधा-
न्नैच्छच्छासनकं स्वधर्मनिरतो देशं जहौ तेन सः ।
काशीं प्राप ततः स्वसूनुसुधियं विद्याकरं सानुजं
स्वैषा मुद्वहनार्थमुत्कलभुवं स्वायातुमादिष्टवान् ॥

This verse states that Śambhukara declined to receive the grant of a Bhahmaṇa village (Śsana) from Nṛsimha, king of Orissa and for that reason left this State and settled at Kāśī. After some years he permitted his learned son Vidyākara and his younger brother to return to Utkala for getting themselves married.

(10) . Quoted from the Manuscripts of Kośalānanda Kāvya preserved in the O. S. Museum.

Digitized by PPRACHIN, SOA

This fact of their staying at Kāśī is further corroborated by the third introductory verse of the first part of the Nityāchāra Paddhati by Vidyākara Vājapeyī (11)

आहर्त्ता यः क्रतूनामयुत भृति भृतां त्रिंशतां सत्यवत्याः
पुत्रो विद्याकरोऽभूत् सकलगुणिगणै रीड्यते कृष्णवद् यः ।
त्रिंशद्वर्षः स काश्यां कृतवसतिरभूत् धर्मशास्त्रस्य कर्त्ता
पद्धत्याख्यस्य खण्डं प्रथममिह बलोऽलीलिखत्तस्य कार्ष्णिः ॥

This verse clearly states that Vidyākara, the son of Satyavatī lived at Kāśī with his father for thirty years, and wrote his Nityāchāra Paddhati there. In the next verse quoted below :

यदा यदा हि धर्मस्येत्यङ्गीकृति वशीकृतः
मत्तातपादरूपेण जातो यस्तं हरिं भजे ।
तातपादपदाम्भोजं नत्वा वाजसनेयिनाम्
नित्याथह्निक कृत्यानि लिख्यन्ते तत् प्रसादतः ॥

Vidyākara states that his father Śambhukara, like the incarnation of Hari was born at a time when there was decline of religion and he wrote this notable work through the blessing of his father.

The traditional account about the last part of the life of Śambhukara runs as follows: Satyavatī, wife of Śambhukara was a learned, chaste and devoted lady and was well-versed in the पादुकासिद्धिमन्त्र. By means of the supernatural powers obtained by it, she could easily walk on water and used to bring daily lotus, lily and other acquatic flowers for offering them at the time of worship of her house-hold deity Śrī Kṛshṇa. After some years Vidyakara having left his old parents at Kāśi for ever, came to Puri, to get himself married and live in his native place. On hearing the news of his arrival at Puri the King of Orissa was overjoyed and received him with great pomp and respect. He was so much over-whelmed with the hospitality and devotion shown to him by the King during his stay at Puri, that he forgot the solemn vow which he had made before his parents and began to receive valuabl presents from his royal patron. One day it so happened that Satyavatī while walking on water, as she used to do daily for fetching flowers,

(11) . Published by the Asiatic Society of Bengal in its Bibliotheca Indica Series, 1901.

Digitized by PPRACHIN, SOA

found to her great dismay and supriso that her feet had partially sunk into water, which could dronch the border and hanging portion of her Sarī (Oriya पणत Sanskrit प्रान्त), She was astonished at this unusual incident and on returning home narrated it before her husband. At this Śambhukara sat in deep meditation to find out the cause of this strange incident. Meditation over, he told his wife that this could occur as their beloved son Vidyakara, living at Puri, had accepted gifts from the ruler of Utkala, forgetting the holy vow made before them prior to his departure from Kaśī. For the atonement of the sin committed by his son, he performed the austere 'चान्द्रायण व्रत' After some months Śambhukara expired from this world while wrapt in deep meditation in the temple of Viśvanatha at Kaśī. From this traditional account it is known that Śambhukara did not come back again to his native land in Utkala and passed the last days of his life in the holy city of Kaśī, where he died.

TIME OF ŚAMBHUKARA AND VIDYAKARA:-

From the verse quoted before from the Krama Dīpika by Vidya kara it is known that Śambhukara was a contemporary of one Nṛsiṃha, King of Orissa. There were four Narasiṃha Devas in the Imperial Gaṅga family of Orissa who ruled between the period from 1238-1414 But the anterior and posterior limits for Śambhukara furnished by the above two dates, can be narrowed by the internal evidence collected from the Nityachara Paddhati, in which Vidyakara has referred to the Kṛtyachintamaṇi (12), which the editor of this work has rightly taken to be work of the same name by the famous Chandeśvara Thakura of Mithila. As Kṛtyachintamaṇi (13) was compiled between 1315-1330 A. D. Vidyakara who refers to this work may be placed near about 1330 A. D. So Narasiṃha, who was a contemporary of Śambhukara was most likely Narasiṃha who ruled over Utkala from 1278 to 1306 A. D.

Raghunandana, the great Smṛti writer of Bengal, who makes a large number of quotations from the Vidyakara Paddhati in his works stated at one place in his आह्निकतत्त्व thus "इति मदनपारिजाते विद्याकर वाजपेयि धृत-मरीचिवचनात्" e.g. the saying of Marīchi as quoted by Vidyakara Vajapeyī

12 अतएव कृत्य चिन्तामणौ याज्ञवल्क्योक्तं प्राह यमुक्त्वा नित्यविकल्पत्वादन्यत् सदपि नोच्यते इत्युक्तम् Nityachara Paddhati P. 177.

(13) Contribution to the History of Smṛti in Bengala and Mithila by M. M. Chakravarty. J. A. S. B. Vol. XV N. S. 1915 P. 385.

Digitized by PPRACHIN, SOA

is accepted in the Madanaparijata (14). According to Dr. Kane, the famous Smṛti work Madanaparijata was compiled between 1360-1390 A.D. (15). Thus the anterior and posterior limits for this work of Vidyākara being fixed between 1330 & 1360 A. D. he may safely be taken as Smṛti writer of the second half of fourteenth century.

The name of all the works by Śambhukara are not known. Only two of his small works named Śrāddhapaddhati and Vivāhapaddhati have been printed and published in Oriya characters. From the unpublished volumes of Notices of about ten thousand palmleaf manuscripts, which are now preserved in our museum, the names of the following unpublished works by Śambhukara are obtained; (1) **अग्निहोत्र होमपद्धतिः** (2) **अग्निहोत्र होमप्रायश्चित्त पद्धतिः** (3) **दर्शपौर्णमासेष्टिपद्धतिः** (4) **दुर्बलकर्म पद्धतिः** (5) **निरूढपशुबन्धपद्धति** (6) **स्मार्त्तरत्नावली** (7) **श्रौताधान श्लोकपद्धतिः**, Last year, a palmleaf manuscript (Dh/137a) containing the major portion of **अग्निहोत्रहोम पद्धतिः** by Śambhukara has been acquired and search for others is being continued. But his most important work on Smṛti which was accepted as an authority by the later writers was called 'Śambhukara Paddhati' or Śambhu Paddhati. Viśvanātha Miśra an Oriya Smṛti writer of the 17th century has quoted five times from this work in his Smṛtisāra-saṃgraha. Subsequent writers of the same century e. g. Vipra-Miśra in his Śrāddhapradīpa and Divyasiṃha Mahāpātra in his Śrāddhadīpa also refer to this notable work of Śambhukara. But a complete manuscript of this work has not yet been found out.

About the works of Vidyākara it may be noted that only the first part of his work on Nityāchāra (16) consisting of eight parts has been published by the Asiatic Society of Bengal, while the remaining seven parts are yet to be brought out. The editor of this work Paṇḍita Vinodavihari Bhattāchārya has quoted a verse from another work by Vidyākara named '**कमदीपिका**' which still remains unpublished. A manuscript of another work by the same author named "**दिनकृत्यदीपिका**" has been noticed in the house of Ramachandra Panchānana of Baramba town of the

(14) . J. A. S. B. Vol. XLVI No. 4. 1897 P. 335,

(15) . History of Dharmasastra Vol. I, P. 389.

(16) . Colophon of the work' इति श्रीमदग्निचिद् विद्याकर वाजपेयिकृतौ नित्याचारे दिवसस्य प्रथमभाग कृत्यं समाप्तं ; शुभमस्तु ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

Cuttack District. Vidyākara's reference to a work namely मोक्ष परीक्षा e. g. "अत्र योगसिद्ध्यधिकरणे विरोधः परिहृतोऽस्माभिर्मोक्ष परीक्षायाम्" (17) indicates that this was also compiled by him.

But of all his works 'Nityāchāra paddhati' which was in course of time called 'Vidyākara Paddhati' maintained supreme hold in the field of Dharmasāstra literature for about three centuries, till they were pushed to the back-ground by the voluminous works of Gadādhara Rajaguru of Puri (1700-1750 A. D.) Narasimha Vājapeyī a celebrated Smṛti writer of Orissa of the second half of the 16th century refers to Vidyākara vājapeyī twice and quotes from Vidyākara paddhati nine times in the first two parts of his Nityāchāra Pradīpa (18). Viśvanātha Miśra, who was posterior to Narasimha refers to Vidyākara seven times and cites from Vidyākara paddhati thrice in his Smṛtisāra Saṅgraha published in Oriya characters. Divyasiṁha Mahāpatra refers to Vidyākara Vājapeyī twice in his श्राद्धदीप which is still unpublished. In the 'Kāla-sarvasva' by Kṛshna Miśra of the eighteenth century Vidyākara is mentioned four times and his Paddhati is found quoted once.

Raghunandan, the greatest Smṛti writer of Bengal refers to Vidyākara and his Paddhati several times in his works, a list of which was first given by late M. M. Chakravarti (19) and has recently been critically examined by Sri Bhavatosh Bhattacharya (20). Viśveśvara Bhatta, the celebrated Smṛti writer of Northern India refers to Vidyākara Vājapeyī in his मदनपारिजात as has been stated before.

A close analysis of the published volume of the Nityachāra Paddhati shows that its author Vidyākara has made the largest number of quotations (24 times) from Kalpataru and referred to Kalpataru Kāra thrice in his works, which indicates that Kalpataru or Kṛtya Kalpataru by the celebrated Lakshmīdhara Bhatta of Kāśī (C1114-1154 A. D.) was a great source of inspiration to him. From the foregoing discussion it is evident that Vidyākara Vājapeyī, who was younger contemporary of the

(17) . Nityachara paddhati P. 7.

(18) . Only these two parts have been published by the Asiatic Society of Bengal.

(19) . J. A. S. Bengal N. S. Vol. XI 1915 Appendix B. P. 353.

(20) . J. A. S. Bengal Vol. XIX No. 2 1953 pp 191-193.

Digitized by PPRACHIN, SOA

famous Chaṇḍeśvara Thākura of Mithila and was almost of the same age as Mādhavāchārya, the celebrated Smṛti writer of southern India caused a revival of Vedic culture in Orissa by his writing.

RAMACHANDRA VAJAPEYĪ.

From the मङ्गलाचरण and the last verse of a work namely प्रायश्चित्त दीपिका a palmleaf manuscript of which (Dh/91B) is preserved in the Manuscripts library of the Orissa State Museum, we know that its author Rāmachaṇdra Vājapeyī was the disciple of Samrāṭ Agnichit Vidyākara and was the son of Samrāt Sūrya Dāsa. He wrote this work while living in the holy नैमिषारण्य e. g. : मङ्गलाचरणम्—

प्रणम्य परमात्मानमीश्वरं नरकेशरीम्
तस्य संप्रीतये चैव लिख्यते रामपद्धतिः ।

समाजोऽग्निचिद्दो नत्वा विद्याकरगुरोः पदे
रामः पद्धतिमादत्ते प्रायश्चितस्य दीपिकाम् ॥

× × × × ×

शेषश्लोक— ऋज्जीमेताग्निचिद् रामचन्द्रः
सुतैकार्थी नैमिषारण्यवासः ।

सम्राजः श्री सूर्य्यदासस्य सूनुः
प्रायश्चित्तपद्धतिं संव्यधत्त ॥

इति श्री रामचन्द्रवाजपेयिविरचिता प्रायश्चितपद्धतिः समाप्ता ।

This Vidyākara is identical with the great Vidyākara whose life history is given before. There is another palmleaf manuscript named कुंडलक्ष्मविवृति Jy/19(a), by Rāma Vājapeyī the मङ्गलाचरण verse of which is quoted below as it gives some information about his family e. g.,

सूनोः श्रीधरमत्र शिवदासाख्यो गुरुख्यातितः
सम्राडग्निचिदा च यस्य जनकः श्री सूर्य्यदासोऽजनि ।

यस्मात् येशसा दिशोदश विशालाक्षावलक्षाः सुज-
त्येव स्वाहित कुंडलक्ष्मविवृतिं रामो वसन् नैमिषे ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

Rāmachandra was the great grandson of Śridhara Mālaa, grandson of Śiva Dāsa, son of Sūrya Dāsa and Viśākhā. He wrote this 'कुंडलक्षम विवृत्ति' while living in the Naimishāranya. There is a worm-eaten manuscript in the Raghunandan library at Puri, whare this first verse is found in a mutilated foap, but the name of the work is given as 'कुंडलक्षण'

A manuscript of "समरसार" by रामचन्द्रवाजपेयी is preserved in Vīrapratāpapur śāsana near Sakhigopal in which the above verse is found at the end of the work with slight change in the first line e. g.

वंशे वत्समुनीश्वरस्य शिवदासाख्यो गुरु: ख्यातित:

× × × रामोवसन् नैमिषे ।

colophon—इति श्री सम्राडग्निचिद्राम वाजपेयिकृत: समरसारो नाम ग्रन्थ: समाप्त: ।

This gives the additional information that Rāma Vājapeyī was descended from a family having वत्सगोत्र. This work was also written during the period of his stay in the Naimishāranya.

W. W. Hunter writes about another work by Rāma Vajapeyī named कर्माङ्गपद्धति thus "XCIV Rāmachandra Bājapeyī, lived 400 years ago a Puri Brahman who wrote a Sanskrit work on Hindu Social and Religious law, called the Karmanga Paddhati" (21). Sri S. L. Karte, M. A. in his paper on Rāma Vājapeyī (22) states that Rāma wrote three distinct works pertaining to the Sulva sūtra of Kātyāyana, three manuscripts of which are preserved in the Manuscripts library of the Scindia Oriental Institute, Ujjain, e. g.

1) Sulvavārttika which is a metrical gloss, consisting of 515 verses, on the Sulvasūtra.

2) Sulvavārttikatīkā which is author's own commentary on Sulvavārttika.

3) Sulvasūtravṛtti which is a regular commentary in prose on the original Sulvasūtra.

(21) . Hunter's Orissa, Vol. II Appendix IX, The literature of Orissa pp. 207-208.

(22) . Summaries of papers submitted to the 13th A. I. O. Conference, Nagpur University 1946 p.

Digitized by PPRACHIN, SOA

The passage at the end of Sulvavārttika states that this work was composed in Samvat 1491 or 1434 A. D. His Kuṇḍamaṇḍapalakshaṇa was composed in Samvat 1506 or 1449 A. D. and his Nāḍīparikshā was composed in Samvat 1504 or 1447 A. D.

This short paper is valuable as it gives some exact dates in the life of Rama Vajapeyī. Dr. P. V. Kane gives the names of the following works by Rama Vajapeyi, some of which he thinks to be different names of the same works (23) e. g.-कुण्ड निर्णयश्लोक, कुण्डमण्डप लक्षण, कुण्डमण्डप-विधि, कुण्डमार्त्तण्ड, कुण्डाकृति, कुण्ड लक्षण and कुण्डलक्षण विवृति।

Kuṇḍakati was written by Rama Vajapeyī in 1449 A. D. while living in the Naimisharaṇya at the bidding of prince Ramachaṇdra of Ratnapur. Rama Vajapeyī also wrote a commentary on शारदा तिलक at the behest of king Ramachaṇdra of 'रत्नपुर' (24) Ramachaṇdra, son of Sūrya Dasa, son of Śiva Dasa, son of Śrīdhara Malava who wrote a commentary on 'शांख्यायन गृह्यसूत्र' called गृह्यसूत्र पद्धति or 'आधान पद्धति' (25) was certainly identical with Rama Vājapeyī, as the forefathers of both are the same.

From the discussion made above it is clear that Rāmachaṇdra Vājapeyī, who flourished in the last quarter of the 14th century and the 1st half of the 15th century was a versatile scholar and prolific writer on various subjects. But he was mostly renowned as a writer of Dharma-śastra works through out India. King Ramachandra of Ratnapur who is mentioned in the कुण्डाकृति and शारदातिलकटीका by Rama Vajapeyī may be identified with Ramachandra or Ramadeva, father of Haribrahmadeva, whose Khalari and Raipur inscriptions dated in Vikrama Samvat 1470 and 1458 respectively have been published. (26) As these two inscriptions were written in 1414 A. D. and 1402 A. D. during the reign of Haribrahma Deva, his father Ramachaṇdra may be assigned to a period prior to 1402 A. D. In that case the date of these two works by Rama-Vājapeyī may be fixed near about that date.

(23) . History of Dharmaśāstra Vol I. pp. 532. 533. 534.
(24) . —do— —do— p. 732.
(25) . —do— —do— p. 634.
(26) . E. I. Vol, II P, 228 and I, A, Vol. XXII P. 83.

Digitized by PPRACHIN, SOA

BṚHASPATI SŪRI:-

Another notable Smṛti writer of Orissa of the early period was Bṛhaspati Sūri, the manuscript of whose work called 'Kṛtya Kaumudī' are found in all parts of Orissa. There are three manuscripts of this work (Dh/55, Dh/59(b), Dh/62) in the manuscripts library of the Orissa State Museum. This work does not furnish any reliable clue to fix the date of its author with some amount of certainty. But the following Smṛti writers and smṛti works cited by him deserve mention here as they may prove helpful in this matter:

1) Jīmūtavāhana (2) Vijnaneśvara, (3) Rājamārtaṇḍa, (4) Lakshmīdhara, (5) Śatānandasamgraha, (6) Smṛti mīmāmsā, (7) Smṛti samuchchaya, (8) Smṛtisāra. of these Nos. 2, 3, 4, 5 can definitely be assigned to a period prior to 1200 A. D. Smṛti samuchchaya by Śaññkhadhara cites Smṛtichandrika. (first part of the 13th century) and is quoted by Hemādri (1270-1300 A. D.) So it may be placed near about 1250 A. D. Jīmūta vāhana who makes a large number of quotations from Smṛtisamuchchaya may be assigned to a period from 1250-1300 A.D. Bṛhaspati Sūri who mentions Jīmūtavahana certainly flourished after 1300 A. D. If this Smṛtiśāra quoted twice in the Kṛtya Kaumudī is taken to be the work of the same name by the Maithila Harinātha Upadhyaya, who flourished in the first part of the 14th century, then the time of Bṛhaspati may fall after 1350 A. D. In the topics on काल Bṛhaspati does not mention the celebrated Madhavāchārya or his work, which is invariably referred to by all the Smṛti-writers that came after Mādhava. This is significant and leads one to the conclusion that Bṛhaspati was either a contemporary of Mādhava or might have lived a few years before him. Until the contrary is proved he may be placed in the middle of the 14th century, when Kaladarśa was still holding the ground. Kṛtyakaumudī is divided into three प्रकरण or sections, the first one covering nearly three fourths of the work is called 'कालविवेकप्रकरण" the other two being 'प्रायश्चित्त प्रकरण' and 'दानप्रकरण' The topics discussed and authorities quoted have been given on its proper place. Among the later Smṛti writers Viśvanātha Miśra and Kṛshṇa Miśra are so far known to have quoted from Kṛtyakaumudī in their respective works namely स्मृतिसारसंग्रह and कालसर्वस्व.

Digitized by PPRACHIN, SOA

KALIDASA CHAYANI:-

Very little is known about Kalidāsa Chayanī through his small शुद्धिचन्द्रिका.He is still regarded as an authority in matters of शुद्धि or purification in all the Oriya speaking tracts. Manuscripts of this work with either commentaries in Sanskrit or translation in Oriya prose or verse are found in all parts of the State. This prescribes अशौच of 12 days after death for all castes of people, which is followed in Orissa, where as in Bengal अशौच of different periods for different castes is prescribed. As regards the date of Kālidasa this much can be said that he flourished before Narasimha Vajapeyī (1520-1570 A. D.) who respectfully refers to him in his Nityāchāra Pradīpa as "कालिदास चयनिन:" There are three manuscripts of this work Dh/20, Dh/48 (a), Dh/68 in our collections.

YOGĪŚVARA PATRA:-

Yogīśvara Pātra was an officer under King Nisañka Bhānu-Deva, the last Gañga sovereign of Orissa (1413 to 1434 A. D.) which is known from the colophon at the end of each chapter of his work 'दानदीपावली' e. g. इति श्री मन्महाराजाधिराज गजपति निःशङ्कभानोः ललित-पद्कमलधूलि-कलापा-लंकृतगात्र योगीश्वरविरचितायां दानदीपावल्यां"......

An incomplete manuscript of this work is preserved in the manuscripts library of the Asiatic Society of Bengal and has been reviewed in their catalogue (27). It is not yet known whether he compiled any other work except "दानदीपावली"

THE FAMILY OF GODAVARA MISRA AND NARASIMHA VAJAPEYI:-

All branches of Sanskrit literature greately developed in Orissa under the patronage of the Mightly Emperors of the 'Sūrya vaṁśa', that ruled over Orissa for about a century (1435 to 1535 A. D.). During this golden age of Orissan history the family of Godāvara Miśra played an important part in the revival of Vedic tradition and culture by the performance of various Vedic sacrifices and compilation of a lot of works

(27) Descriptive catalogue of Sanskrit manuscripts Vol. III Smṛti Manuscripts pp. 473-474

Digitized by PPRACHIN, SOA

on Dharmaśāstra. The Genealogical table of Godāvara, prepared by me with the help of the first part of Nityāchāra Pradīpa (28), Simha Vājapeyī vamśavalī, and other work is given below:-

- पूर्वपुरुष
  - कौत्सगोत्र मृत्युञ्जयमिश्र
    - नारायण मिश्र
    - जलेश्वर मिश्र
      - नृसिंह मिश्र वाजपेयी
      - गङ्गाधर मिश्र
        - पण्डितेश देवानन्द मिश्र
          - वामदेव मिश्र
          - धराधर मिश्र
            - विश्वेश्वर मिश्र
            - मुरारि मिश्र
              - महामहोपाध्याय अभिनवनरसिंह वाजपेयी
            - and eight others
          - and six others
        - राजगुरु वलभद्र मिश्र
          - मन्त्रिवर राजगुरु गोदावर मिश्र
      - Three others

From the history of this famous family of scholars, as gathered from different sources, the following few facts deserve mention.

(1) An unknown ancestor of Mṛtyuñjaya Miśra wrote a work named 'सत्सम्पद'.

(2) Mṛtyuñjaya Miśra who was called 'मिमांसार्णवकर्णधार' wrote 'शुक्तिमुक्तावली' which was highly appreciated by the learned people.

(3) Nārāyana Miśra, a proidgy of learning wrote two commentaries on the two Mīmāmsās when he was very young, the names of which are not yet known. But he died prematurely at the age of sixteen.

---

[28] Published by the Asiatic Society of Bengal in

[29] Published in the now defunct Oriya monthly magazine (The Sahakara Vol XV, Pt 7, pp. 615 - 625.

Digitized by PPRACHIN, SOA

(4) Agnichit Jalēśvara Miśra Vājapeyī was master of 'षड्दर्शन' and wrote a Smṛti digest named 'Jaleśvara Paddhati' which was very popular in Orissa. Hunter mentions this work in his History of Orissa(30)

(5) Narasiṃha or Nṛsiṃha Miśra Vājapeyī, who was a profound scholar was appointed as a justice by the celebrated Gajapati Kapileśvara Deva of Orissa (1435-1466 A. D.). This incident brought this family of scholars into prominence in the field of administration of the State of Orissa which continued for about a century. Narasiṃha revived the Advaitavāda of Śrī Śaṅkara by his writings. He wrote संक्षेप शारीरिक वार्त्तिक a commentary on संक्षेप शारीरिक of Śrī Śaṅkara, 'which is quoted by his grandson Godāvara Miśra in his Yoga Chintamaṇi (31) and is also mentioned by Narasiṃha in his Nityāchāra Pradīpa. He spent some years of his life at Kāśī, where he practiced austerities and obtained siddhi in Yoga. There he wrote 'काशीमीमांसा' which is also referred to in the Yogachintāmaṇi of Godāvara e. g. काशीमीमांसायां पितामहचरणाः

(6) Gaṅgādhara Miśra, younger brother of Narasiṃha also wrote a work in Smṛti which is known by the discovery of a few folia of its manuscript at Bhubaneswar.

(7) Rājaguru Balabhadra Miśra, son of Narasiṃha Miśra was the Rājaguru of Gajapati Purushottama Deva (1466-1497) and Gajapati Pratāparudra Deva. He was proficient in the भट्टतन्त्र and performed Pauṇḍarīka sacrifice (पौण्डरीकयाजी). Two of his works named अद्वैत चिन्तामणि and शारीरिकसार पुरुषोत्तमस्मृति are cited in the Yogachintāmaṇi of his son Godāvara (32). The Smṛti digest called बलभद्र संग्रह which is quoted in the later Smṛti works of Orissa was most probably compiled by him.

• From the 'Pratapamārtanda' compiled by Ramakṛshṇa bhaṭṭa of Kāśī under the patronage of Gajapati Prataparudra Deva it is known that the author got the title of पण्डितशिरोमणि in the court of Gajapati from Balabhadra Rājaguru, who was entrusted with the work of assessing the merit of the work प्रतापमार्तंड e. g.

गजपति सदसि ×·सा पदवी बलभद्र राजगुरोः

---

(30) - Hunter's Orissa, Vol. II Appendix IX p. 110

(31) - The Poona Orientalist Vol. IX pp. 11-19.

(32) - The Poona Orientalist Vol. IX pp. 11-19.

Digitized by PPRACHIN, SOA

पण्डित शिरोमणिरिति प्रतापमार्तण्ड निर्माणात्
सोऽयं निबन्धानालोच्य पुराणानि च यत्नतः ।
रामप्रसादात् कुरुते कृती निथिनिरूपणम् । (33)

This shows that he was regarded as an authority on Dharmaśāstra in his age.

MANTRIVARA RAJAGURU GODAVARA MIŚRA:-

From the account of the family of Godavara given above, it is clear that his forefathers were renowned for their vast learning and scholarship and played an important part in the development of Dharmaśāstra literature, revival of sacrificial rituals and popularising the dectrine of 'अद्वैतवाद्, in Utkala. Gadāvara who was a versatile scholar not only maintained the glorious tradition of his family, but also contributed more than his forefathers to the different branches of Sanskrit literature. For the revival of the Vedic sacrifices he performed Vājapeya, Śaratpauṇḍarika and Sarvatomukha sacrifices e.g., वाजपेययाजी, शरत्पुण्डरीक याजी, सर्वतोमुखयाजी, साम्वत्सरिकयाजी, which is known from the colophons of his जयचिन्तामणि,

After his father he became the Rājaguru of Gajapati Pratāparudra Deva sometime after 1510 A. D., According to his family tradition he was honoured with the title of 'गोदावरीवर्द्धन, by Gajapati Purushottama Deva, because he could cause a heavy flood in the river Godavarī all on a sudden by his miraculous power obtained from मन्त्रसिद्धि which helped the Gajapati in gaining victory at the time of his expedition against the Rāja of Kañchīpura. This tradition is corroborated by the actual use of the title of 'गोदावरीवर्द्धन' in his 'जयचिन्तामणि'. For his vast learning, uncommon talent and mastery (सिद्धि) in Tantra, Pratāparudra lateron appointed him as his (मन्त्रिवर) or prime minister, which was the most coveted post of dignity and honour in the State. He was held in high esteem by Pratāparudra, which is proved by the fact of Gajapati holding over the

(33) . [a] Descriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts Vol. III Smṛti Manuscriptes edited by H. P. Sastri p. 491-492.

[b] . Notices of Palmleaf manuscripts prepared by Rajendralal Mitra No. 2542 of 188 .

Digitized by PPRACHIN, SOA

head of Godāvara the white umbrella called Meghādambara' having a gilted handle set in a pitcher-like pedastal which was ornamented with gold plate and had four lions made of gold on its four sides. This is certainly an unique honour shown to a scholar by a ruler of a State. He also got the titles of कविपुङ्गव and पण्डितराज from his royal patron. All these above facts are found mentioned in the colophon at the end of each Kiraṇa of 'जयचिन्तामणि' by Godavara, a complete manuscript of which was discovered in the Baṇapur area of the Puri District (34) e. g.

इति श्रीमन्महाराजाधिराज-गजपति-प्रतापरुद्रदेव-स्वहस्तधारित कनककेशरि चतुष्टयावेष्टित-शातकुम्भमय कुम्भसम्भूत-मेघाडम्बराभिधान-सितातपत्रशोभमान कवि-पुङ्गव पंडितराज राजगुरु, वाजपेय याजि, शरत्पुंडरीकयाजि, सर्वतोमुखयाजि, साम्वत्स-रिकयाजि, मन्त्रिवर गोदावरीश्वर्द्धन, गोदावरमिश्र विरचित जयचिन्तामणौ × ×

From the facts stated above it is clear that Godavara was fortunate enough to get power, position, distinction and honour during his life time for his scholarly attainments and manifold achievements.

THE WORKS OF GODAVARA :-

Information about some of the works of Godāvara is obtained from references to them made at different places of his 'Harihara Chaturaṅga' a treatise on the art of war-fare, which has been printed and published by the Government of Madras (35). They are 'तन्त्रचिन्तामणि' (36) 'योगचिन्तामणि' (37) 'अद्वैतदर्पण' (38), 'अधिकरणदर्पण' (39), 'नीति चिन्तामणि' (40), 'नीतिकल्पलता' (41). 'आचारचिन्तामणि' (42), 'जयचिन्तामणि'(43) 'सामुद्रिक कामधेनु' (44), 'पातञ्जल दीपिका' (45). Of these above ten works

---

(34) Noticed by Prof. Sridhara Das of the Christ College. Cuttack in the Oriya Monthly 'The Jhankara'.

(35) Madras Government Oriental Series—Vol. X-VII, 1950.

(36) Harihara Chaturaṅga p. 156 verse 179 and p. 221 verse 59.

(37) -do- -do- p. 169 verse 303.

(38) -do- -do- p. 178 verse 22, p. 216 verse 502.

(39) -do- -do- p. 196 verse 243

(40) -do- -do- p. 219 verse 27

(41) -do- -do- p. 216 verse 500.

(42) -do- -do- p. 216 verse 502.

(43) -do- -do- p. 219 verse 403.

(44) -do- -do- p. 143 verse 187.

(45) -do- -do- p. 195 verse 231.

Digitized by PPRACHIN, SOA

only three namely **आचारचिन्तामणि, नीतिचिन्तामणि,** and **नीतिकल्पलता** can safely be placed under the category of Dharmaśastra. But no manuscripts of these three works have so far been discovered. We have got an incomplete manuscript of Hariharachaturaṅga in our collection Dh/103(B).

The small work on Dharmaśāstra called **'मुक्तिचिन्तामणि'** the authorship of which is attributed to Gajapati Purushottama Deva of Orissa (1466-1497) was most probably compiled by Godavara which will be discussed in its due place. But most popular work of Godāvara, which is still being used all over Orissa is **'शारदाशारदर्च्चनपद्धति'** or **शारदाशारदर्च्चन संस्कार पद्धति'** a treatise dealing on the autumnal festival of Goddess Durgā. There are two manuscripts of this unpublished work in our Museum collection. This work which begins with a hymn to Durgā was written with a view to rectify the defects that had crept into the procedure of worship of this Goddess before his days e. g.

निमयि शिष्टमत संस्कृतपद्धति तु
गोदावरोऽर्पयति पादतले शिवाया:'

Godāvara like his forefathers was at first a devotee of Vishnu but with the advance of age he had leanings towards Sāktism as manifested in the last verse of his **हरिहर चतुरङ्ग** and the **मङ्गलाचरण** and the last verse of **शारदाशारदर्च्चन पद्धति:** which breathe the spirit of dedication of the author at the feet of Durgā. This change of devotion of Godāvara might be due to the revival of Śākta faith in Orissa, which is described in glowing terms in the works of the great Oriya poet Saralā Dasa, who flourished during the reign of Gajapati Kapileśvara Deva (1435-1466 A. D.) Gajapati Purushottama Deva was also a devotee of Durga and is said to have written a work on **दुर्गापूजा** called Durgotsava. His copperplate grant to Poteśvara Bhatta dated 1471 A. D. begins with salutation to Jaya Durgā **श्री जयदुर्गायै नम:** (46).The steadily increasing popularity of the worship of Durgā in Orissa from the beginning of the fifteenth century might have prompted the author to write this work.

Godāvara could quote from 47 works in his **'योगचिन्तामणि'** whereas he refers only to eight works in his **शारदाशारदर्च्चन पद्धति** from

---

(46) J. B. O. R. Society Vol. IV p. 353.

Digitized by PPRACHIN, SOA

which it may be concluded that the number of works dealing on Durgā-pūjā was not much before his days.

GAJAPATI PURUSHOTTAMA DEVA:-

Two works on Dharmaśāstra written by Gajapati Purushottama Deva of Orissa (1466-1497), namely 'मुक्ति चिन्तामणि' and 'गोपालार्च्चनविधि' are so far known. "मुक्तिचिन्तामणि" a manuscript of which is preserved in the Museum may aptly be called an abridged edition of the पुरुषोत्तमक्षेत्रमाहात्म्य as it deals about the following subjects e. g. जगन्नाथस्य स्थिति: पुरुषोत्तम क्षेत्रमाहात्म्यं. श्री जगन्नाथस्य दर्शनफलं, श्री जगन्नाथस्य दर्शनफलं, श्री-जगन्नाथस्य कीर्त्तन फलं, श्री जगन्नाथस्य निर्माल्यभक्षणफलम् । This work is important as it gives the names of a lot of works dealing about the antiquity, importance and sanctity of पुरुषोत्तमक्षेत्र; that were being used before the middle of the 15th century.

गोपालार्च्चन विधि: also called नीलाद्रिमहोदय पूजाविधि: four manuscripts of which are preserved in the collection of the Museum is a work containing the procedure of worship of Lord Jagannātha at Puri, that was sanctioned and promulgated by Purushottama Deva, the sovereign ruler of Orissa. The conception of Jagannatha as Gopala Kṛshṇa is recognised and proclaimed by this work, which is an important landmark in the religious history of Orissa.

GAJAPATI PRATAPARUDRA DEVA:-

The authorship of the well-known 'Sarsvatīvilāsa' which is recognised as an authority in the Andhradeśa is attributed to Gajapati Prataparudra. But the real author of this was Lolla Lakshmīdhara Bhaṭṭa of the Andhra country who remained in the court of Prataparudra for some years prior to 1520 A. D. when he wrote सरस्वती विलास and a commentary on सौन्दर्य्यलहरी. This fact is stated in the colophon of this commentary published by the Mysore Government e. g. निखिल यामल-तन्त्रार्णवावगाहरुद्रेण, आश्चर्यीकृतगजपतिवीररुद्रेण,नीलगिरिसुन्दरचरणारविन्दचञ्चरीकेन, वाणीसहचारीकेन सरस्वतीविलासाद्यनेक स्मृतिनिबन्धन ....(47)

After the victory of Kṛshṇadeva Rāya in the war agaist Prati-

(47) J. B. O. R. Society Vol. XXXVI pts 3—4, page 17.

Digitized by PPRACHIN, SOA

parudra, Lolla Lakshmidhara left Cuttack and went to Kondavidu where he wrote one inscription for his patron Kṛshṇadeva Rāya in Saka year 1442 or 1520 A. D. (48)

The importance and merit of 'सरस्वती विलास' need no mention here as they have been fully discussed by Dr. P. V. Kane in his book (49)

The authorship or प्रताप मार्त्तण्ड or प्रौढप्रतापमार्तण्ड a work on 'कालनिर्णय' is ascribed to Gajapati Prataprudra Deva, e. g.,

जगन्नाथपदाम्भोज मकरन्द मधुव्रतः ।
प्रतापरुद्रः कुरुते वत्सरादि निरूपणम्॥
वत्सरादि निरूपणं नाम द्वितीयः प्रकाशः ।

Elesewhere is written

पुरुषोत्तमभूपाल नन्दनः कुरुतेऽधुना
निरूपणं विष्णुभक्ते विष्णुभक्त शिरोमणिः ॥

But it has been stated before that Rāmakṛshṇa Bhaṭṭa son of Mādhava Bhaṭṭa of Parāśara gotra wrote प्रतापमार्त्तण्ड under the patronage of Gajapati Pratāparudra Deva and received the title of पण्डितशिरोमणि from Balabhadra Miśra, the Rajaguru of the Gajapati. This fact is mentioned in the तीर्थरत्नाकर by the same author (50)

KAVI CHINTAMANI MIŚRA:-

It is known from the manuscript of वाङ्मयविवेक by poet Chintāmaṇi Miśra (51) that he wrote a Smṛti work named कृत्यपुण्यावलि. He lived near the town of Puri in the middle of the 16th century. But no manuscript of this has so far been located.

NARASIMHA MIŚRA VAJAPEYI:-

Narasimha Miśra Vajapeyi was the grandson of Dharadhara Miśra, the cousion brother of the famous Godavara Miśsa, whose life-

(48) Kondavidu pillar inscription of Kṛshnadeva Rāy E. I. Vol. VI, p. 230—232

(49) History of Dharmasastra Vol. I. p. 410—414

(50) Notices of Sanskrit Manuscripts by R. L. Mitra Vol. VII Pt. II No XIX 1883 p. 293

(51) Proceedings of the A I O Conference, 12th session, Benaras, 1946, p. 98

Digitized by PPRACHIN, SOA

history and works have been described before. He was the son of Murari Miśra, son of Dharadhara Miśra and received his education from Vighneśvara Miśra, the elder brother of Murari. He was popularly known as Simha Vajapeyī. From a small Sanskrit work called 'सिंहवाजपेयि वंशावली' which was published in an Oriya monthly 'the Sahakāra' by my friend and colleague Sri Satyanarayana Rajaguru the following account of Narasimha is obtained in seven verses which are quoted below.

तनुजोऽस्य बभूव भूपवन्द्यो-
नरसिंहाभिध वाजपेय याजी ।
उदितोष्णमरीचितुल्यतेजा
निखिलोर्वीतलविश्रुत प्रतिष्ठः ।२५।

मुनिजनसमुपास्यां कुन्दवृन्दावदातां
शतदलदलसंस्थां वाञ्छितार्थप्रदां यः ।
शशिशकलधरामाराध्य सिद्धेश्वरीं तां
करबदरसमानं शास्त्रषट्कं ददर्श ।२६।

विजित्य वादेन सभान्तराले तं गौडदेशागत तार्किकेन्द्रम् ।
मुकुन्दभूमि नृपतेर्जगाम नानाविधानुग्रह पात्रतां यः ।२७।
दृष्ट्वा स्फुटं यो निजवंशजानां दारिद्र्यमुर्वीतल वृत्रशत्रोः
दानं गृहीत्वा द्विजशासनानि विधाय तेषां मुदमाततान ।२८।
येन प्रणीतं समयप्रदीपमासाद्य सर्वागमपारगेन ।
तमस्तिरस्कृत्य सुधर्ममार्गं सुखेन जानन्ति जनाः समस्ताः ।२९।
मीमांसकानां धुरि कीर्त्तनीयो वेदान्तवेदी सुकविः स्मृतिज्ञः।
विद्यासु योऽष्टादशसु प्रदीपं निर्माय योगेन जगाम सिद्धिम् ।३०।

दिल्लीश्वरं यः परितोष्य वाग्भिः
विद्याभिरष्टादशभिः प्रवीणः ।
मुकुन्ददेवस्य प्रशस्तवाग्मः
समानयत् सर्वजनस्य मध्ये ३१।

It is known from the above seven verses that Narasimha who performed Vijapeya sacrifice was brilliant like the rising sun and earned great name and fame. Through the help of the Goddess Siddheśvarī, whom he used to devoutly worship he acquired mastery in the six Śāstras of Darśanas. By vanquishing a famous logician of Gauda (Bengal) by his arguments in the royal court, he could highly please King Mukunda who

Digitized by PPRACHIN, SOA

favoured him in various ways. To remove the poverty of his kith and kin, he got them settled in Brāhmaṇa villages established by him on the land, which he had accepted as gift from the ruler. He compiled a work called 'समयप्रदीप' to show the righteous path of Dharma to the common people. He who was proficient is 'Mīmāṃsā, Vedānta and Smṛti and a good poet wrote eighteen works on eighteen branches of learning, each of which was called 'Pradīpa'. He obtained 'Siddhi' by the practice of Yoga. He who had mastery in eighteen branches of learning pleased Dillīsvara (the ruler of Delhi) by his great eloquence; whereby the fame and prestige of his patron Mukundadeva were enhanced and made known to all.

Mukundadeva, the patron of Narasiṃha mentioned in verses 27 to 31, can definitely be identified with Gajapati Mukunda Deva (1559-1568 A.D.) the last independent and powerful Hindu king of Orissa with whom the 'Dillīśvara' or Akbar entered into an alliance against Sulaimān Kararānī, Sultan of Bengal (52). It is known that one Mahāpāttar, who was unrivalled in arts of Indian poetry and of music was sent to Orissa along with Hasan Khan Khazānci to Rājah of Jagannath to carry on negotiation about this alliance in 1565 A. D.. These two returned with success after three months to the Moghul court with Rai Parmananda, ambassador of Mukunda Deva (53). This alliance between Akbar and Mukunda Deva come to an end in 1568 A. D. due to the death of the latter in a battle. So Narasiṃha Vājapeyī must have been sent to the court of Akbar some time between 1565 and 1568 A. D. In the Ain-i-Akbari (54) we find the names of Narsing (No. 19) and Paramandar (No. 20) together in the list of learned men of Akbar's time. The two men in the Ain may safely be identified with Rai Paramānanda, the ambassador of Mukunda, King of Orissa and Narasiṃha Vājapeyī the great pandita of his court who is described in the सिंहवाजपेयी वंशावली to have been deputed to the Darbar of Akbar. Thus Narasiṃha who

---

[52] *History of Orissa* Vol I by R. D. Banerjee p. 343 & *History of Bengal* Vol II Published by the Dacca University p 183

[53] *The Akbarnama* English Translation by Beveridge Vol II p 381 & 382

(54) *Ain-i-Akbari* edited by H Blochmann Vol I pp 608

Digitized by PPRACHIN, SOA

adorned the court of Gajapati Mukunda Deva (1559-1568 A. D.) may tentatively be assigned to period from C 1520-1580 A. D.
Works of Narasimha:-

From the verse No. 30 of the Vaṃśāvalī quoted above, it is known that Narasimha wrote 18 works each of which was called a प्रदीप whereas it gives the name of only one Pradīpa e. g., समय प्रदीप. The names of some other 'pradīpas'are obtained from the following quotations made below from the first two parts of his 'Nityāchāra Pradīpa' published by the Asiatic Society of Bengal (55).

(a) यद्वा चान्द्रमासे होता × × चैतद्वर्ण प्रदीपे प्रपञ्चितमस्माभिः ।
(b) तदस्माभिः विस्तरेण भक्तिप्रदीपे प्रपञ्चितमिति नेह प्रणीयते ।
(c) तथोक्तं 'प्रायश्चित्त-प्रदीपे' अस्माभिः ।
(d) प्रायश्चित्त प्रदीपे अस्मत्कृते अनुसन्धेयम् ।
(e) व्यक्तं चैतदस्मत् कृते 'श्राद्धप्रदीपे ।
(f) पञ्चरात्रानुसारेण प्रतिष्ठा, प्रतिष्ठाप्रदीपे अस्मत्कृते विस्तरेणोक्ता ।
(g) सदाचार ×× ×प्रामाण्यमिति शाङ्करभाष्य प्रदीपे प्रपंचितमस्माभिः ।

According to Hunter Narasimha was the author of five works (1) Achāra Pradīpa (2) Vyavastha Pradīpa (3) Prāyaschitta Pradīpa (4) Vajapeya Smṛti and (5) Dānasāgara (56) Or these five No. 3 is found in the quotations of (c) above and Achāra pradipa is the same as Nityachāra Pradīpa referred to above, two palm-leaf manuscripts of which are in our collection (Dh/11, Dh/110), while the remaining three are new ones. There is a complete manuscript of 'प्रतिष्ठाप्रदीप' Dh/12 by Narasimha in the manuscript library of the Museum. From the notices of Sanskrit manuscripts (57) it is known that a work called चयन प्रदीप was also compiled by him as will the evident from the verses and colophon quoted below.

---

(55) Nityachara Pradipa
(a) -do- Vol. I p. 77
(b) -do- Vol. I p. 146
(c) -do- Vol. II p. 141
(d) -do- Vol. II p. 301
(e) -do- Vol. II p. 288
(f) -do- Vol. II p. 395
(g) -do- Vol. II p. 534
(56) Hunter's Orissa Vol. II Appendix 9 p 206.
(57) Second series by H. P. Shastri Vol. IV No.84.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Beginning— श्री नृसिंह' नमस्कृत्य कात्यायनमुनिं गुरुम् :
चयनस्य प्रदीपोऽयं नृसिंहेण प्रणीयते ॥

End— इत्यग्निचिद् वाजपेयि नरसिंह विनिर्मित: ।
चयनस्य प्रदीपो्स्तु प्रीतये सुरवैरिण: ॥

Colophon— इति श्री महामहोपाध्यायाग्निचिद् वाजपेय नरसिंहमिश्र विरचित चयन-प्रदीप: समाप्त: ।

The manuscript of this work written in Oriya characters which was found at Śāsana Dāmodarapur near Puri contains 1000 slokas. Thus the names of the following ten out of 18 pradīpas are known from different sources e. g.
समय प्रदीप, नित्याचार प्रदीप, वर्ष प्रदीप, भक्ति प्रदीप, प्रायश्चित्त प्रदीप, श्राद्धप्रदीप, शाङ्करभाष्य प्रदीप, प्रतिष्ठा प्रदीप, चयनप्रदीप and व्यवस्था प्रदीप ।
The names of the remaining eight still remain to be traced.

From the Descriptive catalogue of Sanskrit Manuscripts' published by the Asiatic Society of Bengal (58) it is known that Narasimha wrote a Karika on the श्राद्धपद्धति by Śambhukara Vājapeyī. From the unpublished volumes of notices of palmleaf manuscripts surveyed in Orissa the names of these small works by Narasimha are also obtained e. g. "गणेशमानसिक पूजा" 'सामवेदीय वृत्पद्धत:' 'शिवरात्रि व्रतविधि'

But of all his works, Nityāchara Pradīpa was the best which gained wide circulation in Orissa being accepted as an authority by the later Smṛti writers and gradually pushed Vidyākara Paddhati to the background. Vasudeva Ratha Somayājī an eminent Sanskrit poet of Orissa of the 18th century speaks about Narasimha and his Nityāchāra Pradīpa in glowing terms while writing about one of the descendants of his family named Rāmachandra Miśra e. g.,

तस्यासीत् मल्लविद्यागुरुरखिलकलाकोविद: कोविदेन्द्र:
मिश्र : श्रीरामचन्द्रो द्विजकुल तरणि: कौत्सवंशावतंस: ।
नित्याचार प्रदीपं मुनिरिव विदधे धर्मशास्त्रप्रणेता
तूर्य्यो यत् पूर्वपंशेष्वपि निगमगुरु वाजिपेयी नृसिंह: ।59।

(58) Smṛti Manuscripts Vol. III No. 2304. p. 401
(59) गङ्गवंशानुचरितम —नवमपरिच्छेदस्य द्वितीयश्लोक: ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

From the discussion made above, it may be concluded that Narasimha was an erudite and versatile scholar and thorough master of the different branches of Smṛti on which he wrote. Late M. M. Chakravarti aptly remarks about him. 'In fact he brings considerable knowledge to bear upon each subject and takes considerable pains in elucidating the disputed points by gathering the various authorities and by attempting to reconcile or explain the discrepancies found' (60). He can stand comparison with Hemādri, Mādhavāchāryā Chaṇḍeśvara, Raghu nandana and others and as such he may rightly be regarded as one of the great Dharmaśāstra-writers of India.

GAJAPATI RAMACHANDRA DEVA:-

Soon after the Muslim conquest of Orissa on the death of Gajapati Mukunda Deva, the last powerful Hindu sovereign in 1568, Rāmachandra Deva, the son of Janārdana Vidyādhara, the prime-minister of the four Bhoi Rulers of Cuttack (1535-1559) carved out a small independent state with the fort of Khurda as its capital. He is regarded as a National hero in Orissa because he re-installed the images of Jagannātha Balabhadra and Subhadra in their temple at Puri and revived their worship, to the great joy and inspiration of the entire Hindu community, within a decade of the historic sacrilege of Kalapahar, the Muslim general, who on his conquest of the country, flung the image into the fire and burnt it and afterwards cast into the sea (61). For this noble achievement he was honoured with title of **अभिनव इन्द्रद्युम्न** by the leaders of the nation, which is stated in the temple chronicale called Mādalāpañji (62). This statement is corroborated by an unpublished Sanskrit drama called **श्रीकृष्णभक्तवात्सल्यचरितम्** written by Rāmachandra (63) and **वसन्तोत्सव महाकाव्यम्** by poet Haladhara Miśra (64).

Ramachandra Deva was not only remembered by his posterity for the foundation of a powerful Hindu state, revival of Jagannātha

(60) J. A. S. Bengal Vol. LXVI, 1897 No. 4 p. 340.
[61] Ain-i-Akbari Vol. II p 128
[62] Printed in Oriya characters
[63] From its manuscript preserved in the Orissa State Museum,
[64] Quoted -do- -do- -do-

Digitized by PPRACHIN, SOA

worship and his brave fight with the Mughal and Golkonda armies, but also for the work दुर्गोत्सवचन्द्रिका the authorship of which is generally ascribed to him.

In all the manuscripts of दुर्गोत्सव चन्द्रिका so far discovered in Orissa except a solitary one, Rāmachandra is stated to be its author in the second verse after मङ्गलाचरणम् and the two concluding verses at the end of the work e. g.,

सकलागमसारतत्त्ववेत्ता
स कलावानिव सर्वतोऽनवद्यः ।
तनुते भुवि रामचन्द्रदेव-
श्चरणाम्भोरुहभक्तिमम्बिकायाः ।

(Verse after मङ्गलाचरण)

यावज्ज्याबन्धभूयं विदधति मधुराः कामुके शम्बरारे
र्यावत्तद्वैरिकण्ठे स भवति भगवान् भूषणं पन्नगेशः ।
यावत्तन्तल्पशायी विहरति रमया स्वैरमायानुगूढ-
स्तावच्छ्रीरामचन्द्रक्षितिपतिरचिता निर्मितिः प्रीतदास्ताम् । (last but one verse)

But an additional verse is found after the end of this work in a palmleaf manuscript acquired by Sri Paramananda Achārya, from the Ex-Mayurbhanja State at present a district of Orissa (65). This verse is historically important as it says that Śrī Vardhana son of Rajaguru Kavidimdima Jīvadeva, who was the guru of king Rāmachandra wroto this work at the hehest of the king. e. g.,

श्रीजीवकविडिण्डिमो नृपगुरुः षड्दर्शनी देशिक-
स्तस्यायं तनयो नयोत्तमधनः श्रीवर्द्धनस्तादृशः ।
सोऽयं भूपुरुहूतरामनृपते रादेशतः शैलजा-
पूजाक्रमकृते सतामभिमतां कांचित् कृतिं निर्ममे ॥

Śrī Jīvadeva Kavidiṇḍima, the Rājaguru of Gajapati Pratāparudra Deva of Orissa (1497-1535 A. D,) was a great Sanskrit poet of that age (66). His son who was better known at Bhāratibhushana

---

[65] It is now preserved in the Manuscripts library of the Orissa State Museum (T/22) along with three other manuscripts of this work.

[66] For further information above Jivadeva, please see [10] The Descriptive Catalogue. Vol. VII. pp. 271—278.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Vardhamana Mahapātra was a great scholar like his father. Like Lolla Lakshmidhara attributing the authorship of his work सरस्वती विलास to the name of his patron गजपति प्रतापरुद्रदेव Vardhana Mahāpātra made his patron Rāmachandra Deva, the author of his work 'दुर्गोत्सवचन्द्रिका'.

This work describes the autumnal festival of Goddess Durgā शारदुत्सवे गिरिभुव: समार्च्चन-क्रमचन्द्रिकां दिशति सम्मतां सतां verse. This work was based on ईशान संहिता, कालिकापुराण, रुद्रयामल, सम्मोहनतन्त्र, षण्मुख ? तत्त्वसारसंहिता, सारस्वत तन्त्र and other Saṁhitas, Tantras and Purāṇas, which is stated in the two verses quoted below. e. g.;

ईशान संहितायां यदीक्षितं कालिकापुराणाद्यै
यदवोधि रुद्रयामल संमोहन षण्मुखोक्तेषु ।१५।
यदलम्भि तत्त्वसागर सारस्वततन्त्र मन्त्रवर वाक्यै:
अन्यासु च संहितासु च तन्त्रेष्वथ वा पुराणेषु ।१६।

It is still regarded as an authority like शारदाशारदर्च्चन पद्धति of Godāvara Miśra through out Orissa.

VIŚVANATHA MIŚRA:-

स्मृतिसार संग्रह: by Viśvanātha Miśra is very popular in Orissa and palmleaf manuscripts containing this work are being discovered in all parts of this state. As its very name indicates it is a small compendium of previous Smṛti works dealing on Kāla, Achāra and Śraddha. Viśvanatha does not say any thing about himself, his gotra, forefathers, birth place or his time in his स्मृतिसार संग्रह. But this much is known definitely from the copies of this work so far examined that he was a Brahmaṇa having the surname Miśra, and belonged to Orissa which is known from his remark about Prathamashtami, festival which is observed only in Orissa on the Kṛshṇashtami of the month of Mārgaśira e. g., अथ प्रथमाष्टमी. अत्रोत्कलेषु अधुना पूजावन्दापनादिकं कुर्वन्ति, देशान्तरे नास्ति, तथा-प्रवचनमपि नास्ति ।

There are six manuscripts of this work in the collection of the Museum Dh/13, Dh/14, Dh/15, Dh/16, Dh/108 and Dh/157 of which Dh/108 is important as it contains the date of copy in its last colophon, which was the 3rd Aṅka of King Gopinātha Deva. The 3rd Aṅka or

Digitized by PPRACHIN, SOA

Second regnal year of King Gopīnātha who was undoubtedly the King of Khurda of that name, ruling from 1718 to 1725 A. D. fell in 1719 A. D. This provides the latest limit for fixing the date of Viśvanātha, who may tentatively be placed in the 17th century. Divyasimha Mahāpatra, who flourished in the second half of the 17th century refers to Viśvanātha Miśra with respect as विश्वनाथ मिश्राः at one place of his work श्राद्धदीपः which is not yet published. It may be mentioned in this connection that Viśvanātha does not refer to the Great Narasimha Vājapeyī or any of his works in his स्मृतिसार संग्रहः which might be due to the fact of his being almost a contemporary of Narasimha. But Viśvanātha being a predecessor of Divyasimha Mahapatra may definitely be placed in the first half of the 17th century.

Though the work is small, its author has quoted from the works of great writers like Mādhavāchārya (40 time), Kṛtyakalpataru (23 times) and Kaladarśa (27 times) and mostly refers to the following important Smṛti works written in Orissa e. g , शतानन्द संग्रह (quoted 35 times), शम्भुकर पद्धति, विद्याकर पद्धति, कृत्यकौमुदी (8 times) to make his work authoritative. The importance of this work lies in its popularity, which it did not lose inspite of compilation of voluminous works on different branches of Dharmaśāstra by the famous Gadādhara Rājaguru (C 1700-1750 A. D.) of the subsequent period.

VIPRA MIŚRA:-

Vipra Miśra is well-known for his work called 'श्राद्धप्रदीप' a manuscript of which was noticed by Sri Kulamani Miśra, professor, Sadāśiva Sanskrit College, Puri (67). Vipra Miśra begins this work after paying his respects to his preceptor Narasimha Miśra, who may tentatively be identified with the great Narasimha Vajapeyī. But he can definitely be placed in the first half of the 17th century as he is found quoted five times in the श्राद्धदीप by Divyasimha Mahāpatra of the second half of same century.

DIVYASIMHA MAHAPATRA:-

Divyasimha is well-known for his two works called 'कालदीप' and श्राद्धदीप palmleaf manuscripts of which are found all over Orissa.

(67) The Chaturanga, an Oriya monthly Vol, II No. 5. 1947, p. 223,

Digitized by PPRACHIN, SOA

From the last verse of both the works it is known that he was born in a family having Vatsa gotra "वत्सगोत्रसमुत्पन्नो दिव्यसिंहाभिध सुधीः" In the 'मङ्गलाचरणम्' of both the works he prays to God Kṛshṇa and also to Bhavānī-Śaṅkara, the famous deity of that name in the temple city of Bhubaneswar. The mention of this deity only in the मङ्गलाचरणम् of the above two works. most likely gives an indication about the association of the author with this sacred place.

Divyasiṁha refers to many authors and works in his श्राद्धदीप already known in the field. But मुकुन्ददीक्षित cited in this work is not yet known from any other source. He refers to only five authors and seven works in his कालदीप all of which are known before. There are four Kaladīpa manuscripts Dh/41 (b), Dh/92 (b), Dh/129, Dh/168 and two Śrāddhadīpa manuscripts Dh/41 (a) Dh/ 92 (a) in the manuscripts library of the Orissa State Museum.

He was also the author of a less-known work called दिव्यसिंह-कारिका in which he collected the important reference verses, which he could not incorporate in the above two works to avoid repetition, which is known from the colophon of this works.

"स्वेनैव कृते कालदीपश्राद्धदीपाख्ये स्मृतिसंग्रहे यानि बाहुल्यादुक्तानि कर्त्तव्य-कर्मोपयोगकानि वचनानि इहतु तेषामेव संक्षेपेण वर्णनम्"

Divyasiṁha flourished before the close of the 17th century as he is quoted by Gadādhara Rājaguru who wrote his works in the first quarter of the 18th century.

LAKSMĪDHARA MIŚRA:-

Lakshmīdhara Miśra having Kautsa gotra, was the author of a treatise on Śaiva faith called "शैवकल्पद्रुम" which was very popular in Orissa. He was a native of the very sacred town of Bhubaneswar called "एकाम्रकानन" as is known from the colophon at the end of each section of his work. He may be assigned to the last quarter of the 17th century, because his grand father Pradyumna Miśra is known from the introductory verse to be a contemporary of Narasiṁha Deva, evidently the only king of that name of the Bhoi dynasty of Khurda who ruled

Digitized by PPRACHIN, SOA

from 1522 to 1546 A. D. Śaivakalpadruma is regarded important due to the paucity of works of this nature.

GADADHARA RAJAGURU:-

Like the great Narasiṁha Vājapeyī, Gadadhara was born in an illustrious family patronised by the ruling house of the realm. From the introductory verses of his 'कालसार' (68) it is known that his grandfather Śrī Kṛshṇa Mahapātra Vājapeyī of the Kauśika gotra got the title of 'बृहत्पण्डित' from the Rajā of Khurda for his learning and scholarship. He was the author of a Dharmaśāstra called "नीतिरत्नाकर" which is cited at several places in the Kalasāra of Gadādhara. He had three sons named Haladhara, Nīlāmbara and Yameśvara. Haladhara, the eldest son who had performed 'शारद् वाजपेय' sacrifice became the Guru of the chief queen of Rajā Harekṛshṇa Deva (1715-1718) from whom he received the grant of the Brahman village called Vīra Harekṛshṇapur near the town of Puri.

His younger brother Nīlāmbara was proficient in Vedānta, Smṛti, Jyotish, Sāhitya, Vyākaraṇa, Nītiśāstra and was the author of a स्नानोत्सवस्तोत्र of Lord Jagannatha. He was the founder of some śasanas where many learned Brāhmaṇs well-up in sacrificial lore were settled. He won fame like Yudhishṭhira of the golden days by the performance of great sacrifices like 'चतुर्मुख' and others. He was the Rājaguru of Gajapati Harekṛshṇa Deva (1715-1718), who honoured his preceptor by the gift of a black umbrella bedecked with four stars and the foot-print of Kṛshṇa made of gold; an elephant and chāmara. Yameśvara, the youngest was also a यज्वा and a notable scholar. Nīlambara Rajaguru and Jānakī Devī were the parents of Gadādhara Rājaguru who begins his work कालसार after paying respects to them. The same introductory verses are also found in the beginning of his work 'आचारसार' which is also published (69).

---

(68) [a] Kālasāra printed and published in the Oriya characters by the Raja Saheb of Bamra in 1898.

[b] Printed and published in the Devanagari characters by the Asiatic Society of Bengal.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Gadādhara is reputed as the author of 18 works on Smṛti each of which has got the distinguishing term 'सार'. Besides 'Āchāra sāra' the following other works are referred to in his Kālasāra, e. g.- 'शुद्धिसार' 'दानसार' 'व्रतसार' 'विवाहसार' (70). In his 'आचारसार' two other new works e. g., 'संस्कारसार' and 'स्नानसार' are also referred to (71). Thus the names of the following eight works by Gadādhara are definitely known (1) आचारसार, (2) कालसार, (3) शुद्धिसार, (4) दानसार, (5) व्रतसार, (6) विवाहसार, (7) संस्कारसार, (8) स्नानसार,

The names of other works are not yet known. Gadādhara Rājaguru who was a profound scholar and had vast knowledge in different branches of Dharmaśāstra wrote 18 Smṛti digests called 'सार' in imitation of the celebrated Smṛti writer Narasimha Vajapeyī, the author of 18 'प्रदीप's whom he wanted to excel by his achievement. The ambition of his life was fulfilled as his two works कालसार, and आचारसार pushed other works on the same subject to the background and are being recognised as standard works through out Orissa since the time of their compilation till these days.

VASUDEVA RATHA:-

Vasudeva Ratha, son of Kāśīnātha Ratha, who was a younger contemporary of Gadadhara and an inhabitant of the same village competed with the latter in the work of compilation of Dharmaśāstra. He is reputed as the author of 18 works each having the term 'प्रकाश' as its ending e. g., 'स्मृतिप्रकाश', न्यायप्रकाश, मीमांसाप्रकाश, भुवनेश्वरीप्रकाश, मण्डलप्रकाश, etc. We have got the manuscripts of 'मण्डलप्रकाश' and 'भुवनेश्वरीप्रकाश' in our collection. A portion of his 'स्मृतिप्रकाश' has been published by the Asiatic Society of Bengal. Nothing more can be said about him at the present state of our knowledge.

---

(70) [a] शुद्धिसार p. 29; 236, 260, 299 of the Orissa edition.

[b] दानसार p. 34

[c] व्रतसार p. 104, 141, 577, 580 of the Orissa edition,

[d] विवाहसार p. 298

(71) संस्कारसार p. 7 स्नानसार p. 255. -do. -do

Digitized by PPRACHIN, SOA

RAGHUNATHA DASA:-

Raghunātha Daśa, son of Vasudeva Dāśa was the author of a work called कालनिर्णय, a palm-leaf manuscript of which (Dh-169) is preserved in the Museum. The work is complete and is divided into five प्रकरणs or sections. The author quotes from a large number of Puraṇas and previous Smṛti works to make his discussion on each topic lucid and interesting. Among the Smṛti works of Orissa, he very often quotes from शतानन्दसंग्रह and at some places refers to 'स्मृतिसमुच्चय' 'कृत्यकौमुदी' and 'विद्याकर पद्धति' whereas he cites only once from the स्मृतिसार संग्रह of Viśvanatha Miśra (F94). His date can be fixed after 1650 A. D. as he is posterior to Viśvanātha Miśra, and prior to 1729 as the Museum manuscript was copied in the year during the reign of RāmachandraDeva II (1726-1736). He seems to have quoted a few lines from the Kalasāra of Gadādhara while discussing on 'शिवचतुर्दशीकाल without giving the name of the work quoted but simple saying स्मृत्यन्तरेपि, In that case the date of his 'कालनिर्णय' may be fixed between 1715-1730 A. D.

Speciality of this work lies in its discussion on गोवर्द्धन पूजाविधि (F24) ललितासप्तमी (F34) राधाष्टमी (F55) and राधादामोदर पूजा (F115) for the first time in a Smṛtī work of Orissa as they do not find mention in the Kalasāra written about a decade age. He also writes how the Vaishṇavas observe the festivals of जन्माष्टमी and 'श्रीपञ्चमी' (72). The author has given prominence to the festivals observed in Ekāmra Kshetra or Bhubaneswara, while discussing on various festivals e. g.,

एकाम्रे यमद्वितीया, एकाम्रे अक्षय तृतीया, एकाम्रे प्रावरण षष्ठी, एकाम्रे-भैमी एकादशी, एकाम्रे दमनक चतुर्दशी which might be due to his association with this sacred place. It is not unlikely that he was an inhabitant of this holy tīrtha like Lakshmīdhara Miśra dercribed before.

While discussing about 'माघसप्तमी' he says that on this auspicious day people take their bath in the Chandrabhāgā river falling into the sea near the Konārka Kshetra, of Utkala deśa situated on the nothern shore

---

(72) वैष्णवविषये जन्माष्टमी, वैष्णवविषये श्रीपंचमी

Digitized by PPRACHIN, SOA

of tho sea e. g., **अत्र दिने उत्कलदेशे सिन्धोरुत्तरतीरे कोणार्कक्षेत्रे चन्द्रभागायां स्नानं कुर्वन्ति, सूर्य्यार्घ्यं दत्त्वा पूजयन्ति** । Such clear description of this important festival is not yet met in any other Smṛti work of Orissa.

Bereft of the special features noted above, Kālanirṇaya of Raghunātha Dāśa is an imitation of the Kālasāra by the famous Gadādhara Rājaguru.

MAHAMAHOPADHYAYA KRSHNA MIŚRA:-

Some information about Kṛshna Miśra, who was a great scholar is obtained from the concluding portion of **कालसर्वस्व** which is quoted below— **इति श्रीमत् कौत्सकुलकैरवशरन्निशाकर न्यायवैशेषिकमीमांसाशेषभाष्यादि-शास्त्राकूपार-पारङ्गमसाहित्यसङ्गीतछन्दः- प्राकृत ज्योतिः-पाटीवीजादिविद् गर्व-सर्वङ्कष-महामहोपध्यायं कविकोविद कृष्णमिश्रविरचिते कालसर्वस्वे वैष्णवप्रकरणं समाप्तम् । समाप्तश्चायं ग्रन्थः** । It may be mentioned here that the above eulogistic description in a very slightly different form is found in the 'Sudhākara' commentary on 'Sāhitya Ratnākara', written by Kṛshṇa Miśra, an incomplete manuscript of which is preserved in the Museum. From the verso after '**मङ्गलाचरणम्**' and the last verse after each section of this commentary it is known that his grandfather Rāmachandra Miśra, the moon of the Kautsa family became famous in Utkala for his proficiency in different branches of learning and as a performer of various sacrifices. His son Paramananda Miśra was the father of the famous Kṛshṇa Miśra. It is known that one Ramachandra son of Mṛtyuñjaya Miśra of the Kautsa gotra wrote the **बुधनन्दिनीटीका** on the **सहृदयानन्द महाकाव्य** (73) composed by Kṛshṇānanda Sāndhivigrahika Mahapātra a minister of Gajapati Narasiṁha Deva IV of Cuttack (1377-1409 A. D.) This commentator Ramachandra can be identified with the grandfather of Kṛshṇa Miśra. Thus the genealogy of Kṛshṇa Miśra may be drawn as follows.

MṚTYUÑJAYA MIŚRA having Kautsa gotra
|
RAMACHANDRA MIŚRA author of **बुधनन्दिनीटीका** on **सहृदयानन्द महाकाव्य**
|
PARAMAMANDA MIŚRA
|
MAHAMAHOPADHYAYA KṚSHṆA MIŚRA, author of **कालसर्वस्व**

(73) Notices of Sanskrit Mss. Vol. IV. 1911, p 144.

Digitized by PPRACHIN, SOA

The time of Krshṇa Miśra author 'कालसर्वस्व', can be fixed tentatively because he refers thrice to a Smṛti-writer of Orissa named Gopīnātha Vājapeyī, who was the Rajaguru of Gajapati Rāmachandra Deva II (1726-1736 A. D.) of Khurda as stated in the introductory portion of the unpublished Sanskrit drama named 'मधुरानिरुद्ध नाटकम' by Chayanī Chandraśekhara son of Gopīnātha e. g., देवोऽजायत रामचन्द्रधरणीभर्तुः स मर्त्योत्तमः........

× × ×

तस्यान्वयपद्माकरदिनकर समसोमयाजि वाजपेयि गोपीनाथराजगुरु द्वितीय तनय चयनि-चन्द्रशेखर रायगुरोः..............×

The reference to Gopīnātha Vājapeyī with respect places Krshṇa Miśra after C 1736 A. D. in the middle of the 18th century, He quotes from two books called 'दीक्षासार' and 'योगसार' which were most probably the works of the famous Gadādhara Rājaguru who wrote in the 1st quarter of the 18th century. As such the time fixed for him above is quite tenable.

The importance of कालसर्वस्व is stated in its last two verses in which the author claims the superiority of his work over previous ones in respect of treatment of both the Smārta and the Vaishṇava methods of calculation of auspicious time for the observance of various fasts and festivals.

It may be stated here that the Smṛti works of Orissa compiled prior to C1650 make no separate mention of the Vaishṇava fasts and festivals and the time of their observance. In the 'कालदीप' of Divyasiṁha Mahāpatra (1640-1680) we find for the first time the description of वैष्णवैकादशी as observed by the followers of 'माध्वाचार्य'. Gadādhara Rājaguru (1700-1750) writes a separate chapter called 'एकादशी प्रकरण' in which he makes discussion about different वैष्णवएकादशी as enjoined by Haribhakti vilāsa and other works (74). He also describes the rites to be observed by the Gaudiya followers of Śrī Chaitanya in the month of Kārtika e. g., चैतन्यमतानुयायि गौडवैष्णवैस्तु आश्विन्यशुक्लैकादशीमारभ्य कार्त्तिक शुक्लैकादशीं यावत् व्रतमाचर्यते ।

---

(74) Kālasāra p. 112 (Orissa Edition)

Digitized by PPRACHIN, SOA

In the एकादशी प्रकरण Gadādhara observes that the Oriya Vaishṇavas perform 'दीक्षा' like the Smārtas e. g., गृहीतदीक्षैरपिओड्रवैष्णवैः स्मार्त्तवत् दीक्षा क्रियते ।

Kṛshṇa Miśra who was posterior to Gadādhara writes a separate section called वैष्णवं प्रकरण which is the last chapter of his कालसर्वस्व wherein he makes an elaborate discussion about the fasts and festivals etc., observed by different sects of Vaishṇavas e. g., माध्व, श्रीवैष्णव, सनक वैष्णव, रामोपासक वैष्णव, उत्कल वैष्णव and the appropriate time of their observance by the respective sects.

The most important point deserving mention here is the discussion about ललितासप्तमी and राधाष्टमी for the second time in the Kālasarvasva, which are first mentioned in the कालनिर्णय by Raghunatha Dāśa. They are not found in the Smṛti works of Orissa written prior to 1700 A. D. On this Kṛshṇa Miśra makes the following observation — "यद्यपि राधाललिताजन्म हरिभक्तिविलासे नास्ति, तथापि वैष्णवाचारात् साधनदीपिकायां सत्त्वाच्च तत् किञ्चित् लिख्यते" ललिताजन्म is to be observed on the Śukla Saptamī of Bhādra and राधाजन्म is to be ovserved on the next day which was formaly known as ज्येष्ठाष्टमी. Here he remarks ज्येष्ठेति राधायाः नामान्तरमिति केचित् (F. 135)

At another place (F.137) he states that कार्त्तिककृष्णाष्टमी is deemed holy as on that day Śrī Kṛshṇa made Rādhā the overlord of Bṛndāvana. From the above discussion it may be concluded that Kṛshṇa Miśra, who was a Smarta had to incorporate the festivals connected with Rādhā in his work on Dharmaśāstra as by his time (mid 18th century) Rādhā, who is not mentioned in the previous Smṛti works has become deified and the devotees of Śrī Rādhā-Kṛshṇa had formed an influential section in Orissa due to the preachings of Rasikānanda Gosvāmī, Baladeva Vidyābhusaṇa and others. Thus Kalasarvasva throws some new light on the development of Rādhā Kṛshṇa worship in Orissa, which was steadily gaining ground in his days and became dominant in the society during the last two centuries.

Kṛshṇa Miśra, who was an erudite scholar utilised all available works to make his कालसर्वस्व as authentic and authoritative as was possible in that age. He also wrote another work called शुद्धिसर्वस्व

Digitized by PPRACHIN, SOA

which is referred to in this work e. g., "उपवासं तत्र शुद्धसर्वस्वे वक्ष्यामः" He was perhaps the author of a work named वैष्णवसर्वस्व the manuscript of which was found in a village near Puri. A great scholar as he was he might have written some other works on Smṛti, the names of which remain yet to be discovered.

VIŚVAMBHARA MIŚRA:-

Another Smṛti-writer of the 18th century is Viśvambhara Miśra author of 'Smṛti-Dīpikā' a manuscript of which has been noticed by M. M. Chakravarti (76). The introductory verses of his work run as follows-:

मन्वादिशास्त्रनिचयं स्वगुरोरधीत्य, हेमाद्रिमाधवमतानि विचार्य यत्नात्
श्रीवाजपेयि कमलाकर दिव्यसिंह स्मार्त्तादितत्त्व मनुस्मृत्य करोमि किञ्चित् ।

सन्ति यद्यपि धीराणां स्मृतिग्रन्थाश्च कोटिशः ।
तथापि सारमाकृष्य क्रियते नूतनोद्यमः
प्रकाशेदृशभिन्नेन सर्वादिक सम्प्रकाशकैः ।
विश्वम्भरेण सुधिया क्रियते स्मृतद्दीपिका ।

Viśvambhara may be placed later 1700 A. D. as he pays his respects to Divyasiṃha Mahāpātra who flourished in the second half of the 17th century, in the first introductory verse of his work. No review of this work is possible for want of its manuscript in our museum.

VASUDEVA TRIPATHI:-

Two works on Prayaschitta assignable to the period (1600-1750) are प्रायश्चित्त विलोचन by Vāsudeva Tripāthi (77) and प्रायश्चित्त मनोहर by Murāri Miśra. Vāsudeva begins his work after praying to God Rāma e.g.

श्रीरामं स्मरकोटिसुन्दरतरं कामं नमस्कृत्य तं-
प्रायश्चित्तविलोचनं वितनुते श्रीवासुदेवः सुधीः ।

According to tradition the author belonged to Balasore area, where manuscripts of this work are discovered. The work contains

(76) J. A. S. Bengal Vol. LXVI.1897 p. 345
(77) Archaeological survey of Mayurbhanja by N. N. Basu, p. 86

Digitized by PPRACHIN, SOA

2800 verses and its author deals with his subjects in a learned manner. He quotes from Bhavadeva Paddhati, Gaṅgavākyāvali, Smṛtisārasāgara and other works.

The date of copy of the manuscript of this work discovered in village Pedāgadhi of the present Mayurbhanja District is Saka 1664 or 1742 A. D. (77) which fixes the latest limit for this work. The enterior limit for this cannot be fixed with certainty unless manuscripts of this work are examined.

MURARI MIŚRA:-

प्रायश्चित्तमनोहर by Murāri Miśra begins with a verse, which states that Murāri Miśra, the son of Kāhnu Miśra is the author of this work e. g.,

श्रीमन्मुरारि मिश्रेण काह्नु मिश्रस्य सूनुना
क्रियते व्यवहारार्थं प्रायश्चित्तमनोहरम् ॥

There are two complete manuscripts of this work in our collection (Dh/114 and Dh/182) This work seems to be pretty old and quotes from Smṛtis written by ancient Ṛshis and refers to earlier Smṛti-writers like Bhavadeva, Lakshmīdhara, Vijñaneśvara, and Śūlapāṇi (78). Śūlapāṇi being an author of the second half of the 15th certury Murari Miśra who quotes him may definitely be placed after 1500 A. D.

MĀGUṆI MIŚRA:-

Māguṇi Miśra worte a work on प्रतिष्ठा a portion of which is found in a manuscript preserved in our museum (Dh/77). A chapter of his work e. g., पण्डिताचार्य्य मागुणिमिश्र विरचित घटितविष्णुप्रतिमाविधिः is found quoted in प्रतिष्ठासारसंग्रह by Chandraśekhara which was copied in 48 Aṅka (वसुवेदाङ्कशरदि) or 38th year of Vīrakeśarī Deva I, Rājā of Khurda (1736-1792) The year of copy being equivalent to 1774 A. D. Māguṇi Miśra may tentatively be placed at least half a century before that date. He was also the author of another work called शैवपद्धतिः a manuscript of which Dh/78 is in our collection. Manuscripts of his works called

(78) मत्रथेन्तु द्वयमिति शूलपाणिः

Digitized by PPRACHIN, SOA

प्रतिष्ठासार, प्रतिष्ठासार पद्धतिः, प्रतिष्ठाऽकम्‌ have been found in different places of the Puri District (79).

KRSHNA DAŚA:-

Kṛshṇa Dāśa the author of नित्याचार पद्धतिः or नित्याचारक्रमसूचिका Dh/177 (a) a complete manuscript of which is preserved in our collection most prabably belonged to Orissa. His date may be fixed tentatively as this manuscript was copied in the eleventh Aṅka .रुद्राङ्क or the 8th regnal year of Vīrakeśarī Deva which fell in 1744 A. D. Kṛshṇa Dāśa author of नित्याचार प्रकरणम्‌ an incomplete manuscript of which is in our stock (Dh/59 (a) is identical with the above author as both the works contain practically similar texts. The topics of this work have been noted in its proper place. No further information about the family or time of this author is yet available.

GOPALA NANDA:-

Copāla Nanda who belonged to Orissa, compiled a work oalled नित्याचार पद्धतिः for the Sāmavedī Brāhmaṇas of Orissa, a complete manuscript of which written in Oriya characters was first noticed by Hara Prasada Sastri in 1911 (80). But it may be noted here that गोपालानन्द has been printed in place of गोपालनन्द which is either a printer's devil or mistake of the copyist, because Sāmvedī Brāhmaṇas having the surname 'Nanda' are only found all over Orissa. The date of the author is not known, but he can tentatively be placed after 1650 A. D. because prayer to Śrī Rādhākṛshṇa in the मङ्गलाचरणम्‌ of any work is generally found from the last quarter of the 17th century when Śrī Radhā was deified.

GOPĪNATHA PATTANAIK:-

Gopīnatha Paṭṭanāik wrote a work called शूद्राह्निकपद्धतिः for the guidance of the people of the Śūdra class, a complete manuscript of which (Dh/86) is preserved in our collection. From the introductory portion of this work it is known that he was the son of Bharata Paṭṭanāik and grandson of Dāmodara Paṭṭanāik and compiled this work at the behest

(79) Unpublished Notices of palm-leaf manuscripts surveyed in ORISSA,

(80) Notices of Sanskrit Manuscripts Vol. IV.

Digitized by PPRACHIN, SOA

of his father. The author was most probably the son of Bharata Pattanaik who was a minister of Mukunda Deva I, Raja of Khurda (1656-1693 A.D.) (81). Therefore the author has rightly described him विश्वातोभरतो ज्यरा-जन सदा सम्भाविनो भूभुजा । In that case Gopinātha may definitely be placed in the 1st quarter of the 18th century.

GOPĪNĀTHA VĀJAPEYĪ:

Another Smṛti writer of Orissa of this period is Gopīnātha Vajapeyi who adorned the court of Gajapati Rāmachandra Deva II (1725-1736), Raja of Khurda. But the name of his work is not yet known from any other source.

पण्डितसर्वस्व two manuscripts of which are preserved in our collection (Dh/66 and Dh/143) was a standard Smṛti work, which was recognised as an authotity in Orissa. This is altogether different from the पण्डितसर्वस्व of Halāyudha, who was a minister of the King of Gauda e. g. गौडभूदमात्यमण्डलिमौलिरत्नरचितांघ्रि-राजपण्डित-महामहत्तक श्रीहलायुध as is found in the two manuscripts of this Dh/121 (B). and Dh/181 preserved in our Museum. The Paṇḍita Sarvasva, which had circulation in Orissa was certainly much later than that of Bengal written towards the close of the twelfth century, as it cites Madhavāchārya of the 14th century. If Kalidāsa montioned in this becomes identical with the famous Kalidāsa Chayanī, (c 1500 A. D.) it may be placed after that date. Paṇḍita sarvasva is found quoted by Gadadhara Rājaguru and Kṛshṇa Miśra, as such it was written prior to 1700 A. D. The enterior and posterior limits for this work being C 1500 A. D. and C 1700 A. D. respectively, it may tentatively be assigned to the sixteenth or seventeenth century. The contents of this work are noted in its introductory portion This work is still being used by the priests of Orissa.

YOGI PRAHARAJA MAHAPATRA:-

Yogi Praharaja Mahāpatra was the author of a Smṛti called संक्षिप्त स्मृतिरत्न or स्मृतिरत्न a manuscript of which was first noticed by Mm. H. P. Sastri towards the close of the last century. About it he

(81) Madala Panji (Oriya) Prachi Edition.

Digitized by PPRACHIN, SOA

writes "Smṛti Darpaṇa" has been found in Orissa written by Yogi Praharāja, a scion of an influential family of Brāhmins, who for many generations were the spiritual guides of the Rājas of Orissa. They wanted to have a standard Smṛti of their own and got this work written. The writer does not seem to be old as he followed Gadadhar (82) A complete manuscript of this work called संक्षिप्त स्मृतिदर्पण was examined by me in 1944-45 while I was the Archaeologist of the Ex-Kalahandi State, the last chapter of which contains a short history of the Raj-family of Nandapur.

From the last verse of his other work called वैद्यहृदयानन्द a manuscript of which is preserved in our museum, it is known that Yogī was the son of Nilakaṇṭha Praharaja who was the गुरु or preceptor of the chief queen of Vikrama Deva, King of Nandapura e. g..

यत्तात्तः प्रहराजज्योतिषरविः श्रीनीलकण्ठः सुधीः ।
श्रीमन्नन्दपुरेशविक्रमनृपश्रीपट्टराज्ञी गुरुः ॥

At the end of each of the five prakāśas to which the work is divided the author speaks of himself thus इति श्री योगिप्रहराज महापात्र विरचिते वैद्यहृदयानन्दे .... प्रकाशः ।

From the verse quoted above it is known that Yogī Praharāja flourished in the kingdom of Nandapura when Vikrama Deva was its ruler. The present district of Koraput in Orissa comprises the northern part of the old Nandapura kingdom which was very powerful and extensive during the 15th and 16th centuries. It was so called after the name of its capital town 'Nandapur' which is now found in ruins in the Nandpur P. S. of the Koraput district. It was afterwards called Jeypore State, when its capital was shifted from old Nandapur to the present town of Jeypore. The 'Vikramanṛpa' of the above verse is the first king of that name who ruled from 1758-1781 A. D. Thus Yogī Praharāja who flourished in the middle of the 18th century borrowed from the works of Gadadhara Rājaguru as pointed out by H. P. Sastri.

(82) Report on the search of Sanskrit manuscripts (1895...1900) by Mm H. P. Sastri.

(83) Vaidya Hṛdayānanda has been published by the Government Oriental Manuscripts library, Madras as a bulletin in 1951.

Digitized by PPRACHIN, SOA

KAVIBHŪSHAṆA GOVINDA SAMANTARAYA:-

Kavibhūshaṇa Govinda, a famous poet and scholar of Orissa of the 18th century wrote a Smṛti work called स्मृतिसर्वस्व which was very popular in Orissa. The first part of this work divided into two parts has been published (84). But its second part or उत्तरार्द्ध which is found in a manuscript preserved in the Orissa state Museum is important as it gives an elaborate history of the family of the poet which has been quoted in the proper place of the catalogue. From this the following genealogy of the poet can be drawn.

Durgādāsa of the Bharadvāja gotra founded the Brāhmaṇa śāsana
दुर्गादासपुर
|
Kavichandra Viśvanātha Sāmantarāya
(He was honoured in the court of Akbar through the help of Rāja Mānasiṁha between 1594-97 A. D.. He settled in Pratāpa Rāmachandrapura after his return from Delhi)
|
Mahādeva — Maheśvara.
(Both the brothers settled in the kingdom of Banki in 1615 A.D.)
|
Trilochana Sāmantarāya.
|
Kṛshṇachandra Sāmantarāya.
|
Padmanābha Sāmantarāya.
|
Viśvanātha Sāmantarāya.
|
Rāmachandra Sāmantarāya (Bṛhatpaṇḍita)
|
Kavibhūshaṇa Govinda Sāmantarāya.

There is a verse in the last chapter of this work which gives the date of its completion e. g.

खशून्यमुनिचन्द्रम:प्रमित शाकसम्वत्सरे
गते व्यरचि हे बुधा विमल शास्त्रमेतन्मुदा ।

(84 Published by the Asiatic Society of Bengal in 1912)

Digitized by PPRACHIN, SOA

The writing of this work was finished in Saka year Kha (O) Śūnya (O), Muni (7), and Chandramā (1) - 1700 or 1778 A. D.. He got the title or कविभूषण from Gajapati Vīrakeśarī Deva I (1736-1793) A. D. who was a great patron of learning, most probably for writing the drama समुद्रमाधव नाटकम् in seven Acts, which was staged in the Jagannatha temple at Puri before an assembly of learned scholars. His सूरिसर्वस्व which refers to a large number of works and authors is recognised as a standard work in Orissa.

With Kavibhūshaṇa Govinda closes the history of Dharmaśāstra literature in Orissa which began in the eleventh century with the great Śatānanda Acharya. No Smṛti work is known to have been compiled during the long British regime in Orissa (1803-1947) except the कल्याणद्धर्मसर्वस्व by the late Mahāmahopadhyaya Sadāśiva Miśra Kavyakantha of Puri of this century.

I am highly grateful to Śrī Paramānanda Acharya, Superintendent of Arhaeology, Orissa, Bhubaneswar who has always helped me with his valuable suggestion, while carrying on research on the Smṛtiwriters of Orissa during the last seven years. My thanks are also due to my assistant Pandita Śrī Nilamaṇi Miśra Sahityacharya, who has helped me a lot in the preparation of this descriiptive catalogue. This being the first published work of this nature in Orissa, there might have been some flaws either in the preparation or printing of this volume, which may kindly be overlooked by the scholars.

Kedarnath Mahapatra,
Curator, Orissa State Museum,
BHUBANESWAR.
3-10-1957.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Descriptive Catalogue

OF

Palm leaf and Paper

MANUSCRIPTS.

1

Cat. No. Dh. ·137' (a) **अग्निहोत्र होम पद्धतिः**

By

अग्निचित् शम्भुकर मिश्र वाजपेयी

Substance— Palm leaf. No. of folia I3 (10"×1-1") Character—Oriya. Date of copy is not given. Condition— Wormeaten at both the ends, incomplete as the first three folia are missing. Findspot—Khallikota, Ganjam District.

Beginning – वालखानाय विद्वद्भिः क्षम्यता मत्र चापलम् ।
अथाग्निहोत्र पद्धतिः ।

Topics— पश्चाद्विक्रम, प्रवास प्रवेशविधिः, परान्ननिवृत्तस्याग्निमतः प्रवासे पाक-विधि ।

Saṁbhukara Miśra Vajapeyī, a celebrated Smṛti-writer of Orissa, of the fourteenth century A.D. wrote a number of works on Dharma śastra, of which the above is one.

2

Dh. 163 **अभिषेक विधिः**

Substance – Palm leaf, No of folia 120 (8·5" × 1·5") Character—Oriya, Date of copy is not given. complete. Condition—good, Find spot – Sakhigopala area, District Puri.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Topics— ग्रहण पुरश्चरण विधिः, अभिषेक विधिः, शताभिषेकः, ब्रह्मकलशाभिषेकः, पञ्चकलशाभिषेकः, बृहद् विश्वसारतन्त्र सम्मत योगिनीतन्त्रोक्त विधिना पूर्णाभिषेक क्रमः, राज्याभिषेकविधिः, देवाभिषेकविधिः।

No colophon at the end.

3

Dh 164

अद्भुत दर्पणः

By

रघुनाथ पुत्र माधव

Substance— Palm leaf, No. of folia 167 (18·1''×1·2'') Character— Oriya. Date of copy is not given. Condition— wormeaten at some points. Complete. Find spot— Dharadharapur, District Cuttack. The manscript contains a table of contents at the end.

Topics— अद्भुतविचारः, उत्पातोत्पत्तिकारणं, त्रिविधोत्पातविवेकः, सामान्यतः शान्ति कथनं, मयूरचित्राद्भुत कथनं, नवग्रहाद्भुत कथनं, राश्यद्भुतं, नभसोऽद्भुतं, गन्धर्व नगराद्भुतं, निर्घाताद्भुतं, इन्द्रधनु अद्भुतशान्तिः, दण्डाद्भुतं, सन्ध्याद्भुतं, किरणाद्भुतं, दिग्दाहाद्भुतं, छायाद्भुतं, तमोधूमनिहाराद्भुतं, विद्युदद्भुतं, वाताद्भुतं, मेघाद्भुतं, मेघानां गर्भाद्भुतं, वृष्ट्यद्भुतं, अतिवृष्ट्यद्भुतं, कबन्धाद्भुतं, नभसोद्भुतं, भौमाद्यद्भुतं, अग्न्यद्भुतं, जलाशयाद्भुतं, दीपाद्भुतं, देवताप्रतिमाद्भुतं, कुमाराद्भुतं, शकटाक्षचक्राद्भुतं, शक्रध्वजाद्भुतं, दिव्यस्त्रीकाण्डाद्भुतं, दिव्यस्त्री पुरदर्शनाद्भुतं, वस्त्रोपानहासनशयनाद्भुतं, मार्गाद्भुतम् इत्यादि।

After मङ्गलाचरण the author speaks about his family thus:—

सूनुना रघुनाथस्य बुधबालकुलोद्गतेः
श्रीकृष्णारायन स्याग मतिनाथा ? नु जन्मना।
महामहोपाध्यायस्य गोविन्दस्याग्रजन्मना
क्रियते माधवेनासौ संक्षिप्याद्भुतदर्पणः॥

End— आतनोतु सतां मोदं संपूर्णोऽद्भुतदर्पणः। इति श्री अद्भुतदर्पणं नाम नाम पुस्तकं सम्पूर्णम्।

Colophon— श्री राधाकान्त रत्नाकर अधम दामोदर पुरोधातांकु।

Postcolophon— ओड्रदेशस्य गौडदेशस्य सभापण्डितैः इदं पुस्तकं निर्णीतम्। समाप्तोऽयं ग्रन्थः।

Digitized by PPRACHIN, SOA

4

Dh. 145.

अद्‌भुत सागरः

By

महाराजाधिराज वल्लालसेन

Substance—Palm leaf, No. of folia 1?4 (18·2″×1·4″) Character—Oriya. Date of copy is not given, complete, Condition—good, Find spot, Khallikota, Ganjam. The first 11 folia contain the first three chapters of the sixth skandha of Śrimad Bhagavata, after which अद्भुतसागर begins.

Topics—भौमाश्रये भूकम्पाद्भुतावर्त्तः, घातजोपस्करांद्यद्भुतावर्त्तः, शास्त्राद्भुतावर्त्तः, पुराद्यद्भुतावर्त्तः, पिष्टकाद्भुतावर्त्तः, स्वप्नाद्भुतावर्त्तः, देवप्रतिमाद्भुतावर्त्तः शक्रध्वजाद्भुतावर्त्तः, वृक्षलताफलपुष्पशस्याद्यद्भुतावर्त्तः, अरन्यद्भुतावर्त्तः, द्वीपाद्भुतावर्त्तः, एकीयाद्भुतावर्त्तः स्वप्नाद्भुतावर्त्तः, दन्ताद्भुतावर्त्तः, प्रसवाद्भुतावर्त्तः, शाकुनाद्भुतावर्त्तः, नानामृगविहगाद्भुतावर्त्तः, गजाद्भुतावर्त्तः, अश्वाद्भुतावर्त्तः, महिषवृषाद्भुतावर्त्तः, श्वानाद्भुतावर्त्तः, शृगालाद्भुतवर्त्तः, गृहगोधिकाद्भुतावर्त्तः, भेकाद्भुतावर्त्तः, पिपीलिकाद्भुतावर्त्तः, खञ्जरीटदर्शनाद्भुतावर्त्तः, खञ्जनदर्शनाद्भुतावर्त्तः, कृष्णपेचकाद्भुतावर्त्तः, वायसाद्भुतावर्त्तः, सद्योपर्वनिमित्ताद्भुतावर्त्तः, विरुद्धाद्भुतावर्त्तः, पाकसमयाद्भुतावर्त्तः।

Colophon— इति श्री महाराजाधिराज निशङ्कशङ्कर श्रीमत् वल्लालसेन देव विरचितः श्रीमदद्भुतसागरः समाप्तः।

Post-colophon—मृत्युञ्जयमिश्रेण लिखितं पुस्तकम्।

5

Dh 165

आसन शुद्ध्यादि

Substance- Palm leaf, No. of folia 45 (10″×1·2″) Character—Oriya, Date of copy is not given, complete, Condition good. Findspot - Village Charampa, P. S. Bhadrak, District Balasore.

Topics— आसनशुद्धिः, भूतशुद्धिः, प्रणवमातृकादि।

Digitized by PPRACHIN, SOA

6

Dh. 123

उपनयन पद्धति

according to सामवेदीय कुथुमशाखा. Substance- Palm leaf No. of folia 100 (12.5"× 1.5") character- Oriya, Date of copy is not given, complete, condition good, Find spot- Dharadharapur P. S, Jagatsinhapur, District Cuttack.

Beginning— श्री गणेशाय नमः, नमः सामवेदाय, अविघ्नमस्तु ।
अथ कुथुमशाखा व्रत पद्धति लिख्यते । प्रथमतः गर्भाधानम् ।
End— इति समावर्त्तन कर्म समाप्तम् ।

No colophon

7

Dh. 166

उपनयन पद्धतिः

Substance- palm leaf, No of folia 111 (16·3"×1·3") character- Oriya, Date of copy is not given incomplete, condition good. Find spot village Charampa, P. S. Bhadrak, District Balasore.

Beginning— अथ पूजाविधिः ।
पूर्ववत् स्थापयेत् कुम्भं धान्यस्थं वारिपूरितम्
पञ्चभङ्ग दलैयुक्तं सफलं वस्त्रवेष्टितम् ।
पञ्चरत्न समायुक्तं सर्वौषधि समन्वितम् । Etc.

No colophon.

8

P. 29 (A)

एकाम्र चन्द्रिका

Substance palm leaf· No. of folia 115. Size 12 9"×1-1". Character Oriya, Date of copy is 1765 AD. condition good, complete. Find spot Begunia area, Dt. Puri.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Beginning— श्री गणेशाय नमः

विश्वेश्वरं नमस्कृत्य ततस्त्रिभुवनेश्वरम् ।
अष्टादश पुराणाब्धे र्लिखाम्येकाम्र चन्द्रिकाम् ॥

End— इति सर्वपुराणाब्धे रेणेकाम्रस्य चन्द्रिका ।
समुद्धृत्य महादेव पादयोरर्पिता मया ॥

इति एकाम्र चन्द्रिकायां चतुर्थप्रकाशः समाप्तः ।

समाप्तश्चायं ग्रन्थः ।

Colophon—श्रीवीरकेशरि देवस्य नृपतेः सप्तविंशाङ्के माघे मासि शुक्लाष्टम्यां शौरिवारे अश्विनी मेष चन्द्रे .... प्रहराजेन महेश्वरशर्म्मणा लिखितमिदं पुस्तकं समाप्तम् ।

9

Dh. 97.

एकाम्र चन्द्रिका

Substance-palm leaf. No. of folia 85. Size 14·5″×1-3″. Character Oriya, Date of copy is 1770 AD. complete. Condition good. Find spot Raghapur area, Dt. Puri.

Authorities quoted—

ब्रह्मपुराणं, ब्रह्माण्डपुराणं, पद्मपुराणं, शिवपुराणं, एकाम्रपुराणं, कपिलसंहिता, शैवोत्तरं, भविष्यपुराणं, लिङ्ग-पुराणं, कालिकापुराणं, वशिष्ठ, शारदातिलकं, बृहत्-कालोत्तरं, नारदीयं, विष्णुधर्मोत्तरं, कालनिर्णयः, राजमार्त्तण्डं, भविष्योत्तरं, शूल-पाणि ।

Colophon

वीरकेशरिमहीपतेरश्विनवेदप्रमितेऽङ्के .... ।

विद्यावागीश लिखिता निर्मलकाम्र चन्द्रिका ।
नित्य श्री लिङ्गराजस्य प्रीत्यै भूयान्मनोहरा ॥

Digitized by PPRACHIN, SOA

10

Dh. 217.

एकाम्र चन्द्रिका.

Substance- palm leaf, No of folia 103, Size (11·2" 1·3") Character- Oriya, Date of copy is not given, condition good. Complete, Find spot-Sakhigopal, District Puri.

Colophon—

गोवर्द्धनाख्येन करेण केन
मोहान्धकारावृतमानसानाम् ।
गाढान्धकार प्रशमाय तूर्ण
पूर्णीकृतेयं खलु चन्द्रिकाख्या ॥

Same as in No Dh. 97

11

P. 18

एकाम्र पुराणम्

Substance— Palm leaf, No of folia 200, Size (15.2" × 1.5") Character— Oriya, Date of copy is not given. Condition good, complete. Find spot— Bhubaneswar, District Puri.

Beginning -

श्री श्री श्री ॐ नमो भगवते —

नमो विश्वेश्वराय ।

कीर्त्तिर्यस्य सुरासुरै मुनिवरै रागीयते नित्यशो-
नाकक्ष्मातलवासिभिः सुरनरै विद्याधरैः किन्नरैः ।
पातालेष्वपि कन्दरेषु च महीध्राणां गतैः पन्नगैः
ब्रह्मोपेन्द्रसवासवान्वितजगत्कर्त्रे नमः शम्भवे ॥

End—

एकस्तेजोभिरेभिः परिहृत विमले
ज्योतिषां यो विभाग-
स्त्वष्टौ ते लोकपालाः सुविधृत शिरसा
शासने नित्ययुक्ता ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

अण्डाद्यादद्भूतसंहाश्चतुरजति जगत् पञ्चभौतात्मकं यो
योऽसौ मूर्त्तिर्विभर्त्ति द्विगुणित चतुरं पातु वः कृत्तिवासाः ॥

इत्येकाम्रपुराणे पट माहस्र्यामैश्वर्य्यां स हितायां पंचमेंऽशे अनुक्रमणफलश्रुति कथनं नाम सप्ततितमोऽध्यायः ।

समाप्तश्चायं ग्रन्थः ।

Colophon— उपनयतु मङ्गलं वः
सकलजगन्मङ्गलालयो महेशः ।
त्रिदिवचर मुकुट कोटि निघृष्ट चरण-
स्त्रिभुवन शिवदः शिवः ।

श्री शुभमस्तु ।

श्री लिङ्गराजचरणारविन्दद्वन्द्वमकरन्दास्वादमत्तमधुव्रतायमानमनोज़स्य दयानिधिमिश्रस्य मेऽनिशं वसतु ।

The text of एकाम्र पुराण published by Govind Ratha and by Ratnakara Gargavaṭu, in Oriya characters contain 32 & 51 chapters respectively, where as our manuscript containing 70 chapters is complete. The special feature of this work is that it does not mention any other previous work or authorities.

12

Dh 218

कपिल संहिता

Substance-Palm leaf. No.of folia 157 Size (13·6"×1·5") Character—Oriya, Date of copy is 1818 A D. complete. Condition good. Find spot Rajapur area District Puri

Beginning— श्री गणेशाय नमः ।

सत्यजित उवाच—

मया श्रुतानि क्षेत्राणि पुण्यान्यघहराणि च ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि क्षेत्राण्युत्कल देशके ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

End— इदं ते कथितं सर्वं
भवता पृष्टमेव यत् ।
अन्यत् किं कथयिष्यामि
यद् त्वं नृपसत्तम ।

इति श्री कपिल संहितायां चोत्कलखण्डे प्रसङ्गे समुद्रप्रसङ्गकथनं नाम चत्वारिंशो-ऽध्यायः ।

Colophon— पिण्डकस्य च मिश्रस्य पुत्रेण हरिशर्म्मणा ।
लिखिता गृहरक्षार्थं चेयं कपिलसंहिता ॥

श्री रामचन्द्र देवस्य तृतीयांके शकाब्द १७३० ।

It contains 40 chapters, but there are only 21 chapters in the printed book, publishad by Ratnakar Gargavatu.

13

Dh. 107

कर्मकाण्डः

Substance— Palm leaf. No. of folia (12.4"×1·2") Character—Oriya. Date of copy is not given. Condition— good. Find spot Lalitapatpur. P. S. Khurda, District. Puri.

Topics— प्रायश्चित्त होमः, उपनयन पद्धतिः (Incomplete) मिच्छुमिश्रकृत विवाह पद्धतिः, मण्डल विचारः, ब्रह्मपुराणोक्त जलाशय प्रतिष्ठा, कात्यायनोक्त कूप प्रतिष्ठा ।

No colophon.

14

Dh. 35

कर्माङ्ग पद्धतिः

Substance— Palm leaf, No. of folia 130 (11"×1.3") Character—Oriya. Date of copy is not given. Condition— good. Find spot— Rajapur area, District Puri.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Topics—पुंसवनं, जातकर्म, बहिर्निष्क्रमण, विवाह पद्धतिः, शङ्कराचार्य विरचित शङ्कराष्टकम् ।

No colophon

15

Dh. 38 **क्रम दीपिका or गोपाल दीपिका**

By

केशवाचार्य

Substance—Palm leaf, No. of folia 66 (17.3"×1.3") Character—Oriya. Date of copy is not given, complete, Condition—good, Find spot, Parlakhimindi, Dt. Ganjam.

It describes the mode of worship of Śrī Kṛshṇa and has got a commentary called Laghu Dīpikā whch is attached to it.

Beginning— मङ्गलाचरणम्

ॐ नमः श्री कृष्णाय

कलात्ममायालवकान्तमूर्तिः कलक्वणद् वेणु निनादरम्यः ।
श्रितो हृदि व्याकुलयं स्त्रिलोकी श्रियेऽस्तु गोपीजनवल्लभो नः ॥

× × × × × ×

गदितमिह विविच्य नारदाद्ये र्यजनविधिं कथयामि शार्ङ्गपाणेः ।

End— इति श्री केशवाचार्य विरचितायां क्रमदीपिकायामष्टमः पटलः समाप्तः ।
श्री शुभमस्तु ।

लघुदीपिका

Beginning— नमो गोपीजन वल्लभाय

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै केशवाय महात्मने ।
यस्यावतारः सर्वेषामपवर्गादि साधनम् ॥

End—इति श्री क्रमदीपिकावृत्तौ लघुदीपिकायामष्टमः पटलः ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

There is also another incomplete Tīkā named कमद्दीपिका विवरण by गोविन्द विद्याविनोद भट्टाचार्य्य which is written on folia 47 to 66.

मङ्गलाचरणम्

श्री जगन्नाथाय नमः, श्री गणेशाय नमः ।

दूरे दैवतमस्तु जन्मजनुषा माभीरवामभ्रुवां
वन्दे नन्दनिवास मन्दिरजुषां पादारविन्दं मुदा ।
यामि र्वीक्षितमाहितं च हृदये प्रत्यङ्गमालिङ्गितं
वेदान्तप्रतिपाद्य मद्वयधियास्वाद्यं तदाद्यं महः ॥

बालोऽयमित्यगणित स्खलितोत्तरीय-
माभीर सुभ्रुवमरन्द विलोडयन्तीम् ।
पातु प्रमोद्भर मेदुरगण्डपाली-
स्वेदाम्बुशालि घनमालि विलोकितं वः ॥

आसाद्य विद्याधर नन्दनस्य निदेशमस्य प्रसभोद्धृतारेः
गोविन्दशर्म्मा जगतां हिताय करोति टीकां कमद्दीपिकायाः ।

× × ×

इति श्री गोविन्दविद्याविनोदभट्टाचार्य्यविरचिते कमद्दीपिकाविवरणे द्वितीयः पटलः ।

No colophon

16

Dh 74

कामान्दकीय नीतिसारम्

Substance-palm leaf No. of folia 12 (15.5"×1.5") character-Oriya, Date of copy in not given, incomplete. Condition good, Find spot- Khalikota, District Ganjam.

Topics—इति कामान्दकीय नीतिसारे इन्द्रियविजयो विद्यावृद्धि संयोगोनाम प्रथमः सर्गः, विद्या विभागोवर्णाश्रम व्यवस्था दण्डमाहात्म्यञ्च द्वितीयः सर्गः, आचार व्यवस्थापनं

Digitized by PPRACHIN, SOA

तृतीयः सर्गः । स्वाम्यमात्यराष्ट्रदुर्गकोषदण्डजनपद्मित्रप्रकृतिसम्पद्श्चतुर्थः सर्गः, स्वाम्यनुजीविवृत्तं पञ्चमः सर्गः, कंटक शोधनो नाम षष्ठः सर्गः, कटकशोधनो नाम सप्तमः-सर्गः ।

No colophon.

17

Dh 41 (B)

कालदीपः

By

दिव्यसिंह महापात्र

Substance-Palm leaf, No. of folia 42(14.4" × 1.3") Character Oriya, Date of copy is about c. first half of the 18th century. complete. Condition good. Find spot—Ranapur area of the Puri District—

Beginning— श्री गणेशाय नमः

प्रणम्य देवं श्रीकृष्णं भवानीशङ्करावपि
तन्यते श्राद्धदीपोऽयं दिव्यसिंहेन धीमता ।

End— इति श्री दिव्यसिंह महापात्र विरचितः कालदीपः समाप्तः ।

वत्सगोत्रसमुत्पन्नः दिव्यसिंहाभिधः सुधीः ।
कालदीपाभिधं ग्रन्थं चकार कृतिनां मुदे ।

Topics— तिथिलक्षणं, तिथिस्वरूपं, उपवासनिर्णयं, नक्तनिर्णयः, अयाचित-निर्णयः, दानव्रत कालनिर्णयं, कार्तिक शुक्ल प्रतिपद्; द्वितीया-गुंडिचायात्रा, यम-द्वितीया; अक्षय तृतीया, रम्भा तृतीया, गौरीव्रतं; विनायक चतुर्थी, नाग चतुर्थी, गौरी-गणेश चतुर्थी, शिव चतुर्थी, भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी, माघ शुक्ल चतुर्थी; मनसादेवी-पञ्चमी, रक्षा पञ्चमी, ऋषि पञ्चमी, श्री पञ्चमी; स्कन्द षष्ठी, षष्ठीदेवीषष्ठी, पावण-षष्ठी, चैत्रकृष्ण स्कन्दषष्ठी; कुक्कुटीव्रतं, माघसप्तमी, अशोकाष्टमी, जन्माष्टमी, रोहिण्य-ष्टमी, दुर्वाष्टमी, भाद्रशुक्लाष्टम्यां दुर्गाशयनं, शरत्कालीन दुर्गापूजा निर्णयः, दुर्गाष्टमी गोष्टाष्टमी, प्रथमाष्टमी, भद्राष्टमी, भीष्माष्टमी; राम नवमी, महानवमी; दशहरा दशमी, आश्विन शुक्ल दशमी, वैष्णवैकादशी; श्रवण द्वादशी, चम्पक द्वादशी, वामन द्वादशी, शक्रोत्थापनं, भीम द्वादशी; अनङ्ग त्रयोदशी; दमनक चतुर्दशी, नरसिंह चतुर्दशी, अनन्त-

Digitized by PPRACHIN, SOA

व्रत चतुर्दशी, चित्राकृष्ण चतुर्दशी, आषाढ चतुर्दशी, माघकृष्ण चतुर्दशी, शिवरात्रि चतुर्दशी, चैत्र कृष्ण चतुर्दशी, स्नुही चतुर्दशी; वैशाखादि पूर्णमी, स्नानयात्रा, चैत्रादिमासकृत्य, सावित्री व्रतं, सप्तपुरिकामावास्या, सुखरात्र्यमावास्या, दीपावली अमावास्या, षकुलामावास्या, पूर्णिमेप्रिकाल, पृथिवी रजस्वला, नदी रजस्वला इत्यादि ।

Authorities quoted:-

कात्यायन, कालमाधवीय, छन्दोगपरिशिष्ट, गोविन्दराज, माध्वाचार्य, माधवाचार्य्य, स्कन्दपुराण, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, भविष्य पुराण, लिङ्गपुराण, बृहस्पति, वैखानस ।

18

Dh 92 (B)

कालदीपः

By

दिव्यसिंह महापात्र

Substance— Palm leaf, No of folia 51 to 92 (15.7"×1.2") Date of copy is not given, Character— Oriya. Complete, condition good. Find spot— Ranapur, Dist Puri.

Topics— as per list given in No 17 above.

No colophon.

19

Dh 129

कालदीपः

By

दिव्यसिंह महापात्र

Substance— Palm leaf, No of folia 67 (13.5"×1.2") Character— Oriya, Date of copy is not given. incomplete, condition good, Find spot—Bhubaneswar, Dist Puri,

Topics and text similar to No 17 above.

Digitized by PPRACHIN, SOA

20

Dh. 108

कालदीपः

By

दिव्यसिंह महापात्र

Substance — Palm leaf. No. of folia 33 (13.3"×1.6") Character— Oriya. Date of copy is not given. Condition— good. Find spot Parlakimindi, District Ganjam

Topics and text similar to No 17 above.

21

Dh. 7

काल निर्णयः

By

माधवाचार्य

Substance — Palm leaf, No. of folia 125 (15.4"×1.4") Character— Oriya. Date of copy 53 Aṅka of Vīrakesarī Deva I or 1779 A.D., complete. Condition— good. Find spot — not known.

Beginning— वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे
यं नत्वा कृतकृत्यास्स्युस्तं नमामि गजाननम् ।

× × × ×

सत्यैकव्रतपालको द्विगुणधीस्त्र्यर्थी चतुर्वेदिता
पञ्चस्कन्दकृती षडन्वयवशः सप्ताङ्ग सर्वंसहः ।
अष्टव्यक्तिकलाधरो नवनिधिः पुण्यद्रुमा प्रत्ययः
स्मार्त्तोच्छ्राय धुरन्धरो विजयतां श्रीबुक्कणक्ष्मापतिः ।

व्यामूढानामिह जनुभृतां जाड्नवी तीर्थमेकं
विद्यातीर्थं प्रकृतिविमलं सद्विवेकोदयानाम् ।
सर्वेषां तत् प्रथम सुखदं भारतीतीर्थ माहु-
स्तद्भावान्मे विपुलमनसो निर्णये शान्तिरस्तु ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

व्याख्याय माधवाचार्य्यो धर्मान् पाराशरानथ ।
तदनुष्ठानकालस्य निर्णयं वक्तु मुद्यतः ॥

End— इति माधवीये कालनिर्णये पञ्चमं प्रकरणम्
कालनिर्णयः समाप्तः ।

colophon. श्री शाम्बशिवाय नमः, श्री जगन्नाथाय नमः !

वीरकेशरिदेवस्य त्रिपञ्चाशत्तमेऽङ्के
गोपीनाथेन यत्नेन लिखितः कालनिर्णयः ।

There is another chapter named माधवीय श्लोकविवरणं covering 8 folia at the end of the manuscript.

Historical note—Madhavacharya, the most celebreted Smṛti writer of southern India adorned the court of Bukka I (1354-1379) the soverign of the Vijayanagara Empire. His brother Sayanacharya who wrote the commentary on the Vedas was equally famous in that age.

22

Dh. 9.

कालनिर्णयः

By

माधवाचार्य्य

Substance-palm leaf. No. of folia 90. (16·3″×1·2″.) Character Oriya, Date of copy is not given Incomplete. Condition good, and wormeaten.

Similar to No. 21 noted above.

There is an incomplate work called दिव्यसिंहस्मृतिः attached to it by Divyasimha of the Vātsyayāna GOTRA covering 58 folia. It is badly torn and wormeaten.

Beginning:— श्री गणेशाय नमः श्री सूर्य्याय नमः

वात्स्यायन समुत्पन्नो दिव्यसिंहाभिधः सुधीः ।
एकत्र स्मृतिवाक्यानि संगृह्यैव लिखाम्यहम्

Digitized by PPRACHIN, SOA

End— Not legible. No Colophon

23

Dh 10

काल निर्णयः

By

माधवाचार्य्य

Substance-Palm leaf, No of folia 141 Size (13·1″×1·1″) Character—Oriya, Date of copy is not given, complete, Condition good. Find spot Bhubaneswar, District Puri

Similar to No 21 named above.

24

Dh.149

काल निर्णयः

By

माधवाचार्य्यः

Substance— Palm leaf, No of folia 131, Size (16.4″×1.5″) Character— Oriya, Date of copy is not given, complete. Condition good. Find spot—Khalikota, District Ganjam

Similar to No. 21 cited above., but there are two additional verses in the मङ्गलाचरण which are quoted below:-

क्षणमपि हृदये यदंघ्रिरेणु स्मरणमनिष्टविनाशि चेष्टदायि
सरभस मुदयन् स नीलशैले जयति लसत्कमलेक्षणो मुकुन्दः ।
नन्दिघोषरथारूढो गोविन्दो नलिनेक्षणः ।
बिम्बाधररुचिः श्यामो विजेयाष्ट महाभुजः ।

No Colophon

Digitized by PPRACHIN, SOA

25

Dh. 169.

काल निर्णयः

By

रघुनाथ दास

Substance- Palm leaf. No of folia 155, Size (15.2"×1·1") Character- Oriya, Date of copy 1728 A D Complete, condition good. Find spot-Dharadharpur P.S. Jagatsimhapur, District Cuttack. There is a table of contents at the end of the work.

Beginning— ॐ नमो नृसिंहाय

श्री नृसिंहं नमस्कृत्य भगवन्तं भवच्छिदम्
धीमता रघुनाथेन क्रियते काल निर्णयः ।
तत्तद्ग्रन्थेभ्य आहृत्य स्मृतिवाक्यानि सर्वशः
एकत्र लिख्यते यस्माद्रघुनाथेन धीमता ॥

End— इति श्री वासुदेवात्मज श्रीमद्रघुनाथ दास विरचिते कालनिर्णये पञ्चमं प्रकरणम् ।

Topics— काल लक्षणं, काल विभागः, पक्षमास दिनसम्वत्सराणां क्रमेण लक्षणं, तिथि-लक्षणं, दिवस विवेकः, दिवसस्य विभागपक्षः, तिथीनां दर्शहिंसत्व निरूपणं, सम्पूर्णतिथि-निरूपणं खण्डतिथि निरूपणं, विधिनिषेध व्यवस्था, पारण विचारः, विद्धतिथि निर्णयः, उपवास निर्णयः, प्रतिपदाद्यभावेऽपि सङ्कल्प विचारः, दैवव्रतानुरूप तिथि निरूपणं, नक्षत्रव्रतानुष्ठान काल निर्णयः, एकभक्त निर्णयः, अयाचित निरूपणं, नक्त निर्णयः एकोद्दिष्ट श्राद्धकाल निरूपणं, पार्वण श्राद्धकाल निर्णयः, कुतुपकाल निर्णयः, कुतुपा सम्भवे गौणकाल निरूपणं, पक्ष निर्णयः, शुद्धमास निर्णयः, मलमास निर्णयः, वर्ज्या-वर्ज्य विवेकः, ऋतुनिर्णयः, अयन निर्णयः, सम्वत्सर निर्णयः, प्रतिपद् निर्णयः, बलिराजो-त्सव निरूपणं, गोवर्द्धनपूजाविधिः, बलिदैत्यराज पूजाविधि, श्रीगुण्डिचाद्वितीयानिर्णयः, यमद्वितीया विधिः; अक्षय तृतीयानिर्णयः; रम्भा तृतीया निरूपणं, गौरीतृतीया; शिव चतुर्थी, हरितालिका चतुर्थी, विनायक चतुर्थी, नाग चतुर्थी गौरीगणेश चतुर्थी, नाग-पञ्चमी, मनसादेवी पञ्चमी, रक्षा पंचमी, ऋषि पंचमी, श्रीपंचमी; आरण्यक षष्ठी,

Digitized by PPRACHIN, SOA

षष्ठीदेवीषष्ठी, प्रावरण षष्ठी, स्कन्द षष्ठी; वैशाख शुक्ल सप्तमी, ललिता सप्तमी, माघ-सप्तमी, एकाम्र माघसप्तमी, अशोकाष्टमी, एकाम्र अशोकयात्रा, आषाढशुक्लाष्टमी, जन्माष्टमी, जयन्तीजन्माष्टमी, दूर्वाष्टमी, आश्विन शुक्लाष्टमी, आश्विन कृष्णाष्टमी, महाष्टमी, राधाष्टमी, गोष्ठाष्टमी, प्रथमाष्टमी, भद्राष्टमी, भीष्माष्टमी; रामनवमी, महानवमी, दशहरा दशमी, अपराजिता दशमी, कुष्माण्ड दशमी, एकादशी निर्णयः, द्वादशी निर्णयः, त्रयोदशी निर्णयः, चतुर्दशी निर्णयः, पौर्णमी निर्णयः, अमावास्या निर्णयः, मासकृत्यं, चातुर्मास्या व्रतारम्भ निरूपणं, संक्रान्तिनिर्णयः, भूमिरजस्वला विचारः, नदीरजस्वला-विचारः, ग्रहणनिर्णयः, निषिद्धकाल विचारः, क्षौरादि निर्णयः, युगसम्वत्सरादि निरूपणम् ।

colophon— श्री रामचन्द्रदेवस्य नृपते श्चतुर्थेऽङ्के कार्त्तिके मासि कृष्णे पक्षे त्रयोदश्यां तिथौ शौरिवासरे श्रीमत् कौण्डिन्यकुल सम्भूत अनन्तदासेन लिखितमिदं पुस्तकम् । श्री-कृष्णाय नमः । •

The date of copy calculated according to Christian era falls on Saturday, 19th, October, 1728 which was the 4th Anka or the third regnal year of Raja Ramachandra Deva II, (1726-1736 A. D.) King of Khurda.

26

Dh. 115

काल सर्वस्वम्

By

महामहोपाध्याय कृष्ण मिश्र

Substance—Palm leaf No. of folia 141 (16.4"×1.4") Character—Oriya. Date of copy is not given, complete, Condition—good, Find spot, Khalikota, Dt. Ganjam.

Beginning - श्री गणेशाय नमः अविघ्नमस्तु

• सग्रहण पञ्चाङ्गस्फुटमभिधायाप्रमसिद्धं शौ
नत्वा कृष्ण सुधीशः कुरुते सत्कालसर्वस्वम् ।

End— स्मार्त्तांच्चारस्थितं किञ्चिदति दि श्वेतवैष्णवे (?)
वैष्णवस्य तथा स्मार्त्ते यन्नोक्तं विस्तरान्मया ।
षोडशानां तिथीनां च द्वैधेऽनुष्ठान निर्णयः
स्मार्त्त वैष्णवयोः श्लोकः संयोगो लाघवान्मया ॥

Digitized by PPRACHIN, SOA

इति श्रीमत् कौत्सकुल-कैरव-शरन्निशाकर न्यायवैशेषिक-मीमांसाऽशेष भाष्यादि-शास्त्राकूपारपारङ्गम साहित्य संगीत-छन्दः प्राकृत-ज्योतिःपाटीवीजादिविद्गर्वसार्वकष-महामहोपध्याय कविकोविद कृष्णमिश्र विरचिते कालसर्वस्वे वैष्णवप्रकरणं समाप्तम्।

Authorities quoted:-

अगस्ति संहिता, अनन्तभट्टआग्नेयपुराण, आपस्तम्भ, इतिहास पुराण, ईशान संहिता, ऋक्वेद, एकाम्रपुराण, कर्काचार्य्य, कपिल, कश्य, कात्यायन, काण्वशाखा, कालादर्श, कालनिर्णय दीपिका, कालिका पुराण, कामभट्ट देवीदास, काशीखंड, कूर्म पुराण, कृत्यकौमुदी, कौमुदीकार, कोशलखंड, गर्ग, गरुडपुराण, गार्ग्य, गङ्गामाहात्म्य, गीता, गोपालभट्ट, गोपालोपनिषत्, गोपीनाथ, गोपीनाथ वाजपेयी, गोविन्दराज, गोभिल, गौडभट्टाचार्य्य, गौतम, गौतमीय, चन्द्रिका, जाबालि, जीमूतवाहन, जैमिनीसूत्र, ज्योतिःसिद्धान्त, तत्त्वसार संहिता, तिथितत्त्व, दशतत्त्व, दीपिका, देवल, दीक्षासार, देवीपुराण, धवल संग्रह, नागरखंड, नाम कौमुदी, नारद, नारदपंचरात्र, नारदीय, नारसिंह, नारायण, निगम, निर्णयामृत, नृसिंहाचार्य्य, नृसिंहपरिचर्य्याविलास, नृसिंहपुराण, पंडितसर्वस्व, पद्मपुराण, पराशर, पंचरात्र, पुष्करपुराण, पैठीनसि, प्रतापमार्त्तंड, प्रपंच संहिता, प्रहलाद संहिता, प्रश्नपंचरात्र, वराहपुराण, वराह संहिता, वसन्तराज, वर्द्धमानस्मृति, वशिष्ठ, वशिष्ठ रामायण, वालकांड, व्यास, वायुपुराण, वामन पुराण, वाल्मीकि, वाक्य निर्णय, वाजपेयी, वाजसनेय, वाचस्पति मिश्र, विप्रमिश्र, विश्वामित्र, विद्याकर, विष्णु, विष्णुपुराण, विष्णु रहस्य, विष्णुशृङ्खल, विष्णुतन्त्र, विष्णुधर्मोत्तर, विश्वनाथ मिश्र, वैश्वानर संहिता, वैष्णव संहिता, वैष्णव नामामृतोदय, भक्तिप्रदीप, भविष्यपुराण, भविष्योत्तर, भागवत, भारत, भास्वती, भास्कराचार्य्य, भीमपराक्रम, भुजबल, भोज; भृगु, मनु, मार्कण्डेय; मन्त्रप्रकाश, महागार्ग्य, मार्कण्डेय पुराण, माधवाचार्य्य, मात्स्य, मेदिनीकर, यम, याज्ञवल्क्य, योगसार, योगी याज्ञवल्क्य, योगिनीतन्त्र, रघुनन्दन, राजमार्त्तंड, रामतत्त्वप्रकाश, रामार्च्चन चन्द्रिका, रामायण, लक्ष्मीधर, लिङ्गपुराण, लिङ्गभैरव, वह्निपुराण, ब्रह्मपुराण, ब्रह्मरामायण, ब्रह्मसिद्धान्त; ब्रह्मवैवर्त्त, ब्रह्मांडपुराण, ब्रह्मा, ब्राह्मण, वृद्धमनु, वृहद्वशिष्ठ, वृहत् नृसिंहपुराण, वृहस्पति, बौधायन, शतानन्द, शब्दशक्तिप्रकाशिका, शम्भुकर वाजपेयी, शाम्बपुराण; श्राद्धाधिकार, शिवरहस्य, शिरोमणि, श्रीधरस्वामी, सनक, सनत्कुमार, सह्यखंड, सम्वत्सरप्रदीप, स्कन्द, स्कन्दपुराण, स्मार्त्तभट्टाचार्य्य, साधनदीपिका, सिंहवाजपेयी, सिद्धान्तशिरोमणि, सुमन्तु, सुप्रकाशकार, स्मृतिमहार्णव, स्मृतिसार, स्मृतिसारसंग्रह, स्मृतिसिद्धान्त, हरिवंश, हरिवंश स्मृति, हरिभक्ति विलास, हारित, हेमाद्रि।

Topics— कालनिर्णय, ऋतु निर्णय, सावनमासकृत्य, मास विचार, तिथिस्वरूप, विवाहविचार, तिथि विभाग, दानव्रत काल, वर्षवृद्धिश्राद्ध, उपवास प्रकरण, भक्त निर्णय, धान्यव्रत, श्राद्धकालनिर्णयः एकोद्दिष्टकाल, स्वकालातिक्रमणश्राद्धादिविचार, प्रतिपन् निरूपण; द्वितीया—यमद्वितीया, श्री गुण्डिचा द्वितीया, चातुर्मास्या द्वितीया, यम

Digitized by PPRACHIN, SOA

द्वितीया; तृतीया—अक्षय तृतीया; चतुर्थी—गणेश चतुर्थी, नागचतुर्थी, शिवचतुर्थी, हरितालिका चतुर्थी, माघशुक्लाचतुर्थी, गौरी चतुर्थी; पञ्चमी—मनसादेवी पञ्चमी, रक्षापञ्चमी; ऋषिपञ्चमी, सीताविवाह पञ्चमी वा मार्गशीर कृष्ण पञ्चमी. श्रीपंचमी; स्कन्द षष्ठी, षष्ठीदेवी षष्ठी, प्रावरणषष्ठी, कुक्कुटीव्रत; माघ सप्तमी; कृष्णाष्टमी, अशोकाष्टमी, जन्माष्टमी, दूर्वाष्टमी, भाद्रशुक्लाष्टमी दुर्गाशयन, आश्विन शुक्लाष्टमी, महाष्टमी, गोष्टाष्टमी मार्गशीर कृष्णाष्टमी (प्रथमाष्टमी) भीष्माष्टमी, भद्राष्टमी; श्रीराम नवमी; दशहरा, (ज्येष्ठशुक्लदशमी) आश्विन शुक्लदशमी; वैष्णवैकादशी, उन्मिलिनी एकादशी, वञ्जुली-एकादशी, त्रिस्पृशा एकादशी, पक्षवर्द्धिनी एकादशी, निर्जला ज्येष्ठशुक्ला एकादशी, हरिशयनैकादशी, माघशुक्ल एकादशी वा भैमी एकादशी; पातकद्वादशी, चम्पकद्वादशी, श्रवणद्वादशी, वामनजन्म द्वादशी, शक्रोत्थापन द्वादशी, भीम द्वादशी; अनङ्ग त्रयोदशी; दमनक चतुर्दशी, नृसिंह चतुर्दशी, अनन्त चतुर्दशी, कार्त्तिककृष्णचतुर्दशी, पाषाण चतुर्दशी, माघकृष्ण चतुर्दशी, शिवरात्रि चतुर्दशी, चैत्र कृष्ण चतुर्दशी, स्नुहीचतुर्दशी, पौर्णमासी— स्नानपूर्णिमा, आषाढ पूर्णिमा, श्रावणपूर्णिमा (वलदेव जन्म) इन्द्र पौर्णमासी, कौमुदी पूर्णिमा, दोल पूर्णिमा [दोलयात्रा] अमावास्या— सावित्री-अमावास्या, सप्तपुरिकामावास्या, प्रदीपामावास्या, सुखरात्रि अमावास्या, दीपावल्युत्सव, वकुलामावास्या, दर्शेष्टिकाल, विकृतेष्टिकाल, चैत्रमासकृत्य, वैशाखमासकृत्य, ज्येष्ठमासकृत्य, आषाढमासकृत्य, श्रावणमासकृत्य, भाद्रमासकृत्य, आश्विनमासकृत्य, कार्त्तिकमास कृत्य, चातुर्मास्यव्रत, मार्गशीर्ष कृत्य, पौषमास कृत्य, माघमास कृत्य, फाल्गुनमास कृत्य, रविसंक्रान्ति, पृथ्वी रजस्वला, नदी रजस्वला, मकरसंक्रान्तौ घृतकमलदानं, महा वैशाख योग, महाव्यतिपात योग, महा ज्येष्ठी योग, रोहिणी प्रतिपद्, महोदयामावास्या, अर्द्धोदयामावास्या, पापनाशिन्यैकादशी, गोविन्दद्वादशी, गङ्गायांवारुण्यादि योग, सूर्य्यचन्द्र-ग्रहणम् ।

इति श्रीकोत्सकुल .... कृष्णमिश्र कृते काल सर्वस्वे स्मृतिनिर्णयप्रकरणं समाप्तम् ।

वैष्णवप्रकरणम्

दीक्षादान, राम नवमी, पुष्पदोला विधि, गृहानयन, वैशाखमास कृत्य, वैशाखपूर्णिमा, ज्येष्ठमास कृत्य, आषाढमास कृत्य, आषाढ शुक्लद्वादश्यां क्षीराब्धिशयनोत्सव, श्रावणमास कृत्य, भाद्रमास कृत्य, ललिताजन्म, ज्येष्ठाष्टमी वा राधाष्टमी, आश्विनमासकृत्य; विजयादशमी कृत्य, कार्त्तिक कृत्य, भीष्मपञ्चक, दामोदर जन्म [गिरिगोवर्द्धन] कार्त्तिक कृष्णाष्टमी, कार्त्तिक कृष्ण चतुर्दशी, कार्त्तिकामावास्या कृत्य, शुक्लप्रतित्, वलिदैत्यपूजा, शुक्ल गोपाष्टमी, प्रवोधिनी कृत्य, भीष्मपञ्चक, मार्गशीर्ष कृत्य, माघमास कृत्य, वसन्त-

Digitized by PPRACHIN, SOA

पंचमी, भीष्माष्टमी, भैम्येकादशी, फाल्गुनमास कृत्य, फाल्गुन शुक्लाद्वादशी, फाल्गुन-पूर्णिमा, अधिमास कृत्य ।

Colophon—

ग्रन्थाःसन्ति पुरातना इव नवा यद्यप्यनेके स्मृतौ
प्रायस्ते तद्पीह संशयफला निर्णायका नित्यनः ।
ज्योतिःसाधन मौपपत्तिकवचः स्मार्त्ते तथा वैष्णवे
भो धीरा अधिकं क्वचिन्नच्च विनुत श्रीकालसर्वस्वतः ॥

Post colophon—रामचन्द्र रथेन लिखितमिदं पुस्तकम् ।

27

Dh 116

काल सर्वस्वम्

By

महामहोपध्याय कृष्ण मिश्र

Substance-Palm leaf, No of folia 135 (13.2"×1.3") Character—Oriya,Date of copy is not given, complete. Condition good, Find spot—Khalikota District— Ganjam.

Similar to No 21 noted above. No Colophon at the end.

28

Dh 48(B)

काल सर्वस्वम्

By

महामहोपध्याय कृष्ण मिश्र

Substance-palm leaf No. of folia 104 (14."×1.2") Character-Oriya, Date of copy in not given, incomplete. Condition good, Find spot- Raṇapur, District Puri.

Similar to No 21 noted above. No colophon at the end.

Digitized by PPRACHIN, SOA

29

Dh 155

कालसार:

By

गदाधर राजगुरु

Substance Palm leaf, No.of folia 208 (13·"×1·3") Character—Oriya, Date of copy is not given, complete, Condition good. Find spot-Khallikota, District Ganjam

Topics discussed and authorities quoted are not given as this book has been twice printed.

(a) Printed and published in Oriya characters in 1898 by the Rājāsāheb of Bamra. It was edited by late Madhusudana-Tarkavāchaspati.

(b) Printed and published in Devanagari characters by the Asiatic society of Bengal.

N. B. Our museum manuscript contains an addittional verse at the end of the text which is not found in the printed editions. This is quoted below as it has got historical importance. e. g.

श्री नीलाम्बरनाम राजगुरु राख्यातो हरेकृष्ण भू-
नाथ प्राप्त गजातपत्र तदभूद्यो यायजूक: सुधी: ।
श्रीमान् राजगुरु गदाधर सुधी स्तस्यात्मज: कौशिको
ग्रन्थं संशयनाशकं रचितवान् श्रीकालसाराभिधम् ।

Historical note—Gadādhara Rajaguru, a celebrael Smṛti writer of Orissa of the 18th century was the son of Nilāmbara Rājaguru. who was the preceptor of Rājā Harekṛshna Deva (1715-1718) of Puri. He is reputed to have written 18 works on Smṛti, each having suffix sāra of waich anly two namely Achārasāra and Kalasāra have so far been published.

Digitized by PPRACHIN, SOA

30

Dh. 44 **किशोर नित्यकर्मपद्धति**

Substance— Palm leaf, No of folia 120, Size (13.1"×1.2") Character— Oriya, Date of copy is not given. complete. Condition good. Find spot—Ranapur, District Puri.

Beginning:— श्री गणेशाय नमः, अविघ्नमस्तु

किशोर नित्यकर्मपद्धतिः लिख्यते ।

सन्ध्यातर्पणवैश्वदेव सहितं प्रातःक्रिया पूर्वकं
मुद्रालक्षण पञ्चदेव यजनैः शुद्ध्यान्वितं पंचधा ।
प्रोक्तं प्रागपि यादृशं च मुनिभिः तन्नित्यकर्माधुना
यूना मुत्कलभाषया प्रकटितं बोधाय संक्षेपतः ॥

End— इति श्री ब्रह्मवशिष्ठ सम्वादे त्यादिकल्पः ।

No Colophon at the end of the manuscript.

31

Jy 19.(A) **कुण्डलक्ष्म विवृतिः**

By

रामचन्द्र वाजपेयी

Substance-palm leaf. No. of folia 21. Size (12·6"×1·5".) Character Oriya, Date of copy is not given. Condition good. Incomplete. Find spot—Ranapur, Dt. Puri.

Beginning— ॐ गणेशाय नमः

सूनोः श्रीधरमालवस्य शिवदासाख्याद्गुरुख्यातितः
समाङ्ग्निन्निदा च यस्य जनकः श्री सूर्य्यदासोऽजनि ।
यन्मातुर्यशसा दिशोदश विशालाक्षावलक्षासृज-
त्येष स्वाहित कुण्डलक्ष्मविवृतिं रामो वसन् नैमिषे ॥

Digitized by PPRACHIN, SOA

Topics— आहवनीय कुण्डकृत्यं, दिक्सूत्र साधनं, मण्डपस्वरूपं, वेदीमानं, स्तम्भनिवेशनं, तोरण निरूपणं, मण्डपे कुण्डानां निवेशन फल कथनं, योनिकुण्डलक्षणं अर्द्धचन्द्र-कुण्ड लक्षणं, वृत्तकुण्ड लक्षणं, षडास्य कुण्ड लक्षणं, सप्तास्य कुण्डलक्षणं, अष्टास्य कुण्ड-लक्षणं, पद्मकुण्ड लक्षणं etc.

Authorities quoted—

शारदातिलकं, विश्वकर्मा, आदित्यपुराणं, छान्दोग्यपरिशिष्टः, अग्निरहस्यं, कात्यायनः, शूल्यं, सारसंग्रहः, स्कन्दपुराणं, कामिकः, श्रीधराचार्य्यः।

No colophon.

32

Dh. 55

कृत्य कौमुदी

By

वृहस्पति

Substance— Palm leaf, No. of folia 120 (16.4"×1.2") Character—Oriya. Date of copy 1724 A.D., complete. Condition good—Find—spot— Khallikota Dt. Ganjam

Beginning— श्री सरस्वत्यै नमः, अविघ्नमस्तु

श्रुति स्मृति पुराणोक्त कर्मौघं यस्य तृप्तये।
अनुतिष्ठन्ति विद्वांसः तस्मै श्रीपतये नमः।
समुद्गतावेत्र पयोधिजन्मनः स्मृतिव्रजेन्दोः सुकृताब्धिचन्द्रवनी
धिनोति सम्पत्ति कुमुद्वती सुहृत् सुधांचकोरान् ममकृत्य कौमुदी।

End— इति श्री वृहस्पतिकृतिविरचितायां कृत्यकौमुद्यां दान प्रकरणं समाप्तम्।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः।

Topics— अशोकाष्टमी, दमनक चतुर्दशी, मेषसंक्रान्ति, अक्षय तृतीया, व्यतीपातः, महावैशाखी, आरण्यकषष्ठी, दशहरा, पृथ्वीरजस्वला, देव शयन, श्री गुण्डिचा, गणेश-चतुर्थी, फणीपञ्चमी, आषाढशुक्ल एकादशी, श्रावण पौर्णमासी, रक्षापञ्चमी, कृष्ण-जयन्ती अष्टमी, सिद्धमार्कंडेय पूजा, भूपाल त्रयोदशी, सप्तपुरिकामावास्या, हरितालिका,

Digitized by PPRACHIN, SOA

चतुर्थी; ऋषि पञ्चमी शक्रोत्थापन, श्रावणद्वादशी, अनन्त चतुर्दशी, अगस्ति अर्घ्यविधि, महाष्टमी, दुर्गापूजा, कुष्मांडदशमी, कौमुदीपौर्णमासी, आकाशदीपदान, प्रदीपामावास्या, भीष्मपञ्चक, कार्तिकामावास्याकृत्य, देवोत्थापन एकादशी, महावर्त्ती, महाकार्त्तिकी, रोहिणी प्रतिपदा, जलजप, महोदधयमावास्या, दीपावली उत्सव, प्रावरण षष्ठी: पाषाण-चतुर्दशी, माघमास कृत्य, माघकृष्ण चतुर्दशी, अर्द्धोदय योग:, श्री पञ्चमी, माघसप्तमी, भैमीएकादशी, वन्ह्युत्सवपौर्णमासी, महामाघी, शिवरात्रि, पापनाशिनीएकादशी, गोविंद-द्वादशी, दोलयात्रा, नागपञ्चमी, भूतचतुर्दशी, भुजाष्टमी, दिवाकर सप्तमी, कामत्रयोदशी, विष्णुद्वादशी, प्रवेशिनी नक्तव्रतकालनिरूपणं, एकाहे अनेकश्राद्धानुष्ठान कालनिरूपणं, अविदित मृताह श्राद्धकाल निरूपणं, विघ्नित श्राद्धकाल निरूपणं, सपिण्डीकरणं, साम्वत्सरीक श्राद्धकाल निरूपणं, वृद्धिश्राद्धादिकाल निर्णयः, अमावास्यावृद्धा निर्णयः, पौर्णमासी निरूपणं, ग्रहण निरूपणं, सन्क्रान्ति निरूपणं, युगादि निरूपणं, अष्टका निरूपणं, अधिमास निरूपणं, देवशयन पार्श्वपरिवर्त्तनकालाः, व्रतादौ निषिद्धकालनिरूपणं, प्रायश्चितार्थं परिषद्युपस्थानं, सुवर्णदानं, द्वादशवार्षिक प्रायश्चित्तः, त्रिवार्षिकप्राजापत्यः, गोवधप्रायश्चित्तः, विषायदण्ड प्रायश्चित्तः, अस्पृश्यस्पर्श प्रायश्चित्तः, द्वारद्वारिक स्पर्शप्रायश्चित्तः, रजस्वलायां रजस्वलानन्तरस्पर्शप्रायश्चित्त, श्वाकाकस्पर्शप्रायश्चित्त, श्वादंष्ट्रप्रायश्चित्त, भक्षाभक्ष प्रायश्चित्त, श्राद्धभोजन प्रायश्चित्त, यज्ञोपवीत विना भोजनप्रायश्चित्त, नित्य अकृत्यकरण प्रायश्चित्तः, ग्रहपूजा निरूपणं, व्रत निरूपणं ।

Authorities quoted —

अङ्गीरा, अत्रि, आग्नेयपुराण, आदित्यपुराण, आपस्तम्ब, अश्वलायन, उद्दालक, उशना, ऋष्यश्रृङ्ग, कात्यायन, कालादर्श, कार्ष्णाजिनि, कुथुमि कूर्मपुराण, कृत्यकल्पतरु, गर्ग, गरुडपुराण, गालव, गृह्यपरिशिष्ट गोभिल, गौतम, चन्द्रकेतु, चरित, च्यवन, छन्दोग-परिशिष्ट, छागलेय, जाबालि, जीमूतवाहन, ज्योतिपराशरः, तत्त्वसार संहिता, दक्ष देवल, देवीपुराण, धौम्यपुराण, नरसिंह पुराण, नन्दी पुराण, नन्दीकेश्वर, नारद, पराशर, पद्मपुराण, पितामह, पुलस्त्य, पैठीनसी, प्रचेता, वशिष्ठ, वराह पुराण, वह्निपुराण, वायुपुराण, व्यास, बादरायण, विष्णु, विष्णुगुप्त, विष्णुपुराण विष्णुधर्मोत्तर, पुराण विष्णुरहस्य, विष्णु संहिता, विज्ञानेश्वर, विश्वामित्र, वैशम्पायन, भगवती पुराण, भविष्य पुराण, भविष्योत्तरपुरा , भारद्वाज, भागवत पुराण, भारत, मनु, मरीचि, महाभारत,

Digitized by PPRACHIN, SOA

मत्स्य पुराण, मार्कण्डेय पुराण, मृत्युञ्जय पुराण, मोहन चूडोत्तर, यवन, यम, यजुर्विधान, याज्ञवल्क्य, योगीयाज्ञवल्क्य, राजमार्त्तण्ड, रामायण, लक्ष्मीधर, लघुआपस्तम्ब, लौगाक्षि, लिङ्ग पुराण, ब्रह्मवैवर्त्त, ब्रह्मपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, विरञ्चि, वृद्धगार्ग्य, बौधायन, वृद्धशातातप, शङ्करगीता, शङ्ख, शातातप, शतपथस्मृति, शतानन्द, शब्दसमुच्चय, शिवपुराण, शुद्धिदीपिका, सनत्कुमार, सम्वर्त्तः, सुमन्तु, स्कन्दपुराण, स्मृतिमीमांसा, स्मृतिसमुच्चय, स्मृतिसार, स्कन्दविजय, हरिवंश, हारीत।

Colophon— विन्दुलव विसर्ग शुद्ध पंक्ति पदमेदृङ्गणम् ?
हस्तवेग जडबुद्धिपूर्वकं क्षन्तुमेतदर्हन्तु सज्जनाः !

Post colophon— श्री गोपीनाथदेवनृपतेरष्टमांके भाद्रपदे मासि कृष्णपञ्चम्यां बुधवासरे अनिरुद्ध मिश्रेण लिखितमिदं पुस्तकम्। The date of copy according is to Christian era was 26th, August. 1724. A.D.

33

Dh 59(B)

कृत्य कौमुदी

By बृहस्पति

Substance-Palm leaf, No. of folia 39 (13.2"×1.2") Character—Oriya, Date of copy is not given, Incomplete. Condition good, wormeaten, Brought from Baripada museum in the District of Mayurbhanja.

Similar to No 32 above. No Colophon at the end.

34

Dh 162

कृत्य कौमुदी

By बृहस्पति

Substance-palm leaf No. of folia 147 (15.3"×1.3") Character-Oriya, Date of copy 1830 A.D. Complete. Condition good, Find-spot- Khalikota, District, Ganjam

Similar to No 32 noted above.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Colophon— करवाण नगइचन्द्र शालिरदे विशेषत:
सिंहराशौ स्थिते सूर्य्ये लेखनीय' समग्रत: ।।
कौमुद्याख्यमिदं ग्रन्थ' दशह्निमास कर्मण: ।।

The date Kara (2) Bāṇa (5) Naga (7) Chandra (1) or 1752 year of the Saka era is equivalent to 1830 A.D. On folia 151 to 155 are written three chapters of 'Sāradā tilaka'

85

Dh. 63.

कृत्यसार मञ्जरी

By कृष्णप्रियादास

Substance- Palm leaf, No of folia 115, Size (16.5"×1.3") Character- Oriya, Complete, condition good. Date of copy is not given. Brougat from the Baripada museum in the District of Mayurbhanja.

कण्ठधारण माला निर्णयो नाम	प्रथम पटल: ।
अक्षमाला निर्णयो नाम	द्वितीय पटल: ।
जपमाला निर्णयो नाम	तृतीय पटल: ।
तुलसीपत्र तन्मालाधारण निर्णयो नाम	चतुर्थ पटल: ।
पुण्ड्रादि तिलक निर्णयो नाम	पञ्चम पटल: ।
तिलक सम्पादन द्रव्य निर्णयो नाम	षष्ठ पटल: ।
भगवन्मुद्राधृति निर्णयो नाम	सप्तम पटल: ।
व्रजधूल्यादि भक्षण निर्णयो नाम	अष्टम पटल: ।
भक्त प्राधान्य निर्णयो नाम	नवम पटल: ।
कृष्णभाव पूजा निर्णयो नाम	दशम पटल: ।
मन्त्रोपासना सेवा निर्णयो नाम	एकादश पटल: ।
स्वरसिक सेवा निर्णयो नाम	द्वादश पटल: ।

The 'stotras' and pūjas of नन्दी, शिव, राम, भुवनेश्वरी, सिद्धविनायक, नारायण हनुमन्, and चण्डी, are written on the last few folia of the manuscript.

No colophon at the end.

Digitized by PPRACHIN, SOA

36

Dh 104 **कृष्णप्रेम रसचन्द्र तत्त्व भञ्ज लहरी**

Substance— Palm leaf, No of folia 97 (12.1"×1.5") Character— Oriya. Date of copy is 1862 A.D. Complete, condition good. Find spot— Dharādharapur P. S. Jagatsimhapur, Dist—Cuttack, First folio is broken.

Topics— चैतन्य सार्वभौम संवादे ब्रह्मतात्पर्यकथने राधातत्त्वकथनेप्रथम प्रकरण:; अशेष महाभाव कथने गुरु शिष्य देवता लक्षणकथने प्रतिष्ठा कथने द्वितीय: प्रकरण:, वैष्णव दीक्षालक्षण कथने गोकुललीलाकथने राधाकृष्ण प्रस्ताव कथने तृतीय प्रकरण:; राजसी तामसी सात्त्विक बाल्य पौगण्ड यौवन कथने चतुर्थ प्रकरण:; ब्रह्मण्डले राधा-व्यवहार कथने क्षेत्र माहात्म्यकथने पञ्चम प्रकरण: सेवा रहस्य कथने षष्ठ: प्रकरण: अवतार अवतारी अनवतारी गौरलीला कथने सप्तम प्रकरण:; चैतन्य स्तुति वर्णने दशाक्षर कामबीज कथने अष्टम प्रकरण; श्रीकृष्णनाम पञ्चात्मकभाव कथने मन्त्रराजभेद कथने हरेर्नाम कृष्णमन्त्र आस्वादन कथने नवम प्रकरण:; गोपीगोपालरञ्जन मन्त्रराज महामन्त्र स्त्रीलिङ्ग पुंलिङ्ग वर्णाक्षर वर्णभेद कथने दशम प्रकरण:; श्रीपुरुषोत्तम कथने क्षेत्रापराध कथने गुरुसिद्ध लक्षण कथने एकादश प्रकरण:; भूतशुद्धिन्यास, षडङ्गन्यास, मन्त्रन्यास, प्रत्यक्षरन्यास कथने द्वादश: प्रकरण; पञ्चात्मक भेद कथने चलप्रचलन कथने त्रयोदश प्रकरण:; नित्य गोपीध्यान कथने मन्त्रराज कथने चतुर्दश प्रकरण:; चतुर्दशलोक कथने त्रिन्दुमध्ये विहारतत्त्व कथने पंचदश प्रकरण:; निगमतत्त्व वर्णने, ग्रन्थभेदानु कथने नाम-सूत्र तिलकव्यवहार कथने षोडश प्रकरण:; पंचात्मकनानाप्रकारकथने मन्त्रराजस्वरूप-कथने सप्तदश: प्रकरण:; अष्टशक्तिरूप वर्णने मन्त्रराजचतुराङ्ग कथने मन्त्रराजोद्धार कथने: प्रशंसातत्त्व कथने अष्टादश: प्रकरण:; मन्त्रराज महामन्त्र एकतत्त्व कथने ऊनविंश प्रकरण:; श्री वृन्दावन वर्णने दूतीकृष्णरस युगभाव वर्णने विंशति प्रकरण; राधाभिसार वर्णने रासक्रीडा नानातत्त्व विचार रहस्य कथने एकविंश प्रकरण:; तत्त्व प्रश्नासु मन्त्रराज तत्त्व कथने भेदानुभेद द्वाविंश प्रकरणम् ।

Colophon— दिव्यसिंह देवङ्क ५ अङ्क मिथुन ? दिन शनिवारे सम्पूर्ण होइला ए पोस्तेक ए पोस्तेक किशोर नगरहंसी शामदासङ्कर । लेखनकार गुडिआ जगन्नाथ दास

Digitized by PPRACHIN, SOA

37

Dh. 149

केदारकल्प

according to शिवाद्पुराण ?

Substance—Palm leaf. No. of folia 116 (11.1"×1.4") Character—Oriya. Date of copy is not given. Condition— bad. and worm eaten, Find spot—Bhubaneswar, District Puri

Topics— शम्भु कार्त्तिकेय सम्वादे स्वर्गगमन विधि नाम प्रथम पटलः। स्वर्गगमनविधि नाम द्वितीयपटलः। स्वर्गगमनविधि रघोरमन्त्र प्रमाणकथने तृतीयपटल। स्वर्गगमनविधि पुरीगतागते चतुर्थपटलः। स्वर्गगमनविधि राजपुरीनाम षष्ठपटलः। स्वर्गगमन विधि सुतपाल पुरीनाम सप्तम पटलः। क्षीरोदसागर पुरीनाम अष्टम पटलः। स्वर्गगमनविधि नाम नवम पटलः। स्वर्गगमन रुद्रदर्शनविधि नाम दशम पटलः। इन्द्रदर्शनो नाम एकादश पटलः। केदारकल्पे स्वर्गगमनविधि द्वादश पटलः। ऋषिपुरी विसर्जनं नाम त्रयोदश पटलः। ऋषिपुरी चोदूर्ध्वदर्शनं नाम चतुर्दश पटलः। ऋषिपुरी सर्जनो नाम पंचदशपटलः ऋषिपुरी विसर्जनं घोषवती पुरीनाम षोडश पटलः। कैलासगिरि वर्णनं नाम सप्तदश पटलः। रुद्रपुरी वर्णनं नाम अष्टादश पटलः। स्वर्गमध्य प्राप्तो नाम ऊनविंश पटलः। शिवपुर गमनं नाम विंशः पटलः। स्वर्गगमनविधिः वैकुण्ठ वरदानसाधकानां सायुज्य मुक्तिर्नाम एकविंश पटलः।

No colophon at the end.

38

Dh. 36

गणेशाचार चन्द्रिका

By दामोदर

Substance—Palm leaf, No. of folia 124 (13.1"×1.2") Character—Oriya. Date of copy is not given, complete, Condition—good, Find spot, Ranapur Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नमः

गुरुं सर्वेश्वरं मूर्ध्ना प्रणिपत्य प्रकाश्यते
दामोदरेण कृतिना गणेशाचार चन्द्रिका ॥

Enb — इति श्री गणेशाचार चन्द्रिकायां सन्ध्याविधिः समाप्तः।

No Colophon at the end of the manuscript.

Digitized by PPRACHIN, SOA

39

Dh 170 **गणेश पूजाविधिः**

Substance— Palm leaf. No of folia 37 (16.3" × 1.2") Character—Oriya. Date of copy is not given, Incomplete, Condition—good, Find spot—village Charampa. P. S. Bhadraka, Dist- Balasore.

Topics— It describes the mode of worship of god Gaṇeśa.

No colophon at tht end.

40

Dh. 109 **ग्रहयज्ञ विधिः**

Substance— Palm leaf, No of folia 88, Size (12.3" × 1.2") Character— Oriya, Date of copy is not given, Incomplete. Condition good. Find spot—Khallikota, Dt. Ganjam

Topic— It describes the mode of sacrificial rites of the nine planets.

41

Dh 118 **ग्रहयज्ञ विधिः**

According to याज्ञवल्क्य

Substance-palm leaf. No. of folia 69. Size (16.1" × 1.2".) Character Oriya, Date of copy is not given. Incomplete. Condition good. Find spot—Dharādharapur, P.S. Jagatsingpur, District Cuttack.

Similar to No 40 stated above. No colophon at the end.

Digitized by PPRACHIN, SOA

42

Dh. 160

ग्रहयज्ञ पद्धतिः

According to याज्ञवल्क्य

Substance— Palm leaf, No. of folia 141 (14.3″×1.2″) Character— Oriya. Date of copy is 1295 sal or 1888 A.D., complete. Condition good. Find spot— Dharādharpur, P.S. Jagatsinhapur, Dist— Cuttack.

Beginning— सरस्वतीं नमस्कृत्य विघ्नेशं च नवग्रहान्
नवग्रहमखं वक्ष्ये याज्ञवल्क्यादि सम्मतम् ॥

End— इति नवग्रहपूजा यज्ञपद्धतिः समाप्ता ।

Colophon— दिव्यसिंहदेवङ्क ३५ अङ्क सन १२९५ साल श्रावणकृष्ण सप्तमी चन्द्रवासरे ग्रहयज्ञ समाप्त हेला ।

Post—Colophon— पुस्तक तिहिडाशासन दामोदर मिश्रङ्कर ।

43

Dh 171

ग्रहयज्ञः

According to याज्ञवल्क्य

Substance-Palm leaf, No.of folia 72 (12·1″×1·3″) Character— Oriya, Date of copy is not given, Incomplete, Condition good. Find spot-Raṇapur, District Puri.

No colophon at the end.

44

Dh 172

ग्रहयज्ञ होमविधिः

According to याज्ञवल्क्य

Substance—Palm leaf. No of folia 131 (12.4″×1.2″) Character—

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Date of copy is not given. Complete, Condition—good. Find spot—Begunia area, Puri Dist.

At the end of this work is written वैतरणीविधि: covering 19 folia, attached to this manuscript.

No colophon at the end.

45

Dh. 31

गायत्री जाप पद्धति:

Substnce— Palm leaf, No of folia 107 (6.3" × 1") Character—Oriya, Date of copy is not given, Complete, Condition—good, Find spot— Bhubaneswar, Dist- Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नम:

मन्वादिमतमालोक्य विप्राणां हितकाम्यया ।
रचिता नन्दनन्देन गायत्रीजपपद्धति: ॥

End— इति गायत्रीहृदयं समाप्तम् ।
No colophon.

46

Dh. 18

गृह प्रतिमासंस्कार पद्धति:

Substance— Palm leaf No of folia 187 Size (17" × 1.5") Character—Oriya, Date of copy is not given. Complete, Condition—bad and worm-eaten. Find spot not known.

Topics— वैष्णवाग्नि संस्कारविधि:, पञ्चगव्यविधि:, देवप्रतिष्ठाविधि:, सहस्र-कुम्भाभिषेक पद्धति:, हयशीर्षोक्तदेवताप्रतिष्ठा, संक्रान्ति निर्णय:, विष्णुपञ्जरस्तोत्रं, नानारोगे नानाविधशान्ति:, प्रदोषकाले शिवदर्शनफलम्, नवमीनिर्णये रामनवमीव्यवस्था, अमावास्या श्राद्धनिर्णय:, स्वनक्षत्र पूजा, स्त्रीणां प्रथमरजो निरूपणं, नानाविधप्रायश्चित्त-विधि:, मागुणिमिश्र विरचित गृहप्रतिष्ठाविधि: । e.tc.

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

47

Dh. 79

गोपालार्च्चनविधिः
OR
नीलाद्रिमहोदयार्च्चन पूजाविधिः

By महाराजा श्री पुरुषोत्तमदेव

Substance— Palm leaf, No of folia 72 (12″×1.3″) Character—Oriya, Date of copy is not given, Complete, Condition good. Find spot Bolangir. It contains a chapter about गोवध प्रायश्चित्त at the end.

Beginning— ॐ श्री गणेशाय नमः

श्री नीलाद्रिमहोदयार्च्चन पूजाविधि लिख्यते ।

Topics— आसनशुद्धिः, सूर्य्यार्घ्यविधिः, द्वारपालपूजा, पीठपूजा, आसनशुद्धिः, करशुद्धिः, भूतशुद्धिः, प्रणवमातृकान्यासः, तत्वन्यासः, प्राणप्रतिष्ठा, कलान्यासः, केशवादिन्यासः, सृष्टिन्यासः, मूर्त्तिपञ्जरन्यासः, विभूतिपञ्जरन्यासः, षोडशोपचारपूजादि ।

End— इति श्री आगमकल्पतरौ वैष्णवस्कन्दे गोपालशाखायां मन्त्रपल्लवे महाराज-पुरुषोत्तमदेव विरचिते गोपालार्च्चनविधिः समाप्तः ।

No colophon at the end.

48

Dh 69(D)

गोपालार्च्चन विधिः
OR
नीलाद्रि महोदय पूजाविधिः

By महाराजा पुरुषोत्तम देव

Substance—Palm leaf, No of folia 36 to 77 (13.5″×1.2″) Character— Oriya, Date of copy is not given, Complete, Condition good, Find spot Rajapur area of the Puri Dist.

Similar to No 47 noted above

No colophon at the end.

Digitized by PPRACHIN, SOA

49

Dh 173

गोपालार्च्चनविधिः

By महाराजा पुरुषोत्तमदेव

Substance-palm leaf, No. of folia 145 to 195 (13.2"×1.2") Character—Oriya, Date of copy is not given, Complete. Condition good, Find spot- Rajapur, District Puri.

Similar to No 47 noted above.

50

S.ms 9

गोपाल पूजापद्धतिः

By महाराजा पुरुषोत्तमदेव

Substance— Paper No of Pages 37 (13.7"×8.5") 19 lines on each page. Character—Oriya, Complete, Condition good.

Similar to No 41 noted above.

51

Dh. 179

गोपालार्च्चन पद्धतिः

By वासुदेव

Substance— Palm leaf, No of folia 73 (9"×1.3") Character—Oriya. Date of copy is not given. Incomplete.Condition good, Find spot—Sakhigopal area of the Puri District

Beginning— वागीशो यस्य वदने लक्ष्मीर्यस्य च वक्षसि।
यस्यास्ते हृदये सम्वित् तं नृसिंहमहं भजे ॥
गोपालबालकं नत्वा विविच्य वैष्णवोत्तमम्
वासुदेवेन क्रियते गोपालार्च्चन पद्धतिः ॥

Digitized by PPRACHIN, SOA

End — इति गोपालार्चन पद्धतिः समाप्ता ।

Topics— सामान्यार्घ्य संस्कारः, तर्पणं, आसनशुद्धिः, देहशुद्धिः, स्नानविधिः, सूर्य्यपूजा, शङ्खसंस्कारः, सूर्य्यार्घ्यविधिः, द्वारपालपूजा, प्राणन्यासः, मातृकान्यासः, अन्तर्मातृकान्यासः, वहिर्मातृकान्यासः, केशवादिन्यासः, उपचारपूजा, होमादिकर्म, दक्षिणादानम् ।

53

Dh 93. **चातुर्मास्य माहात्म्यम्**

Substance- Palm leaf, No of folia 99, Size (10.4"×1.2") Character- Oriya, Date of copy is not given. Incomplete, condition good. Find spot— Khalikota, District Ganjam, It ends apter the 26th chapter.

इति श्री महाभारते शातसाहास संहितायां चातुर्मास्यमाहात्म्ये गीतासारः समाप्तः ।

इति श्री वराहपुराणे चातुर्मास्यमाहात्म्ये धरणीवराहसम्वादे प्रथमः अध्यायः × × धरणीवराह सम्वादे .... षड् विंशोऽध्यायः ।

No colophon at the end.

52

Dh. 111 **चतुर्वर्गचिन्तामणिः (काल निर्णयः)**

By हेमाद्रि

Substance—Palm leaf, No. of folia 164 (16.4"×1.1") Character – Oriya. Date of copy is not given, complete, Condition—Partially wormeaten. Find spot, Khalikota, Dist Ganjam

After मङ्गलाचरण and description of the achievements of his family the author speaks about himself thus.

Digitized by PPRACHIN, SOA

लीलावर्तीरमणरोहिणी वासुदेवः
तस्माद्द्विजाति रुद्गात् खलु? कामदेवः ।
हेमाद्रिरित्यखिल भूतलगीतकीर्त्ति
. स्तस्याथ सुनुरजनिष्ट वरिष्ठकीर्त्तिः ।

End—इति श्री महाराजाधिराज हेमाद्रि विरचिते चतुर्वर्गचिन्तामणौ परिशेष खण्डे काल-निर्णयः सम्पूर्णः । समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

No Colophon at the end

54

Bengali Sanskrit
mss No 10

तिथि तत्त्वम्

By रघुनन्दन

Substance—Country made paper. No of folia 145 Size(14"×3.2") Character—Bengali, condition not so good. Complete, Date of copy is not given. Find spot— Kujanga area, Dist—Cuttack,

End— इति वन्द्य......हरिहर भट्टाचार्य्यात्मज श्रीरघुनन्दनभट्टाचार्य्येण विरचिते स्मृतितत्त्वे तिथितत्त्वं समाप्तम् । समाप्तश्चायं ग्रन्थः ।

No Colophon.

55

Dh. 156

दशकर्म पद्धतिः

Substance—Palm leaf. No. of folia 118 (14.2"×1.2") Character—Oriya. Date of copy is not given. Condition— good. Find spot-Bhubaneswar, District Puri

Topics— गर्भाधानं, पुंसवनं, जातकर्म, बहिर्निष्क्रामणं, अन्नप्राशनं, चूडाकरणं, कर्णभेदनं, विद्यारम्भं, उपनयनं, समावर्त्तनम् ।

On the last few folia is described विवाहकर्म. No Colophon at the end.

Digitized by PPRACHIN, SOA

56

Dh 137 (B) दर्शपौर्णमासेष्टि पद्धतिः

By अग्निचित् शम्भुकर वाजपेयी

Substance— Palm leaf, No of folia 28 (10"×1.1") Character-Oriya. Date of copy is not given, Complete, Condition wormeaten at both the ends. Find spot- Khalikota. Dist Ganjam.

Topics— अन्वारम्भणाविधिः, अथ नवव्रीह्याग्रयणम्, अथैतस्वाहोत् विशेष, पार्वणश्राद्धकरणं, दर्शपौर्णमासेष्टिः।

Beginning—अथान्वारम्भणा। तत्र मातृश्राद्धे देशकाल वाक्यं कृत्वा दर्शपौर्णमास... कर्त्तव्यतयाऽन्वारम्भणा कर्म क्रियते यदातदेत्यादि··· ...

End— तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिविव चक्षुराततम्।

इत्यग्निचिन्मिश्र शम्भुकरकृता दर्शपौर्णमासेष्टिपद्धतिः समाप्ता।

No Colophon at the end.

57

Dh 46 दाक्षिणामूर्त्ति पूजाविधिः

Substance—Palm leaf, No of folia 110 (8 5"×1.5") Character-Oriya. Date of copy is not given, Complete, Condition good. Find-spot— Parlakhemidi, Dist Ganjam.

Topics— दक्षिणामूर्त्ति पञ्जरं, दक्षिणामूर्त्ति मन्त्रः, दः मू कवचं, दः मू शतनाम, दः मूः गायत्री, दः मूः मन्त्रराजः, दः मूः यन्त्रं, दः मूः यन्त्रं, दः मूः पूजा, पुरश्चरण, द. मूः काम्य कर्मविधि, दः मूः त्रैलोक्य विजय कवचं, दः मूः स्तवराज स्तोत्र, दः मूः सहस्रनाम स्तोत्रं, दः मूः मन्त्रन्यास, दः मूर्त्तेः ध्यानं, हनुमदापदुद्धारस्तोत्रम्, नित्यजपविधिः, हनुमद्यन्त्रप्रतिष्ठाविधिः।

No colophon at the end

Digitized by PPRACHIN, SOA

58

Db 122

दानवाक्य विधिः

According to नारायण भट्टाचार्य पद्धतिः

Substance— Palm leaf. No of folia 107 (14.2''×1.5'') Character— Oriya, Date of copy is San 1289 sala or about 1882 A.D, Complete, Condition good, Find spot- Dharādharpur P.S. Jagatsinhapur, Dist- Cuttack.

Topics— मृताहपञ्चकदानं, प्रथमदिन कृत्य'. द्वितीयदिन कृत्य'; तृतीयदिन कृत्यं, चतुर्थ दिन कृत्य', पञ्चमदिन कृत्य', षष्ठदिनकृत्य',सप्तमदिन कृत्यम, अष्टमदिनकृत्यं, नवम-दिन कृत्यं, दशमदिन कृत्यम, एकादशदिन कृत्य', द्वादशदिन कृत्यम ।

Colophon— समस्त दिव्यसिंह देवङ्क २७अङ्क सन १२८९ साल पुष शुक्लदशमी शुक्र वार वेल प्रहर समये संपूर्ण । तिहिडाशासन दामोदर मिश्रङ्कर ।

59

Dh.2-(B)

दायभागतत्त्वम

By रघुनन्दन

Substance— Palm leaf. No of folia 38, (16.4''×1.2'') Character— Oriya, Date of copy is not given. Incomplete. Condition good. Find spot—Puri town.

Beginning— ॐ लम्बोदराय नमः ।

प्रणम्य सच्चिदानन्दं वासुदेवं जगत्पतिम्।
दायभागस्मृतेस्तत्त्वं वक्ति श्रीरघुनन्दनः ॥

No colophon

Digitized by PPRACHIN, SOA

60

Dh 52 (c)

दुर्गोत्सव चन्द्रिका

By रामचन्द्र गजपति (1568–1606 A.D.)

Substance-palm leaf. No. of folia 15. Size (14·1″×1·3″.) Character Oriya, Date of copy is not given. Incomplete. Condition good. Find spot—Bhubaneswar District Puri.

No Colophon.

61

Dh.174

दुर्गोत्सव चन्द्रिका

By रामचन्द्र गजपति

Substance— Palm leaf, folia 23 to 71 (14.2″×1.2″) Character—Oriya, Date of copy is not given, Complete, Condition good. Find-spot— Ranapur area, Dist Puri. 1-22 folia are lost.

End— यावज्ज्यावन्धभूयं विदधति मधुरा: कामुकं शम्बरारे-
यावत्तद्वैरिकण्ठे स भवतु भगवान् भूषणं पन्नगेशः ।
यावत्तल्पशार्या विहरति रमया स्वैरमायान्तुगूढ-
स्तावच्छ्रीरामचन्द्रक्षितिपति रचिता निर्मितिः प्रीतिदास्ताम् ॥

इति श्री रामचन्द्र गजपति विरचिता दुर्गोत्सवचन्द्रिका सम्पूर्णा ।
No colophon

62

D.T. 16

दुर्गोत्सव चान्द्रिका

By रामचन्द्र गजपति

Substance—Palm leaf, folia 113 (12.1″×1.6″) Character—

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya. Date of copy is not given. Complete, Condition not good, Find spot Khalikota, Dt. Ganjam

Topics — दिवसविधिः, दारुदेवी विधानं, दुर्गामहास्नानं, अधिकारिनिर्णयः, दुर्गापूजाविधिः, उत्थानपूजा, अथ षोडशोपचारपूजा, वरुणपूजा, वनदुर्गापूजा, जपविधिः, शस्त्रादि पूजा, रथ लक्षणं, दुर्गारथयात्रा, अथ गजषष्ठी विधिः होमविधिः, तर्पणविधिः ।

Beginning हरये नमः, श्री गणेशाय नमः, श्री दुर्गायै नमः ।

अथ भाद्रसिताष्टमी निशायां
शयनारम्भमहोत्सवो भवान्याः ।
अतिसुन्दर-मन्दिरान्तराले
ललितोत्तानवितानवन्धुरे ।

End— इति श्री रामचन्द्रदेव विरचिता दुर्गोत्सवचन्द्रिका संपूर्णा ।

Colophon — उद्गीव सततः विभावसुरसौ भास्वान्भृशं लीयते ।
नित्यं वारिधिवारि विन्द्रतियशःख्यातैव सोत्कम्पिता ।
श्रीराम क्षितिपप्रताप महसि प्रत्यर्थि सीमन्तिनी
निश्वासे .... not visible.
समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

63

DT.22

दुर्गोत्सव चान्द्रिका

By रामचन्द्र गजपति

Substance— Palm leaf, folia 115 (17.5" × 1.5") Character— Oriya, Date of copy is 1860 A.D. Complete, Condition—warm eaten Find spot— Baripada Museum, Dist- Mayurabhanja.

This manusript contains an additional verse at the end, from which it is krown that Sri Vardhan or Vardhamāna Mahapātra

Digitized by PPRACHIN, SOA

son of Rajaguru Kavi Dindima Jivadevacharya was there author of Durgotsava Chandrikā which was compiled at the order of the King, Gajapati Rama chandra Deva I, in whose name it was dedicated.

Verse—

श्रीजीवकविडिण्डिमो नृपगुरुः षड्दर्शनीदेशिकः
तस्यायं तनयो नयोत्तमधनः श्रीवर्द्धनस्तादृशः ।
सोऽयं भूपुरुहूत राम नृपतेरादेशत शैलजा-
पूजाकर्मकृते सतामभिमतां कांचित् कृतिं निर्ममे ॥

Colophon—श्रीमत् यदुनाथभञ्ज नाम नृपतेः एकचत्वारिंशाङ्के तुलेमासि सितेपक्षे त्रिविंश दिवसे दुर्गोत्सवचन्द्रिका समाप्ता ।

No Post colophon

64

Dh.175

दुर्गोत्सव पूजा

Substance— Palm leaf No of folia 126 Size (7.5"×1.2") Character—Oriya, Date of copy is not given. Complete, Condition—good Find spot—Lalitapātapur P. S. Khurda, Dist· Puri

No colophon.

65

Dh. 124

दुर्बल पद्धति

Substance— Palm leaf, No. of folia 83 (14."×1.2") Character—Oriya. Date of copy is given at the end, complete. Condition—good. Find spot— Dharādharpur, P.S. Jagatsinhapur, Dist—Cuttack.

Topics— वालुकाशय्याविधिः, पूरकपिण्ड विधिः, सञ्चयन विधिः, एकोद्दिष्ट-श्राद्धविधिः, दशाहविधिः, एकादशाह विधिः, शालग्रामदानविधिः, भूमिदान विधिः, तिलकाञ्चन दानविधिः, दशदान विधिः, विसर्जन विधिः, मासिकश्राद्ध विधिः,

Digitized by PPRACHIN, SOA

सपिण्डीकरण, वृषोत्सर्ग विधि, (According to दक्ष) पुष्करशान्ति विधि:, (According to वराह पुराण) अग्निप्रवेश विधि, दाहकर्म, गर्भिणीदाहविधि:, पर्णदाहविधि, etc.

Colophon—

अष्टादशाङ्के वीरकेशरिवर्मण:।
मार्गशीर्ष मासि लिखितं सदानन्द शर्मणा ॥

66

Dh. 176

देवी पूजा

Substance—palmleaf, No. of folia 23 (Size 12.5"×1.5") Character Oriya, Date of copy is not given. Incomplete, condition—not good. Find spot—Ranapur, Dist. Puri.

No colophon.

67

Dh. 71

देवीमाहात्म्य, देवीपूजा

Substance—Palm leaf. No. of folia 56 (9.5"×1.2") Character—Oriya. Date of copy is not given. Complete, Condition—not good. Find spot-Ranapur area, District, Puri.

It contains also स्तोत्र of चण्डिका and कवच of चण्डिका etc.

No colophon

68

S. Ms. 23.

धर्मरत्न स्मृति:

By जीमूतवाहन:

Substance- paper. No. of folia 105, Size (13.7"×1.6") Character Oriya, Date of copy is not given. Incomplete, condi-

Digitized by PPRACHIN, SOA

tion good. It is a commentary of धर्मरत्नस्मृति by जीमूतवाहन written in Oriya prose with additions and alterations of the original text at places. Name of the commentator can not be traced as it is incomplete towards the end.

Beginning— श्री गोविन्दाय नमः

प्रणम्य गोपाल पदारविन्दं
योगीन्द्रहृत् कैरवहासचन्द्रम् ।
ब्रह्मेश नागेन्द्र सुरेन्द्रवन्द्यं
दीनार्त्तशैलालय कृत्सुरेन्द्रम् ॥

भाषासु सर्वसूत्रेण
व्यवस्थायुक्तिमौक्तिकैः ।
मुनिना ग्रथिता माला
कृता सर्वार्थसिद्धये ॥

शास्त्राभ्यास परिश्रमार्थसमये चास्माकमेषां सदा ।
बालानां गलभूषणं खलु नृणां शूलं तथा वक्षसि ॥
दायादार्थविवाद संशयतमश्चेदर्कवद् भूतले ।
भूयादङ्गकलिङ्गवङ्गप्रभृतौ राज्ञां विचारोद्यमे ॥

Authorities quoted—

स्मृतिसंग्रहः, नारदः, मनुः, गौतमः, वृहस्पतिः, कात्यायनः, धौम्यः, पराशरः, भरद्वाजः, याज्ञवल्क्यः, व्यासः, देवलः, प्रजापतिः, बौधायनः, शङ्खः, विष्णुः, भृगुः, हारीतः, पैठीनसिः, आपस्तम्बः, वशिष्ठः, सुश्रुतः, निबन्धसंग्रहः, निबन्धरत्नाकरः, वाग्भट्टः, शातातपः, शौनकः, लौगाक्षिः, मार्कण्डेयः, स्कन्दपुराणं, भविष्यपुराणं, यमः, दक्षः, शौनकः, विश्वरूपसमुच्चयः, कार्ष्णाजिनिः, ब्रह्मपुराणं, मरीचिः, etc.

No Colophon.

69

Dh. 42

नटकूट यन्त्रम्

By किशोरदास

Substance—Palm leaf, No. of folia 54 (11."×1.1") Character—

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya. Date of copy is Sana 1293 sāla or 1886 A.D. Incomplete, Condition—good. Find spot, not known.

It also contains an Oriya kāvya named Sādhaka Darpaṇa, by Pitāmbara Dāsa, on folia 55 to 99.

No colophon.

70

Dh. 65 **नवग्रहपूजा होमादयः**

Substance—Palm leaf, No of folia 75 (15.1" × 1.5") Character—Oriya. Date of copy is not given. Incomplete. Condition worm-eaten. Find spot—Baripada Museum. District Mayurabhanja.

No Colophon.

71

Dh 87 **नवग्रह यज्ञः**

Substance-palm leaf, No. of folia 107 (1?.6" × 1.2") Character—Oriya, Date of copy is not given, Complete, Condition good, Find-spot- Kapileśwar P.S, Bhubaneswar, District Puri.

Topics— भूमिशोधनं; धरित्रीपूजा, भूमिपरीक्षा, नागलक्षणं, मण्डपविधिः, चातुर्वर्ण्य कुण्डलक्षणम्, अग्निमन्तजिह्वा, ग्रहस्य प्रतिमाप्रमाणम्, ग्रहस्य अवतारणा, ग्रहस्याधिदेवतं, सप्तमृत्तिकानिर्णयः, पञ्चदेवतालक्षणम्, आचार्यलक्षणं, वद्री दुर्वादि लक्षणं, वरुणपूजा, मातृकापूजा, नव हपूजा, ग्रहाणामधिदेवतपूजा, ग्रहाणां प्रत्यधिदेवत-पूजा, ग्रहाणां षोडशोपचारपूजा।

No Colophon

72

Dh 67 **नानाविध व्रतम्**

Substance—Palm leaf, folia 113 (12.2" × 1.2") Character-

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya. Date of copy is not given, Complete. Condition good. Find-spot— Ranapur, Dt. Puri.

It contains description of the following vratas—

सिद्धविनायकव्रत, अनन्तव्रत, तिज्रव्रत, नागवल्लिव्रत, गुरुपञ्चमी व्रत, सुदशाव्रत, लक्ष्मीनारायण व्रत, मङ्गलसंक्रान्तिव्रत, दुर्गाव्रत, धान्यमाणिक्याव्रत, सावित्रीव्रत, सोमनाथव्रत, रविनारायण व्रत, अश्वत्थव्रत, शिवरात्रिव्रत ।

No Colophon.

73

Dh 51

नित्याचार पद्धति:

Prescribed for the followers of Sri Chaitanya.

Substance— Palm leaf, No of folia 263 (5.6"×1.1") Character-Oriya. Date of copy is not given, Incomplete, Condition—good Find spot- Ranapur, Dist Puri.

Topics— स्मरणक्रम, राधातत्त्वनिरूपण, गुणमञ्जरी, शिलामञ्जरी, ऋतुविहार:, सखी निर्णय:, चैतन्यगण दीपिका, चैतन्यगुणोद्देश्य दीपिका ।

No colophon.

74

Dh. 177 (A)

नित्याचार पद्धति:
OR
नित्याचार क्रम सूचिका

By कृष्णदास

Substance— Palm leaf, Date of copy is 1744.AD. Character—Oriya, No of folia 100 (12.5"×1.5") Complete, Condition good. Find spot Khalikota, Dt. Ganjam.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Beginning— श्री गुरवे नमः

नारायणं प्रणम्यादौ ऋषीन् शास्त्रप्रणेतृकान्
गुरूंश्चैव गृहस्थानामाचारो वक्ष्यते क्रमात् ।

End— मन्वादिस्मृतिमालोक्य आचारांश्च तथा बहून्
नित्याचार प्रसिद्ध्यर्थं कृतोऽयं वाक्य संग्रहः ।
दोषदृष्टिन कर्तव्या सत्कृते सज्जनैः सदा
दोषाद्विलिप्यमानो हि सर्वशास्त्रेषु दृश्यते ।
इतस्ततः समुद्धृत्य विप्राणां प्रीतिसम्पदे
यन्मया लिखितो ग्रन्थः सन्तः संशोधयन्तु तम् ॥

इति श्री कृष्णदास विरचितायां नित्याचारक्रमसूत्रिकायां ब्राह्ममुहूर्त्तात् शयनपर्य्यंता नित्याचार पद्धतिः समाप्ता ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

Topics— शौचप्रकरण, उपस्पर्शनप्रकरण, दन्तधावनप्रकरण, स्नानप्रकरण, वस्त्रधावनप्रकरण, यज्ञोपवीतक्रम, मालाधारणप्रकरण, निर्माल्यभक्षणप्रकरण, सन्ध्याप्रकरण, प्रथमभागकृत्य, द्वितीयभागकृत्य, तृतीयभागकृत्य, तर्पणप्रकरण, जलपूजाप्रकरण, पूजाप्रकरण, चतुर्थभागकृत्य, आतिथ्यपूजा, तैलग्रहण, भोजन प्रकरण, भोजनोत्तरक्रमः, सायं सन्ध्या, शयनप्रकरण ।

Colophon— केशरिदेव नृपते रुद्रांके लिखितं मया
लोकनाथेन नाम्ना वै विप्रेण........धरशर्मणा ।

Post colophon — श्री नीलकण्ठ श्री लक्ष्मीनृसिंह रक्षां करिष्ये अखिललोकनाथ-विराट्कृ ।

There is a chapter named मुद्रालक्षण covering two folia, towards the end of the manuscript.

75

Dh.11 # नित्याचार प्रदीपः (प्रथमभाग कृत्य)

By महामहोपाध्याय अग्निचिद् वाजपेयी नरसिंह मिश्र

Substance— Palm leaf, No of folia 46 (20.7" × 1.5") Character—

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Date of copy is not given, Condition good Complete. Find-spot— not known.

Beginning — शाखाभिः सकलाभिरुक्तमहिमा नीलाद्रिमूलस्थितिः
पीनस्कन्धधृतप्रसून विभवः स्वानन्दकन्दोदयं ।
यः शोणाधर पल्लवोऽथ विबुधैः सेव्यः श्रिया शोभितो-
भक्तेभ्यो वितरन् फलं विजयते कोऽप्येष कल्पद्रुमः ॥

End— इति श्री महामहोपाध्यायाग्निचिद्वाजपेयिनरसिंहविरचिते नित्याचारप्रदीपे प्रथमभागकृत्यं समाप्तम् ।

It was published by the Asiatic Society of Bengal in 1907 in its Bibliotheca Indica series.

No colophon.

76

Dh.110

नित्याचार प्रदीपः

By महामहोपाध्याय अग्निचिद् नरसिंह मिश्र

Substance— Palm leaf, No of folia 78 (15.3" × 1.5") Character— Oriya, Date of copy is not given. Incomplete, Condition good, Find-spot- Khalikota, Dist- Ganjam.

Similar to No 75 noted above No colophon.

77

Dh.59(A)

नित्याचार प्रकरणम्

By कृष्णदास

Substance— Palm leaf, No of folia 49, (13.5" × 1.2") Character— Oriya, Date of copy is not given, Incomplete. Condition not so good. Find spot —Baripada Museum, Dt. Mayurabhanja.

Digitized by PPRACHIN, SOA

On comparision it is found to be similar to Nityāchara krama sūchikā by Krshna Dāsa as noted in No 74. but some verses are not found in the text of this work.

No colophon.

78

Dh. 73

नीलाद्रिनाथ पूजाविधि:

By महाराज पुरुषोत्तमदेव

Substance-palm leaf. No. of folia 83. (13.3"×1.1".) Character Oriya, Date of copy is not given. Incomplete Condition good. Find spot—Ranapur area, Dist Puri.

Same as गोपालाऽर्चनविधि

Colophon— तत्रादौ सूर्य्यपूजा च द्वारपालं प्रपूजयेत् ।
आसनशुद्धि....... भूतशुद्धिमथाचरेत् ॥
प्राणप्रतिष्ठां ततः कुर्य्यात्प्राणायाम....... ।
मातृकान्यासमेवापि केशवादि तदनन्तरम् ।
तत्त्वन्यासं ततः कुर्य्यात्.... .... ॥
not visible—

79

Dh. 178

नीलाद्रिनाथ पूजाविधि:
OR
गोपालार्च्चन विधि:

By पुरुषोत्तम देव

Substance—Palm leaf, No of folia 45 (13 2"×1 5") Character—Oriya, Date of copy is not given, Complete, Condition good Find spot- Parlakhemndi, Dt. Ganajam

Digitized by PPRACHIN, SOA

मङ्गलाचरणम्— श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः

स्नातो निर्मलशुद्धसूक्ष्मवसनो धौतांघ्रि पाण्याननः
स्वाचान्तः सुपवित्र मुद्रितकरः श्वेतोर्ध्वपुण्ड्रोज्ज्वलः ॥
प्राचीदिग् वदनो निवध्यसुदृढं पद्मासनं स्वस्तिकं
स्वासीनः स्वगुरून् गणाधिपमथो वन्देत बद्धाञ्जलिः ॥

End—इति श्री आगमकल्पतरौ वैष्णवस्कन्दे गोपालशाखायां मन्त्रपल्लवे महाराजाधिराज-पुरुषोत्तमदेव विरचिते गोपालार्च्चनविधिः समाप्तः ।

80

P. 22

नीलाद्रि महोदयः

Substance— Palm leaf, No. of folia 229 (16.5″×1.2″) Character—Nāgiri. Date of copy is not given Condition - good. Find, spot—not known.

Beginning श्री जगन्नाथाय नमः

एकदा नैमिषारण्ये पुण्ये सर्वसुखप्रदे ।
नानातीर्थसमायुक्ते नानागुल्ममनोरमे ॥

No colophon.

81

Dh.180

नृसिंहगायत्री पूजाविधिः

Substance— Palm leaf No of folia 60 to 147 (9.5″×1″.) Character—Oriya, Date of copy is not given, Complete, Condition-good, Find spot—Ranapur area, Dist Puri

No colophon

Digitized by PPRACHIN, SOA

82

Dh. 40 (B) **पञ्चाक्षर कल्पः**

By उपमन्यु

Substance—palmleaf. No. of folia 179 to 186 (14."×1..") Character Oriya, Date of copy th 14 th Aṅka year of Divyasimha Deva of Orissa or 1870 A D. Complete, condition— good. Find spot—Begunia area, Dist Puri.

Beginning— गुरुं नमामि सर्वेशं सर्वज्ञान प्रकाशकम् ।
प्रकाशनाथममलं तत्त्वमस्यादिलक्षितम् ॥
नमस्ते निगुणोत्साह (?) गुणभृद्गुण शोभित
ज्ञानरूप विशुद्धाय त्रायस्व परमेश्वर ॥

\+ × ×

पञ्चाक्षरस्य माहात्म्यं श्रोतुमिच्छाम्यशेषतः ।

End— इति पञ्चाक्षरी विद्यायामुपमन्युमहर्षिप्रणीतायां षष्ठोऽध्यायः ।

समाप्तश्चायं पञ्चाक्षरकल्पः ।

Colophon— दिव्यसिंह देवस्य चतुर्दशाङ्कं पुस्तकं लिख्यते ।

83

Dh. 69(c) **पञ्चापूजाविधिः**

Substance—Palm leaf. No. of folia 10 (13.1"×1.2") Character—Oriya. Date of copy is not given. Complete, Condition— good. Find spot-Raṇapur area, District, Puri.

It contains a subject named राधाप्रेममञ्जरी by Sri Chaitanya, written on 6 folia, from the beginning of the manuscript, and there

Digitized by PPRACHIN, SOA

are some other topics like व्रत and पूजा after राघाग्रे ममआगे.

No colophon.

84

Dh. 66. **पण्डित सर्वस्वम्**

Substance- Palm lef No. of folia 167, (15.6" × 1.2")
Character- Oriya, Date of copy is not given. Incomplete, condi-stion-good, Find spot— Ranapur, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नमः, अविघ्नमस्तु ।

सिन्दूरभूधर सहोदर कान्तिपूर.
श्रीराभिराम दरवक्र रदप्रकारः ।
सन्ध्यारुणस्य नभसस्तरुणेन्दुभाजो
रूपान्तरं स्फुरतु मे हृदि विघ्नराजः ।

Topics— वर्णाचारं चोपवासादिकालं
शौचाशौचे श्राद्धकर्मादिशास्त्रम् ।
दानं प्रायश्चित्तकृत्यं प्रतिष्ठां
पर्य्यायेण व्याहरिष्ये यथावत् ।
वर्णसंख्या द्विजातीनां भेदकर्माणि वृत्तयः ।
क्षत्रविट् शूद्रजातीनां वृत्तयश्चाह्निकक्रियाः ॥
ततः शङ्करजातीनां लक्षणानि च वृत्तयः ।
नारीणां निजधर्मश्च धर्मः साधारणो नृणाम् ॥
तप्तलोहगडादीनि दिव्यानि कतिचित्ततः ।
अभक्ष्याण्यथ भक्ष्याणि शुद्धिद्रव्यान्नयोरपि ॥
ब्राह्मणाः क्षत्रियावैश्याः शूद्राश्चापि जातयः
चतस्रो जज्ञिरे धातुः सङ्कराश्च तदंशजाः ॥

Autharities quoted—

मनुः, याज्ञवल्क्यः, शौनकः, व्यासः, कात्यायनः, माधवाचार्य्यः, माधवीकारः, कालिदासः, विश्वप्रकाशः etc.

Digitized by PPRACHIN, SOA

It contains some folia about the questions and answers of Lord Jagannātha's Pujā and Prasāda, and there is a subject calld स्वल्पा-ध्याय: by Bṛhaspati, covering four folia towards the end of the manuscript.

No Colophon.

85

Dh 121 B) **पण्डित सर्वस्वम्**

By हलायुध

Substance— Palm leaf, No of folia 87 (15.1"×1.5") Character-Oriya. Date of copy is not given, Condition worm eaten on both the sides, Incomplete, Find spot- Khalikota, Dist Ganjam.

Beginning— रामः, श्रीरामः

जयति निर्गत स्वर्ग सन्धु शेषाम्बु विभ्रमाः
तापच्छिद्रो मुकुन्दांघ्रिनखेन्दु किरणोर्मयः ॥
× × ×
गौडभूद्‌मात्य मण्डलिमौलि रत्नरचितांघ्रि-
राज पण्डित महामहत्तक श्रीहलायुध······अजीजनत् ॥

Topics— अनाहिताग्निप्रायश्चित्त, वेदानध्ययनप्रायश्चित्त, नामत्वप्रायश्चित्त, अनाश्रमत्व-प्रायश्चित्त, सूर्योदयानन्तर शयनप्रायश्चित्त, नित्यक्रियापात प्रायश्चित्त, अग्राह्य याजन-प्रायश्चित्त, शूद्रयाजन प्रायश्चित्त, पतितप्रतिग्रह प्रायश्चित्त, प्रायश्चित्तद्रव्यग्रहण-प्रायश्चित्त, इत्यादयः ।

No colophon

87

Dh. 143 **पाण्डत सर्वस्वम्**

By देव

Substance— Palm leaf, No of folia 134 (13.7"×1.2") Character

Oriya, Date of copy, is not given, Complete, Condition—good, Find-spot Khalikota, Dt. Ganjam.

The text, and topics are the same as in No 84

End—
स्मृतिप्रबन्धाः शतशो विभान्ति
व्याख्यायकाः सन्ति च लक्षसंख्याः ।
तथापि येनाहमिह प्रवृत्त-
स्तस्यापि दैवस्य विलासएव ।

इति पण्डितसर्वस्वे श्राद्धनिरूपणं समाप्तम् ।

No Colophon.

86

Dh. 181

पण्डित सर्वस्वम्

By हलायुध

Substance— Palm leaf, No of folia 96 (16."×1.2") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Incomplete. Find spot—Khalikota, District Ganjam.

Same as in no 85. It Contains up to स्तेयप्रकरणम् ।

No colophon.

88

Dh 18(B)

पराशार संहिता

By पराशार

Substance-palm leaf, No. of folia 84 to 101 (16.1"×1.4") Character—Oriya, Date of copy is not given, Complete, Condition good, Find-spot-Puri town.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Beginning— ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अथातो हिमशिखरे देवदारु महावने ।
व्यासमेकाग्रमासीनं अपृच्छ ऋषयः पुरा ।
मनुष्याणां हितं धर्मं वर्त्तमाने कलौ युगे ।
शौचाचारं यथावृत्तिं वद सत्यवतीसुत ॥

× × ×

ततः सन्तुष्ट हृदयः पराशर महामुनिः

× × ×

द्वापरे याज्ञवल्क्योक्तः कलौ पाराशर स्मृतिः ।

End— एतत्पाराशरं शास्त्रं श्लोकं पञ्चशतं तथा ।
द्विसप्तति समायुक्तं धर्मसार समुच्चयम् ॥
पराशरमतं पुण्यं पवित्रं पापनाशनम् ।
चिन्तितं ब्राह्मणार्थाय धर्मसंस्थापनाय च ।

इति श्री पाराशरे धर्मशास्त्रे द्वादशोऽध्यायः ।

No colophon.

89

Dh 43(a) **पराशर संहिता**

By पराशर with Oriya translation

Substance—Palm leaf, folia 32 (14.2"×1.4") Character-Oriya. Date of copy is Sana 1334 sāla or 1927 Complete, Condition—good. Find spot Khalikota, Dt Ganjam

Beginning— Sanskrit portion same as in No 88

Oriya portion— पूर्वकालरे येक दिवसरे हिमालय पर्वतर ऊर्द्ध्वभागरे देवदारु वन विराजित आश्रमरे महर्षि वेदव्यास येकाग्रचित्तरे आसीन अछन्ति। एतत्समयरे केतेक ऋषि ताहांकु प्रश्न कले।

Digitized by PPRACHIN, SOA

End— Sanskrit pottion some as in No 88.

Oriya portion— एहि पराशर संहितारे ५९२ पाञ्चशत बयाणोइ श्लोक धर्मशास्त्र संगृहीत होइछि । अध्ययन कार्य्य येमन्त नित्य एहि पराशरोक्त-धर्मशास्त्रहिं नेमन्त नित्य। याहाङ्कर स्वर्गकु गमन करिवाकु इच्छाथिब से नियमित एहा पाठकरिबे । पराशर संहिता द्वादश अध्याय समाप्त ।

It contains a टीका of difficult words towords end of the subject. There is a work colld वीरसिंह कर्मविपाक on astronomy. covering 51. folia at the of the manuscript. It is also tranalated. in to oriya prose, but the name of the transletor is not krown.

Colophon— श्री शुभमिह सकल श्री श्री वीरगजपतिगउडेश्वर नवकोटि कर्णाटोत्कल-वर्गेश्वर वीराधिवीरवर प्रताप श्रीमकुन्ददेव महाराजाङ्क विजये शुभराज्ये समस्त ३४ अङ्क पोहळसाल आषाढ कृष्ण चतुर्दशी बुधवारे, एदिन सायंकाल समयरे ए पोस्तक सद्राजये सम्पूर्ण होइला ।

Post Colophon— ए पुस्तकरनाम पराशर संहिता । ए पुस्तक महेश्वर मिश्रङ्कर । ए पुस्तक चिचिलाग्रामरे थिला दशरथ पधानङ्क द्वारे थिबार आम्भे महेश्वर मिश्र लेखि थिलु । कलाहाण्डिदेश, नहकामुडा अटइ ।

90

Dh.96(B)

पराशर संहिता

By पराशर

Substance— Palm leaf, No of folia 151 to 179 (12.1"×1.2")
Character— Oriya, Date of copy is not given, Condition—good. Complete. Find spot—Ranapur area, Dist Puri.

Sume as in No 88.

No colphno

Digitized by PPRACHIN, SOA

91

Dh.183

पराशर संहिता

By पराशर

Substance – Palm leaf, No. of folia 19 (13.5"×1.6") Character—Oriya. Date of copy is not given Condition—good. Find, spot—not known.

No Colophon.

Same as No 88

92

Dh.12

प्रतिष्ठाप्रदीपः

By नरसिंह वाजपेयी

Substance—Palm leaf, No of folia 131 (16.1"×1.5") Character—Oriya. Date of copy is not given Condition good Complete. Find-spot— not known.

Beginning— श्री नीलाद्रिनाथाय नमः

शाखाभिः सकलाभिरुक्तमहिमा नीलाद्रिमूलस्थितिः ।
पीनस्कन्दघनप्रसूनविभव आनन्दकन्दोदयः ॥
यः शोणाधरपल्लवः सुमनसामादिः सतामाशिषा-
भक्तेभ्यो वितरन् फलानि जयति श्रीकृष्णकल्पद्रुमः ।

हयग्रीवं नमस्कृत्य नरसिंहेन धीमता
प्रणीयतेऽथ प्रतिष्ठा प्रदीपः कृष्णतुष्टये ॥

Topics— अरणिविधिः, शिलाकुम्भाधिवासः, पादप प्रतिष्ठा, वनयाग प्रतिष्ठा, विष्णुप्रतिष्ठा, नृसिंह प्रतिष्ठा, दारुप्रतिष्ठा, द्वार प्रतिष्ठा. प्रासाद प्रतिष्ठा, etc

Digitized by PPRACHIN, SOA

Authorities quoted—

हयशीर्ष, नृसिंहपुराण, विष्णुधर्मोत्तर, पितामह, छान्दोग्यपरिशिष्ट, कात्यायन, स्कन्दपुराण, कालिकापुराण, विष्णुगुप्त, भविष्यपुराण, गोपथ ब्राह्मण, वराहपुराण, अग्निपुराण, वशिष्ठ, बृहत् पराशर, सौरसंहिता, लिङ्गपुराण, शारदातिलक, सौरकाण्ड, गरुड पुराण, आम्नायरहस्य, देवीपुराण, कामिक, नारदीय, स्वायम्भुव, योगशिविर, आथर्वण स्मृति, पैठीनसि, मैत्रायणीय, ब्रह्मपुराण, मरीचि, मैत्रायणीय परिशिष्ट, हरिवंश, मनु, व्यास, शातातप, विष्णुपुराण, विश्वामित्र, ज्योतिशास्त्र, बृहस्पति, कुमारहारीत, बुध, etc.

End— अच्युतमौक्तिककुल सम्भवमार्गितचित्त
यज्ञाधराधरबुधः स्थितउत्कलेषु ।
तत्त्वं रहस्य मवबोधयितुं स्वकीये
किं जैमिनिस्फुटमसौ कलितावतारः ॥
विद्याविवेकविनयादिभिरद्वितीयः
तस्यापि सुनुरुदियाय मुरारिमिश्रः
नीलाद्रिनाथ चरणाम्बुज सेवकेन
तस्यात्मजेन विरचितोऽयमिह प्रदीपः ॥

इति ध्वज प्रतिष्ठा समाप्ता । इत्य वेदविद् वाजपेये विरचितः प्रतिष्ठाप्रदीपः समाप्तः ।

It contains a subject named मण्डपप्रतिष्ठा according to तत्त्वसार-संहिता, by Maguni Mišra towards the end of manuscript.

No colophon.

93

Dh. 45

प्रतिष्ठा (पितामहोक्त)

According to पितामह

Substance-palm leaf. No. of folia 190 (15·1"×1·2".) Character Oriya. Date of copy is not given. Incomplete. Condition good. Find spot—Ranapur area, Dist Puri.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Topics— प्रासाद प्रतिष्ठा, अङ्कुरारोपण, धेनूत्सर्गः, वैष्णवप्रासाद प्रतिष्ठा, नवग्रहपूजा, दशदिक्पालपूजा, नवनिधिपूजा, चक्राब्जमण्डलपूजा, etc.

It contains a list of पूर्वोत्तरकरण of the प्रासादप्रतिष्ठा towards the end of the manuscript.

No colophon.

94

Dh 47.

प्रतिष्ठा (आराम)

Substance-palm-leaf, No. of folia 100 Size (17." × 1.5") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition not good, worm eaten. Complete, Find-spot-Parlakhemundi, District-Ganjam.

Topics— ब्रह्मपुराणोक्त आरामप्रतिष्ठा, कात्यायनोक्त कूप प्रतिष्ठा, कात्यायनोक्त मण्डप प्रतिष्ठा, प्रतिमा प्रतिष्ठा, प्रासाद प्रतिष्ठा, पुष्करिणी प्रतिष्ठा, etc.

No Colophon.

95

Dh. 57

प्रतिष्ठा

By मागुणि मिश्र

Substance— Palm leaf, No of folia 134 (14.1" × 1.5") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Complete Find spot—Ranapur area. Dist Puri

Topics— आराम प्रतिष्ठा, जलाशय प्रतिष्ठा, तत्वसार संहितोक्ता प्रासादप्रतिष्ठा, कृष्णवेदपायमानी तत्वसार संहितोक्ता जलाशय प्रतिष्ठा ।

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

It contains a subject called गणेश व्रतकथा on folio 58.

96

Dh. 75

प्रतिष्ठा (विष्णुप्रासाद)

According to हयशीर्ष

Substance— Palm leaf. No of folia 146 (14."×1.1") Character— Oriya, Date of copy is not given. Condition good, complete, Find-spot- Bhawanipatna Dt. Kalahandi,

Beginning— श्री वासुदेवाय नमः

हयशीर्षोक्त विष्णुप्रासाद प्रतिष्ठाविधिः लिख्यते ।

End— इति हयशीर्षोक्त विधिना समासेन वैष्णवप्रासाद प्रतिष्ठाविधिः समाप्तः ।

No Colophon.

97

Dh. 76

प्रतिष्ठा (मण्डप)

According to नरसिंह पुराण

Substance --Palm leaf, No of folia 80 (11.6"×1.1") Character— Oriya, Date of copy is not given, Condition— not so good. Complete, Find spot- Bhawanipatna Museum, Dt. Kalahandi.

Topics— नृसिंहपुराणोक्त मण्डप प्रतिष्ठा, पुष्करिणी प्रतिष्ठाविधिः कात्यायन नारद व्यास भीष्म वशिष्ठ कृतौ जलाशय प्रतिष्ठा, मत्स्य पुराणोक्त गृहप्रवेश विधिः, हयशीर्षोक्त-गृह प्रवेश विधिः, नारदीय कूप प्रतिष्ठा विधिः, पुष्करिणी शान्ति विधिः, वराहपुराणोक्त-पुष्करिणी शान्तिविधिः ।

No colophon

Digitized by PPRACHIN, SOA

There is a subject colled राम प्रतिष्ठा according to हयशीर्षतन्त्र at the end of the manuscript.

98

Dh. 90. प्रतिष्ठा

According to मत्स्यपुराण

Substance— Palm leaf, No of folia 66 (14."×1.2") Character Oriya, Date of copy,is not given, Condition- worm eaten on both the sides. Complete, Find-spot Kapileswar. P. S. Bhubaneswar, Dt. Puri

No colophon.

It contains some other subjects named. शाम्बपुराणोक्त सङ्क्रान्ति-प्रतिष्ठा, कालनिर्णय by माधवाचार्य (incomplete) सारस्वतव्याकरण, (incomplete) and others.

99

Dh 117 प्रतिष्ठाविधिः (पुष्करिणी)

Substance—Palm leaf. No. of folia 109 (16.5"×1.5") Character—Oriya. Date of copy is not given. Condition— good. Incomplete, (Folia 22 to 32 are lost) Find spot Khalikota. District Ganjam.

Topics— राधाकृष्ण प्रतिष्ठा, पुष्करिणी प्रतिष्ठा, दुर्गाप्रतिष्ठा, वृषभ प्रतिष्ठा, पञ्च-उक्त्र गृह वास्तुशान्तिः, भक्तवत्सलशान्ति विधिः, etc

No colophon.

100

Dh. 119 प्रतिष्ठा

Substance- Palm leaf No. of folia 34, (14."×1.5") Character- Oriya, Date of copy is 35 Anka of Ramachandra Deva

Digitized by PPRACHIN, SOA

III or 1845 A.D Complete, condition-good. Find spot—Dharadhar pur area, Dt. Cuttack.

Beginning— श्री लिङ्गराज: शरणम्, श्री गणेशाय नमः

अथ पुष्करिणी प्रतिष्ठा लिख्यते ।

नमस्कृत्य जगन्नाथमित्थन्नजलशायिनीम ।
जलाशयं च सर्वेषां प्रतिष्ठा विधिर्लिख्यते ॥

End— इति पुष्करिणी प्रतिष्ठा समाप्ता ।

Colophon— समस्त रामचन्द्र देवङ्क ३५ अङ्क श्राही चैत्र कृष्ण त्रयोदशी बुधवारे वेल २६।२५ लिनाठारे ये पोस्तक सम्पूर्ण होइला ।

Post colophon— लेखित्वं हरेकृष्ण । शुभमस्तु ।

101

Ph 129 (A) **प्रतिष्ठा**

Substance— Palm leaf, No of folia 33 (15.3"×1.5") Character-Oriya. Date of copy is not given, Condition —good, Complete, Find spot- Khalikota, Dist Ganjam.

Beginning— ॐ- ज्ञानजीवित जीवातु जन्तुजन्मनि भेषजम् ।
जीयाज्जलं जगज्जीव्य विराजि जलजादिभिः ।
तदाधाराध्यदानादि प्रतिष्ठान्तार्थ पद्धतिः ।
विहिताद्यसागरोक्त- क्रियाक्रमादयः स्फुटम् ॥

Topics— जलाशय प्रतिष्ठा, कूप प्रतिष्ठा, मण्डप प्रतिष्ठा, तत्त्वसार संहितोक्त मण्डप प्रतिष्ठाधिवासः, लक्ष्मी प्रतिष्ठा, नृसिंह प्रतिष्ठा ।

End— नृसिंहस्थापनं वक्ष्ये सर्वपाप प्रणाशनम् ।
सर्वविघ्नहरं सर्व दुष्टारिष्ट विनाशनम् ॥

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

102

Dh. 148. प्रातिष्ठा

Substance—palmleaf. No. of folia 33 (14.4"×1.5") Character Oriya, Date of copy is not given. Complete, condition—good. Find-spot— Dharadharpura area, Dist Cuttack.

It contains प्रतिष्ठाविधिः of कूप, जलाशय, मण्डप etc.

No colophon.

103

Dh 134. प्रतिष्ठा

Substance—Palm leaf, No of folia 99 (14"×1.4") Character-Oriya. Date of copy is not given, Condition—good. Complete, Find spot Khalikota, Dt Ganjam.

Topics— हयशीर्षानुसारिणी पादप्रतिष्ठा, प्रतिमाप्रतिष्ठा, मण्डपप्रतिष्ठा, धवल-गृह प्रतिष्ठा, मत्स्य पुराणोक्त प्रतिमाप्रतिष्ठा, विष्णु प्रतिष्ठा, कल्पतरुमतानुसारिणी विष्णु प्रतिमा प्रतिष्ठा, गृहप्रतिमा प्रतिष्ठा, काष्ठप्रतिमाप्रतिष्ठा, शिलाप्रतिमाप्रतिष्ठा, मृत्तिका प्रतिष्ठा, ताम्र प्रतिमाप्रतिष्ठा, कांस्यप्रतिमा प्रतिष्ठा, रौप्यप्रतिमाप्रतिष्ठा, विष्णुप्रतिमा-प्रतिष्ठा, दुर्गाप्रतिमा प्रतिष्ठा, नृसिंह प्रतिष्ठा, वराहप्रतिमाप्रतिष्ठा, पुरुषोत्तम प्रतिष्ठा, वामनप्रतिष्ठा, वैकुण्ठप्रतिमा प्रतिष्ठा, हयग्रीवप्रतिमाप्रतिष्ठा, अनिरुद्धप्रतिष्ठा, दशावतार-प्रतिष्ठा, सङ्कर्षण प्रतिष्ठा, विश्वरूप प्रतिष्ठा, लिङ्ग प्रतिष्ठा, मत्स्यपुराणोक्त राम प्रतिष्ठा।

No Colophon.

104

Dh. 144 प्रतिष्ठा सारसंग्रह

By चन्द्रशेखर

Substance - Palm leaf, No. of folia 175 (15.5"×1.5") Character—

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya. Condition - good. Complete, Find spot— Khalikota, Dist- Ganjam. Date of copy is 16 th, Dec. 1774 A.D

Topics— गौरीनन्दोक्तराधिका प्रतिमाविधिः, राधाश्रिनसंस्कारविधिः, पण्डिताचार्य मागुणिमिश्र विरचित घटित विष्णुप्रतिमा प्रतिष्ठाविधिः, पितामहोक्त ध्वजचक्रप्रतिष्ठाविधिः, पितामहोक्त विष्णुप्रासाद प्रतिष्ठाविधिः, पिङ्गलभैरवोक्त शिवप्रासाद प्रतिष्ठाविधि, चन्द्रशेखर विरचितायां मत्स्यपुराणोक्त शासनाख्यविधिः समाप्तः ।

Colophon— प्रभाकरस्य पुत्रेण पुस्तकं लिखितं मया
नानावेदपुराणोक्तं प्रतिष्ठासारसंग्रहम् ॥
वसुवेदाङ्कशरदि, वीरकेशरि भूपतेः
मार्गशीर्षे सिते पक्षे पौर्णम्यां भृगुवासरे ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

105

Dh.159.

पार्वणश्राद्ध प्रदीपिका

By कोशलेश्वर

Substance—Palm leaf, No of folia 58 (13.7" × 1.8") Character— Oriya, Condition good. Date of copy is not given, Complete, Find-spot— Dharadharapur area, Dt Cuttack

Beginning— अथ कात्यायन सूत्रानुसारेण श्राद्धपद्धतिः लिख्यते । अथ कात्यायन सूत्रानुसारेण नानास्मृतिपुराणोक्ता श्राद्धपद्धतिः ।

End— इति श्री कपिञ्जल कुलोद्भवेन धीमता
कोशलेश्वरेण विरचिता पार्वणश्राद्धप्रदीपिका समाप्ता ।

Colophon— मुकुन्ददेवस्य नृपतेः शुभे अष्टत्रिंशाङ्के वैशाखकृष्णतृतीयायां सोमवासरे लिखितमेतत् पुस्तकं त्रिलोचन शर्मणा ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

106

B.S. 24

प्रायश्चित्त विवेकः

By शूलपाणि

Substance— Country made paper. No of folia 110 (18.5"×4.1") Character— Bengali Condition – good. Date of copy is not given, Find spot – Dharadharpur area, Dist Cuttack. Incomplete.

Beginning— ॐ नमः श्रीकृष्णाय

नित्य श्रुत्युदित स्वधर्मचरणानुष्ठानहीनात्मनां
तत्तद्वेद निषिद्ध कर्मनिचयानुष्ठान निष्ठावताम् ।
लोकानां कलिकाल रूढकलुष स्वसार्थ मेषोऽधुना
प्रायश्चित्तविवेकमत्र विदधे श्री शूलपाणिः सुधीः ॥

No colophon.

107

Dh. 23(a)

प्रायश्चित्त विवेकः

By शूलपाणि

Substance-palm leaf. No. of folia 70 (17·1"×1·4".) Character Oriya, Condition good. Incomplete. Date of copy is not given. Find spot— Puri, Dist Puri.

Beginning— नित्यश्रुत्युदित स्वधर्मचरणानुष्ठानहीनात्मनां
तत्तद्वेद निषिद्ध कर्मनिचयानुष्ठ ननिष्ठावताम् ।
लोकानां कलिकालरूढ कलुषस्वसार्थ मेषोऽधुना
प्रायश्चित्त विवेकमत्र विदधे श्रीशूलपाणिः सुधीः ।

It contains the rules about several प्रायश्चित्त.

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

108

Dh 91(b)

पायश्चित्त दीपिका

By रामचन्द्र वाजपेयी

Substance—Palm leaf, No of folia 55. (15.7"×1.8") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Complete. Find spot—Raṇapur area, Dt. Puri.

Beginning — ॐ नमो यज्ञेश्वराय, अविघ्नमस्तु

प्रणम्य परमात्मानमीश्वरं नरकेशरीम्
तस्य सप्रीतये (चैव) लिख्यते रामपद्धतिः ।

सम्राजोऽग्निचितो नत्वा विद्याकर गुरोः पदे
रामः पद्धतिमादत्ते प्रायश्चित्तस्य दीपिकाम् ॥

End — ऋज्वीमेतामग्निचिद् रामचन्द्रः
सूत्रं कार्थी नैमिषारण्येवासः ।
सम्राजः श्रीसूर्यदासस्य सूनुः
प्रायश्चित्तपद्धतिं सम्व्यधत्त ॥

इतिश्री रामचन्द्रवाजपेयि विरचिता प्रायश्चित्तपद्धतिः समाप्ता ।

It contains the rules and regulations of different प्रायश्चित्त.

No colophon.

109

Dh 114.

पायश्चित्त मनोहरः

By मुरारिमिश्र

Sudstance— Palm leaf. No of folia 118. (15.6"×1.1") Character·Oriya, Date of copy is not given. Complete, Condition—good, Find spot—Dharadharapur area, Dt. cuttack.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Beginning— श्री गणेशाय नमः

श्रीमन्मुरारिमिश्रेण कान्हमिश्रस्य सूनुना ।
क्रियते व्यवहारार्थं प्रायश्चित्त मनोहरः ।

End— इति प्रायश्चित्त मनोहरः समाप्तः ।

Besides प्रायश्चित्त it contains some chapters regarding वृषोत्सर्ग, तुलापुरुषदान, मृत्युञ्जयपुराणोक्त छायादान, and अपमृत्युहर महिषीदान ।

No colophon.

110

Dh. 182.

प्रायश्चित्त मनोहरः

By मुरारिमिश्र

Substance— Palm leaf, No of folia 63 (12.7½"×1.2") Character Oriya, Condition- good, Complete, Date of copy is not given, Find-spot—Ranapur area, Dt. Puri

No colophon.

It contains some other subjects named वशिष्ठ कल्पः, कृष्णशतकं, अश्वत्थप्रदक्षिणम् etc.

111

Dh. 184

पितृतर्पण विधिः

Substance—Palm leaf. No of folia 9 (9.5"×1.4") Character—Oriya. Date of copy is not given. Condition— good. Incomplete, (Folia 22 to 32 are lost) Find spot-Ranapur area, District Puri.

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

112

Dh. 52 (b)

पुरश्चरण चन्द्रिका

By देवेन्द्राश्रम

Substance- Palm leaf No. of folia 66 to 108. (14."×1.4") Character- Oriya, Date of copy is not given. Condition—good. Complete, Find spot—Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning — श्री गणेशाय नमः, अविघ्नमस्तु ।

प्रणम्य जानकीनाथं देवेन्द्राश्रम धीमता ।
क्रियते मन्त्रयन्त्राणां पुरश्चरण चन्द्रिका ॥

End — भूयात् समस्त जगतां शिवमप्रमेयं
देवः करोतु जलदोऽभिमतां सुवृष्टिम् ।
पृथ्वीपतिः परमपालनमातनोतु
सन्तस्तरन्तु भवसागरमाविवेकात् ॥

तन्त्राणि जैमिनिकणाद-पतञ्जलीनां
श्रीव्यास गौतम सदाशिव पाणिनीनाम् ।
सांख्यस्य चामरगुरोः कवितां स्मृतिं यो
वेदं च वेद कृपया रघुनन्दनस्य ॥

तेनेयं ग्रथिता माला शास्त्रपुष्पैश्च तन्तुना
कण्ठे विभूषणं भूयाद्रघुनाथार्पिता सती ।
एवं सकलमन्त्राणां पुरश्चरण चन्द्रिकाम्
सर्वागमानुसारेण श्रीदेवेन्द्राश्रमोऽकरोत् ॥

इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री विबुधेन्द्राश्रम पूज्यपादशिष्य श्रीदेवेन्द्राश्रम विरचितायां पुरश्चरण चन्द्रिकायां होमविधिः । समाप्तेयं पुरश्चरण चन्द्रिका ।

Colophon — लेखनकार चन्द्रमिश्र

Digitized by PPRACHIN, SOA

113

Dh. 52(a) पुरश्चारण दीपिका

By चन्द्रशेखर:

Substance— Palm leaf. No. of folia 65 (14." × 1.4") Character—Oriya, Date of copy is not given. Condition good, complete, Find-spot- Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नमः। अविघ्नमस्तु ।

इन्दिरानन्द सन्दोह कन्द मिन्दीवरेक्षणम्
वन्देऽरविन्दजनिता वन्दितं नन्दनन्दनम् ।
इन्दीवर दलश्याम पुण्डरीक निभेक्षणम्
गोपीनां हृदयानन्द तं वन्दे यदुनन्दनम् ॥

श्री चन्द्रशेखरो विप्रः सम्प्रदाय क्रमागतः
नानागुरुमतं ज्ञात्वा सद्गुरूणां मतं शुभम् ।
सर्वतन्त्रानुसारेण मन्त्रिणां हितकाम्यया
तनोति सर्वमन्त्राणां पुरश्चरण दीपिकाम् ॥

End— सदैव जगतीतले भवतु मामकीया पुनः
पुरश्चरणदीपिका सकलसाधकानां मुदे ।

इति पुरश्चरण दीपिकायां पञ्चमः प्रकाशः ।
समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

114

Dh. 185 पुरश्चारण दीपिका

By चन्द्रशेखर:

Substance—Palm leaf, No of folia 116 (13.7" × 1.2") Character—Oriya, Date of copy is not given. Incomplete, Condition—worm-eaten on both the sides, Findspot -Sakhigopal area, Dt. Puri.

Digitized by PPRACHIN, SOA

It contains only the first and and fourth प्रकाश: of पुरश्चरण दीपिका There are some other subjects named त्रैलोक्यमङ्गलकवचम् according to रुद्रयामल; महोग्रतारा कवचं, according to भैरवानन्दरहस्य, and कालिकामहाविद्या ।

No colophon.

115

P/19. **पुरुषोत्तम माहात्म्यम्**

According to पद्मपुराणम्

Substance— Palm leaf, No of folia 68 (13.8"×1.3") Character— Oriya. Date of copy is not given. Condition not good, Incomplete. Find spot—not known

Beginning— श्री जगन्नाथ: शरणम्, अविघ्नमस्तु

वन्देऽहं परमात्मानं नीलाचलपतिं प्रभुम्
संसाराम्भोधि मग्नानामुद्धारण परायणम् ॥

No Colophon.

116

P. 21 **पुरुषोत्तम माहात्म्यम्**

Substance-palm—leaf, No. of folia 211 (12.5"×1.2") Character—Nagiri, Condition not good and worm eaten. Complete, Date of copy is 1758. A.D. or. 28th Aṅka year of Vīrakeśari Deva of Khurdha. Find-spot- Puri, Orissa.

Same as in No 115 noted above.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Colophon— श्री कविचन्द्र वाडरीमिश्रेण लिखितमिदं पुस्तकं, श्री वीरकेशरि देवस्य महाविंशत्यङ्के अयं ग्रन्थ: समाप्त: ।

117

P. 20

पुरुषोत्तम माहात्म्यम्

According to स्कन्दपुराणम्

Substance— Palm leaf, No of folia 129 (17.6"×1.6") Character-Oriya. Date of copy is 1810 A.D. or 12th Aṅka year of Mukunda Deva II the King of Khurdha. Find spot not krown. Complete, Condition very bad. worm eaten on both the sides, Some folia are already broken.

Beginning— नम: सरस्वत्यै, श्री जगन्नाथाय नम:

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ।

End— इति श्री स्कन्दपुराणे जैमिनिऋषि सम्वादे चतुरशीतिसाहस्रे पुरुषोत्तम-माहात्म्ये अष्टचत्वारिंशोऽध्याय: ।

समाप्तोऽयंग्रन्थ:

No Colophon.

राज्ञो मुकुन्ददेवस्य द्वादशाङ्के शनौ मघौ ।
व्यालेखि पुस्तकमिदं द्विजेन श्री करेण च ॥

118

P. 23.

पुरुषोत्तम माहात्म्यम्

According to वृहन्नारदीयपुराणम्

Substance— Palm leaf. No of folia 116 (14.2"×1.3") Character—

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Date of copy is 29th Anka year of Divyasimha Deva of Oriss. Complete, Condition—good, Find spot Puri town, Orissa.

Beginning— श्री गणेशाय नमः, अविघ्नमस्तु

वागीशा यस्य वदने लक्ष्मीर्यस्य च वक्षसि ।
यस्यास्ते हृदये संवितं नृसिंहमहं भजे ॥

End— इतिश्री वृहन्नारदीयपुराणे पुरुषोत्तम माहात्म्ये श्री नारायण-नारद सम्वादे पुरुषोत्तममाहात्म्य फलश्रवणं नाम एकत्रिंशोऽध्याय: ।

Colophon— लिखितं सत्यानन्द षडङ्गिना इदं पुस्तकं समाप्तम् ।

श्री दिव्यसिंहदेवस्य ऊनत्रिंशांकवासरे ।
घटिकात्रितये चैव समाप्तं प्रीतये बुधाः ॥

119

Dh. 186

पुरुषसूक्तम

Substance—Palm leaf, No of folia 60 (11"×1) Character— Oriya Date of copy is not given, Condition—good, Complete, Find spot—Ranapur area, Dt. Puri.

No Colophon.

It contains the story of Vināyaka vrata on folia 61 to 72, and Śaradiya Durgāpujā on folia 3 to 37.

120

B.S. 4

पूजा पद्धतिः

Substance—Country made paper. No of folia 122 (6.2"×1.6") Character Bengali, Date of copy is not given, Incomplete. Condition—good, Find spot— Kujang area, Dt. Cuttack.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Topics— पद्मपुराणे पार्वतीश्वरसम्वादे रामचन्द्रस्तवः, भैरवतन्त्रोक्त रामकवचम्, रघुनाथ पूजापद्धतिः, विष्णुधर्मोत्तरे श्रीकृष्ण कवचम्, राधास्तवः, केशवादिन्यासः, बृहत् रुद्रयामलोक्तं गुरोः कवचम्।

No colophon.

121

Dh. 24. # भक्ति रत्नावली

By विष्णुपुरी with Oriya prose translation.

Substance—palmleaf. No. of folia 56 to 114 (18.5"×1.3") Character Oriya, Incomplete work, Condition—not so good and worm eaten. Date of copy is not given, Find-spot— Puri, Orissa.

Example of the Oriya prose translation—

एथे श्रवण कीर्त्तनादि नवविधा भक्ति वर्णिवाकु नअ गोटि विरचन आरम्भ करि अछन्ति ।प्रथमे भक्ति निरूपण करुअछन्ति ।

End— येमन्त प्रकारे वहुत यत्नरे श्रीभक्तिरत्नावली करि ग्रन्थ कलि, प्रीतिरे कान्तिमाला ये टीका ताहा कलि। एथिरे श्रीधरस्वामी ताङ्क लेखिवारे येवे न्यूनाधिक थिव तेवे सुवुद्धिमाने मोहर दोषता क्षमाकरिवे।

No colophon.

महायक्षशर प्राण शशाङ्के गणिते शाके
फाल्गुन कृष्णपक्षस्य द्वितीयायां शुभक्षणे।
वारणस्यां महेशस्य सन्निधौ हरिमन्दिरे।
भक्ति रत्नावली सिद्धा सहिता कान्तिमालया॥

It contains from the 3rd विरचन to the end.

No Post colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

122

Dh 34. भक्तिरत्नावली

with कान्तिमाला टीका
By विष्णुपुरी (with Oriya prose translation)

Substance— Palm leaf. No of folia 137. (15." × 1.2½") Character Oriya, Date of copy is not given. Condition—good. Complete work Find spot—Ranapur area, Dt Puri

Beginning— श्री वृन्दाटवीनागराभ्यां नमः।

ये मुक्ताविपिनिः स्पृहां प्रतिपदं प्रोन्मिलदानन्दां-
यामास्थाय समस्तमस्तकमणीकुर्वन्ति ये स्वे वशे।
तान् भक्तानपि तां च भक्तिमपि तं भक्तप्रियं श्रीहरिं।
वन्दे सन्ततमर्थतोऽनु दिवसं नित्यं शरण्यं भजे॥

End— श्रीमत् पुरुषोत्तम चरणारविन्द मकरन्द कृपालेश प्रोन्मिलित विवेकतैरभुक्त विष्णुपुरि थितायां श्रीमद्भागवतामृताब्धि श्रीमद्भक्तिरत्नावल्यां सकान्तिमाला सम्पूर्णा।

Colophon same as in No 121.

It contains श्रीमद्भगवद्गीता (complete) and some chapters of Oriya Bhāgavata by Jagannātha Dāsa.

123

Dh 53. भक्ति रत्नावली

with Kāntimāla ṭikā by विष्णुपुरी

Substance—Palm leaf, No of folia 100 (13.6"×1.3") Character-Oriya. Date of copy is not given, Condition—good. but last two folia are broken. Complete, Find spot—Sakhigopal. Dt. Puri. Same as in No 122. No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

124

Dh 187. भक्ति रत्नावली

with Kāntimālā tīkā by विष्णुपुरी

Substance— Palm leaf, No of folia 125. (14.2″×1.3″) Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition good, some folia are broken, Incomplete. Find spot— Raṇapur area, Dt. Puri.

Same as No 111
No Colophon.

125

B.S. 7. भक्ति रत्नावली

with Kāntimālā tikā by विष्णुपुरी

Substance— country made paper, No. of folia 62 (18.5″×6.5″) Character— Bengali, Date of copy is Sana 1207 Sala or 1800 A.D. Complete work, Condition—good. Find spot—Raghunathapur area, Dt. Cuttack, Orissa.

Same as No 111.

There are five chapters from the 30th to the 35th of Bhāgavata Daśamas kanda covering 50 folia towards the end of the manuscript. It contains also some pictures regarding Gopalīlā of Lord Śri Kṛshṇa.

No colophon.

126

Dh. 135 (a) भक्ति रत्नावली

with Kantimala tika by विष्णुपुरी

Substance-palm leaf. No. of folia 100 (12.1″×1.2″.)

Digitized by PPRACHIN, SOA

Character Oriya, Condition good. Incomplete. Date of copy is not given. Find spot— Parlakhemindi, Dt. Ganjam.

No colophon.

Same as in No 122.

127

B.S. 31.

भारत सावित्री

Substance— Palm leaf. No of folia 14 (7."×1") Character— Oriya, Date of copy is not given, Condition – good. Incomplete. Find spot—Bhubaneswar, Dt. Puri, Orissa.

Beginning— ॐ नमो वक्रतुण्डाय

नारायणं प्रणम्यादौ ऋषीन् शास्त्रप्रणेतृकान् ।
गुरूंश्चैव गृहस्थानामाचारो वक्ष्यते क्रमात् ॥

No colophon.

It contains same topics regarding गायत्री on folia 15 to 106

128

Dh.21.

मण्डलसर्वस्वम्.

Substance—Palm leaf, No of folia 63 (15.5"×1.5½") Character— Oriya, Condition not so good. Date of copy is not given. Complete, Find-spot— Puri town, Orissa

बृहत् सर्वतोभद्रमण्डल लक्षण, सामान्य सर्वतोभद्रमण्डल लक्षण, पञ्चरूप सर्वतो-भद्रमण्डल लक्षण, रामसर्वतोभद्रमण्डल लक्षण, शिवसर्वतोभद्रमण्डल लक्षण, मध्यम स्वस्तिकमण्डल लक्षण, कनिष्ठ स्वस्तिकमण्डल लक्षण, रामस्वस्तिक मण्डल·

Digitized by PPRACHIN, SOA

लक्षण, शिवनाभि मण्डल, मध्यम शिवनाभि मण्डल, कनिष्ठशिवनाभिमण्डल, बृहन्नवनाभि-मण्डल, मध्यमनवनाभिमण्डल, कनिष्ठनवनाभि मण्डल, विष्णुमण्डल, राशिचक्र मण्डललक्षण पद्ममण्डल लक्षण, सर्वकामिकमण्डल लक्षण, शिवभद्रमण्डल लक्षण, शिवलिङ्गप्रतिष्ठा मण्डल लक्षण, अष्टपटल मण्डल लक्षण, जटामण्डल लक्षण, उत्तमचक्राब्जमण्डल लक्षण, नाभिक्षेत्र मण्डल लक्षण, वैष्णवमण्डल लक्षण, वारुणमण्डल लक्षण, वनस्पतिमण्डल लक्षण, मत्स्य-पुराणोक्त वास्तुमण्डल लक्षण, कूर्मपुराणोक्त वास्तुमण्डल लक्षण, हयशीर्षोक्त वास्तुमण्डल-लक्षण, सावित्रीमण्डल लक्षण, वहिनमण्डल लक्षण, (गौतमी तन्त्रोक्त) सुदर्शनचक्र लक्षण, etc.

No colophon.

129

Db. 25

मण्डल प्रकाश.

by वासुदेवरथ

Substance— Palm leaf. No. of folia 70 (12.2' × 1.8') Character—Oriya. Condition worm eaten. Incomplete, Date of copy is not given. Find-spot- Kodala, Athagarah Dt. Ganjam.

Beginning— श्रीमते रामानुजाय नमोनमः, अविघ्नमस्तु ।

सेव्ये महीमहीध्रनन्दिनीं मङ्गलाय सततं विलासिनीम्
शङ्करस्य शशिखण्डमण्डिनीं चण्डमु महिषासुरार्द्दिनीम् ।
कृतमतिगतिद्श्री: शैवपादाब्जभक्ते-
गुरुजन जनितश्रीकारपूर्वे रथेन ।
निखिलजन हितार्थं सिद्धतां मण्डलाना-
मलभत परिपाटी वासुदेवाभिधेन ॥

Topics— लघुसर्वतोभद्रमण्डल, मतान्तरे लघुसर्वतोभद्रमण्डल, बृहत् सर्वतो-भद्रमण्डल, राशि सर्वतोभद्रमण्डल, लिङ्गितमण्डनराशि सर्वतोभद्र मण्डल, पारिजात राशि-चक्रम्, स्वस्तिकमण्डल, मतान्तरे उत्तमस्वस्तिक मण्डल, सिंहवाजपेयिमते मध्यम-स्वस्तिकमण्डल, कनिष्ठ स्वस्तिक मण्डल, रश्मि मण्डल, उत्तमचक्राब्ज मण्डल, मध्यम-

Digitized by PPRACHIN, SOA

चक्राब्जमण्डल, षोडशासार चक्राब्जमण्डल, उत्तमनवनाभिमण्डल, मध्यमनवनाभ मण्डल, कनिष्ठनवनभि मण्डल, पञ्चाब्जमण्डल, शिवसर्वतोभद्रमण्डललक्षण, लिङ्गतोभद्रमण्डल, उत्तमशिवनाभ मंडल. जटामंडल, अष्टपटल मंडल, मन्दाघतंमंडल, दुर्गासर्वतोभद्रमंडल, भीमंडल, राधामंडल, रामसर्वतोभद्रमंडल, लघुराम सर्वतोभद्रमंडल, रामस्वस्तिक मंडल, विष्णुमंडल, वैष्णववनस्पति मंडल, हयशीर्षोक्त वारुणमंडल, लघुवारुण मंडल, हयशीर्षोक्तवास्तु मंडल, पद्ममंडल, सावित्रीमंडल लक्षण, अङ्कुरारोपण मंडल ।

No colophon.

130

Dh. 50

मधुसूदन मन्त्रजप विधिः

Substance—Palm leaf, No of folia 20 (7.3"×1.2") Character—Oriya, Date of copy is not given. Condition—good, Incomplete, Find spot—Ranapur area, Dt. Puri.

No colophon.

131

Dh. 85

मानव धर्मशास्त्रम्

By मनु

Substance—Palm leaf No. of folia 153, (18.1"×1.1") Character· Oriya, Date of copy is not given. Condition—not good. Incomplete, Find spot—Ranapur area, Dt. Puri.

Beginning— नमो गणेशाय, अविघ्नमस्तु

स्वयंभुवे नमस्कृत्य ब्रह्मणेऽमिततेजसे ।
मनुप्रणीतान् विविधान् धर्मान्वक्ष्यामि शाश्वतान् ॥

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

132

Dh. 5. **महार्णव कर्मविपाकः**

By मदनात्मज मान्धाता

Substance-palm—leaf, No. of folia 95 (18."×1.5") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition— very old worm eaten. Incomplete, Find-spot- not known.

Beginning— महार्णवाख्यं महति प्रबन्धे;

मान्धातृनाम्नो मदनात्मजस्य ।

No Colophon.

133

Dh 6. **महार्णव कर्मविपाकः**

By विश्वेश्वर भट्टः

Substance— Palm leaf, No of folia 211 (15.5"×1.5") Character—Oriya, Date of copy is not given. Condition—good, Incomplete. Find spot—Puri town

Beginning - श्रीमते हयग्रीवाय नमः

नमः सकलकल्याण भाजनाय पिनाकिने

नमो लक्ष्मीनिवासाय देवताये गिरां नमः ॥

× × ×

स्वयं कौशिकवंश भूगणमणिः श्रीभट्ट विश्वेश्वरः

वेदे स्मार्त्तमते नये च सपदे वाक्ये कृती वर्त्तते ॥

× × +

Digitized by PPRACHIN, SOA

श्रुति स्मृतिपुराणानि समालोक्य यथामति:
निबद्ध्यते समासेन निबन्धोऽयं महार्णवः ।

End— इति श्री पेद्दिभट्टात्मज विश्वेश्वर विरचिते महार्णवाभिधाने कर्मविपाक-परिच्छेदे कर्मविपाकसंग्रह प्रकरणं समाप्तम् ।

No colophon.

134

P. 29. (b)

मुक्ति चिन्तामणि:

By गजपति पुरुषोत्तमदेव

Substance— Palm leaf, No of folia 40 (13.9" × 1.2") Character-Oriya, Date of copy is 22-2-1767 A.D. Condition- good, Complete, Find-spot—village and P.S. Begunia Dt. Puri

Beginning— श्री रामाय नमः

नीलाद्रौ च तदर्थिभ्यो दातुमथ चतुष्टयं ।
अशरीरः शरीरीव व्यक्तो यस्तं हरिन्नम ॥

× × ×

नानागम स्मृतिपुराणमहाब्धिमध्या-
दुद्धृत्य बुद्धि मथनेन हरेः प्रसादात् ।
वाक्यानि यानि विलिखामि विमुक्तयेऽहं
सन्तस्तदर्थमनिशं परिपालयन्तु ॥

विनाप्यष्टाङ्ग योगेन विनाप्यनशनेन च
मुक्तिचिन्तामणिस्तेन मोक्षदः सर्वदेहिनाम् ॥

End — इति श्री मुक्तिचिन्तामणौ गजपति पुरुषोत्तम देवेन संगृह्य विरचितो मुक्तिचिन्तामणिर्नाम ग्रन्थः समाप्तः ।

Topics— जगन्नाथस्य स्थितिप्रकरण, पुरुषोत्तम माहात्म्य, क्षेत्र माहात्म्य, जगन्नाथस्य दर्शनफल, जगन्नाथस्य कीर्त्तनफल, जगन्नाथस्य निर्माल्यग्रहणफल ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

Authorities quoted—

ब्रह्म पुराण, पद्म पुराण, बृहद्विष्णु पुराण, शिवपुराण, ब्रह्मवैवर्त्त पुराण, वराह-पुराण, स्कन्द पुराण, पुरुषोत्तम माहात्म्य. कूर्म पुराण, गारुड पुराण, नरसिंह पुराण, बृहन्नारसिंह पुराण, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, विष्णुयामल, ब्रह्मयामल, वायुपुराण, बृहद्-वामन पुराण, भागवतामृत, आग्नेय पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, भविष्य पुराण, वायु-पुराण. शिवधर्मोत्तर, प्रभास पुराण, लीलावती पुराण, मृत्युञ्जय पुराण, व्याससंहिता, वशिष्ठतन्त्र मोक्षोपायनपटल, बहवृच परिशिष्ट, वैरञ्चयतन्त्र, ब्रह्मरहस्य, मेरुतन्त्र, बृहद्-विष्णुपुराण, भागवतपुराण, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, तत्त्वयामल, चतुर्वर्गयोगीश्वर।

Colophon— श्री वीरकेशरी देवङ्क ३८ अङ्क कुम्भ १० दिन फाल्गुन कृष्ण रविवार अष्टमी ७ द ड ४८ लिखा उत्तार नवमीरे महेश्वर प्रहराजेण लिखितमिदं पुस्तक १।

135

Dh. (9(a)

यन्त्र चिन्तामणिः

By शिव

Substance—Palm leaf. No of folia 12 (13.2"×1.5") Character—Oriya. Date of copy is not given. Condition not good. Incomplete, Find spot-Ranapur area, District-Puri.

इति शिवविरचिते यन्त्र चिन्तामणौ वेश्याधिकारः।

It contains twentyfour yantras on differnet subjects.

No colophon.

136

Dh.103

यात्राभागवतम्

By वालुङ्कित्रपाठी

Substance— Palm leaf. No of folia 67. (14.6"×1.3") Charater—Oriya, Date of copy is not given. Condition—worm eaten. Incomplete, Find spot—Balakhemndi, Dt. Ganjam

Digitized by PPRACHIN, SOA

Beginning— श्री गणेशाय नमः. अविघ्नमस्तु

नारायणं प्रणम्यकञ्जनकं नमामि।

रासोल्लासभरेण नृत्यति महाकल्पद्रु प्रायः सदा
नानाभूषण रत्नहारनिकरैरान्दोलितो वक्षसि।
लावण्यैक निकेतनं श्रुतिगुरुं वन्द्यं न्द्ररुद्रैः स्तुतं
वन्दे श्री व्रजसुन्दरी गणवृतं वृन्दावनेशं हरिम्॥

श्रीकृष्णलीलावाताश्चैं जनानामुपकारक म्
यात्रा भागवतं ना ग्रन्थं वक्ष्याम्यहं शुभम्॥

नीलाचल मुकुटमणेः श्री जगन्नाथ देवस्ययात्रादिकं सर्वं निरूपयितुं प्रमाणमारभ्यते। यात्राणां मध्ये द्वादशयात्राणामेव मुख्यत्वम्।

द्वादशयात्रा यथा— दोलयात्रा, दमनकयात्रा, अक्षयतृतीया, स्नानयात्रा, श्रीगुण्डिचा देवशयन, शयनद्वय, पार्श्वपरिवर्त्तन, देवोत्थापन, प्रावरणषष्ठी, पुष्यपूर्णिमा यात्रा।

Topics— द्वादशयात्रा निरूपणं नाम प्रथमोऽध्यायः। दमनकयात्रा निरूपणं नाम द्वितीयोऽध्याय। चन्दनयात्रा निरूपणं नाम तृतीयोऽध्यायः। देवस्नानयात्रा नाम चतुर्थोऽध्यायः। गुण्डिचायात्रा वर्णनं नाम पञ्चमोऽध्यायः। कर्कटसंक्रान्तियात्रा वर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः। मकरसंक्रान्तियात्रा वर्णनं सप्तमोऽध्यायः etc.

End— इति श्रीमद् यात्राभागवते उपयात्रा निर्णये चतुर्विंशोऽध्यायः।
समाप्तोऽयं ग्रन्थः

No colophon.

137

Dh 117.

याज्ञवल्क्य टीका

By विज्ञानेश्वर

Substance— Palm leaf. No of folia 179 (16."×1.5") Character— Oriya. Date of copy is not given, Condition - good. Complete, Find spot— Parlakhemudi Dist Ganjam.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Beginning— श्री गणेशाय नमः

पूर्वं गृहस्थाश्रमिणां नित्यनैमित्तिक धर्मा उक्ताः। अभियुक्तादि गुणयुक्तस्य गृहस्थविशेषस्य गुणप्रमाश्च दर्शिताः। अधुना तदधिकार सङ्कोच-भूताशौच प्रतिपादनमुखेन तेष प्रायश्चित्तादयः प्रतिपाद्यन्ते।

End— इति श्रीवत्सघ्ननाम भट्टोपाध्यायात्मज श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य विज्ञानेश्वर भट्टारकस्य कृतौ ऋजुमिताक्षराणां याज्ञवल्क्य धर्मशास्त्रविवृतौ तृतीयो ध्यायः समाप्तः।

No colophon.

138

Dh. 94.

याज्ञवल्क्य टीका

By विज्ञानेश्वर

Substance- Palm leaf No of folia 191 (17.5"×1.5") Character-Oriya, Date of copy is not given, Incomplete. Condition—good, Find spot—Khalikota, Dt. Ganjam, Orissa,

Same as in No 137. noted above, No colophon.

139

Db 435(b)

रागवर्त्म चन्द्रिका

By विश्वनाथ चक्रवर्त्ती

Substance—Palm leaf No of folia 101 to 113 (12.1"×1.2") Character—Oriya Date of copy is not given, Condition - good, Complete, Find spot-Parlakhemandi area, Dt. Ganjam, Orissa

Beginning— श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः

श्रीरूपवक्त्रसुधास्वादि चकोरेभ्यो नमोनमः।
येषां कृपालवबध्ये रागवर्त्मनि चन्द्रिकाम्॥

Digitized by PPRACHIN, SOA

श्रीमन्भक्तिरसाम्भोधि बिन्दुर्यः पूर्वदर्शितः
तत्र रागानुगाभक्तिः संक्षिप्तात्र प्रतन्यते ॥

End— इन्त रागानुगावर्त्म दुर्दर्शं विबुधैरपि ।
परिचिन्वन्तु सुधिय उक्त चन्द्रिकया मया ॥

इति श्रीमद्विश्वनाथ चक्रवर्त्तिकृतिरियं रागवर्त्मचन्द्रिका समाप्ता ।

No Colophon.

140

Dh.20(b) **राधाकृष्ण उपासना पद्धतिः**

According to त्रैलोक्यमोहनतन्त्र and गोपालकल्प

Substance—palmleaf. No. of folia 50 to 145 (14.6"×1.4") Character Oriya, Date of copy is not given, Condition good Incomplete. Find-spot not known.

Beginning— श्री देव्युवाच—

देवदेव महादेव भक्तानुग्रहकारक
शक्तिमन्त्रास्तु बहुशः श्रुतास्त्वत्तो महाप्रभो ।
भुवनाधिपते मन्त्रो मन्त्रस्त्रैपुर सज्ञकः ।

× ×

इदानीं वैष्णवान्मन्त्रान् श्रोतुकामास्मि भो प्रभो ।

इति त्रैलोक्य मोहनाख्ये तन्त्रे गोपालकल्पे प्रथमपटलम् ।

No colophon.

141

Dd. 188. **रुद्रचण्डी**

Substance — Palm leaf, No of folia 23 (7.5"×1.4") Character-

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya. Date of copy is not given, Condition good. Complete, Find spot- Lalita pītapur, P.S. Khurda, Dt. Puri

End— इति श्री रुद्रयामले हरगौरीसम्वादे रुद्रचण्डी समाप्ता ।

No colophon.

142

Dh 189. **रुद्राभिषेकः**

Substance—Palm leaf, No of folia 42 (1[illegible]"×1.[illegible]") Character-Oriya. Date of copy is not given, Condition good. Incomplete, Find spot— Lalitapītapur, Dt. Puri.

No colophon.

It also contains नीलसरस्वतीमन्त्र, रुद्राध्यायव्याख्या, एकाम्रपुराणोक्त रथ प्रतिष्ठा, towards the end of the manuscript.

143

Dh. 30 **रुद्राभिषेक विधिः**

According to बौधायन तन्त्र

Substance— Palm leaf, No of folia 123. (7.3" + 1.3") Character Oriya, Date of copy about 1873 A.D. Complete, Condition good, Find spot Bhubaneswar, Dt. Puri

No Colophon.

It contains some other subjects named वगलामुखी प्रयोगः, कालीकवचम् etc. towards the end of the manuscript.

144

Dh 190. **लिङ्ग पूजाविधिः**

Substance—Palm leaf, No of folia 61. (8.6"×1.3") Character—

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Date of copy is not given, Condition-worm-eaten. Complete. Find spot - Lalitapātapur. Dt. Puri.

No Colophon.

There is a subject named शरत्कालीन दुर्गापूजा towards the end of the manuscript.

145

Dh.17(a).

वशिष्ठकल्पः

Substance – Palm leaf, No. of folia 28 (16."×1.5") Character Oriya, Condition worm eaten, Complete, Date of copy is not given, Find spot—not known.

Beginning – ॐ नमो योगीश्वराय

आश्रमस्थं सुखासीनं वशिष्ठं तपोभास्वरम् ।
ब्रह्मन् ...... समायुक्तं योगेश्वरं समन्वितम् ॥
इति वशिष्ठकल्पे नारायण प्रथमः पटलः

End— इति वशिष्ठकल्पे दशमः पटलः ।

No Colophon.

146

B.S.2.

व्रतकथा (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी)

Substance—country made paper No. of folia 9 (7·5"×3 5".) Character – Bengali, Date of copy is not given. Complete, Condition – fair, Find spot- Kujanga area, Dt. Cuttack

Beginning— ॐ नमः श्रीकृष्णाय
भविष्योत्तरे वशिष्ठं प्रति दिलीपवाक्य
End— इति भविष्यपुराणे श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतकथा ; श्रीरामचन्द्र:
No Colophon

Digitized by PPRACHIN, SOA

147

Dh.150

व्रतकथा

Substance—Palm leaf, No of folia 78 (14.3"×1.5") Character—Oriya. Condition—good. Complete. Date of copy is not given Find-spot— Parlakhemundi, Dt. Ganjam

Topics— रामनवमी पूजाविधिः (Incomplete) कृष्णजन्माष्टमीविधिः, दधियात्राविधिः. भविष्योत्तरोक्त राधाजन्माष्टमी व्रतपूजा, नेत्रोत्सवविधिः, कात्यायनतन्त्रोक्त महोत्सव पद्धतिः, विजयदशमी विधिः, अपराजिताविधिः, गणेशव्रतकथा (according to स्कन्दपुराण) केदार व्रतकथा. सुदशा व्रतकथा (according to पद्मपुराण) वरलक्ष्मी व्रतकथा (according to भविष्योत्तर पुराण),स्कन्द पुराणोक्त सोमनाथ व्रतकथा, आरण्यक पर्वणि श्रीरामचरिते कौशल्यासीता सम्वादे सावित्री व्रतकथा, महादेव विवाहः, रामस्वामि विवाहः।

No colophon.

148

B.S. 17 (b).

व्रतकथा

Substance— Palm leaf. No of folia 12 (14.6"×1.3") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition— not good. Complete. Find spot—not kown.

Topics— दुर्गाष्टमीव्रतकथा, कुक्कुटीव्रत, विनायक व्रतकथा, बलभद्रपूजा।

No colophon.

149

Dh.151

व्रतकथा

Substance—Palm leaf. No. of folia 138 (14.8"×1.3") Character—

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Condition good, Date of copy is not given. Complete, Find spot- Khallikota, Dt. Ganjam.

Topics— विनायक पूजाव्रतकथा, भविष्योत्तरे अनन्त व्रतकथा, लिङ्गपुराणे उमा-महेश्वरसम्वादे हरितालिका कथा, विष्णुपुराणोक्त जन्माष्टमी व्रतकथा, भविष्योत्तरे राधाष्टमी व्रतकथा, रामनवमी व्रतकथा, सावित्री व्रतकथा, पद्मपुराणोक्ता गुरुपञ्चमी व्रतकथा।

No colophon— ग अक्षर वाइकोलिमिभकर।

150

Dh.153 **व्रतकथा**

Substance—Palm leaf. No. of folia 120 (13.5"×1.3") Character Oriya, Condition good. Incomplete. Date of copy is not given. Find spot—Khallikota, Dt. Ganjam.

Topics— स्कन्दपुराणे सुदशाव्रतकथा, भविष्योत्तरे कृष्णयुधिष्ठिर सम्वादे अनन्त व्रतकथा, देवीपुराणे देवनारद सम्वादे दुर्गाष्टमी व्रतकथा, भविष्योत्तरे सोमनाथ व्रतकथा, स्कन्दपुराणे सोमनाथ व्रतकथा, विष्णुपुराणे जन्माष्टमी व्रतकथा।

No colophon.

There is a chapter named जनदशान्ति विधिः।

151

Dh. 142 **विद्याकर पद्धतिः OR व्रत पद्धतिः**

By विद्याकर वाजपेयी

Substance—Palm leaf, No. of folia 118, (14.7"×1.4") Character- Oriya, Date of copy is not given. Condition—not good, Incomplete, Find spot—Ranapur area, Dt. Puri.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Topics— विद्याकरकृता व्रतपद्धतिः or विद्याकर कृता ऋग्वेद व्रतपद्धतिः ।

End— इति विद्याकर पद्धतौ ऋग्वेद व्रतविधिः ।

No colophon.

152

Dh. 89.

विवाह पद्धतिः

Substance—Palm leaf, No of folia 65 (12.5" × 1.2") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition—worm-eaten, Complete, Find-spot—Gaḍamāṇitrī, P.S. Begunia, Dt. Puri.

No colophon.

It also contains चन्द्रायनाविधिः, जातकर्म, सीमन्तोनयनं, नामकरणं, etc, towards the end of the manuscript.

153

Dh. 132

विवाह पद्धतिः

By दामोदर

Substance— Palm leaf, No of folia 127 (12.5" × 1") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condtion—not good, Complete, Find spot— Gadamāṇitrī P.S. Begunia, Dt. Puri.

Beginning— श्री कृष्णाय नमः

वक्रतुण्डं नमस्कृत्य तथा पारस्करं मुनिम् ।
निषेकादि श्मशानान्तं कर्मदामोदरोऽतनोत् ।

End— इति चतुर्थीमन्त्रव्याख्या ।

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

154

Dh. 125. **विवाहकर्म**

Substance— Palm leaf, No of folia 107 (14.7″ × 1.3″ Character-Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Complete, Find spot— Dharadharapur area, Dt. Ganjam

No colophon.

155

Dh. 126 **विवाहकर्म**

Substance—Palm leaf, No of folia 127 (16.3″ × 1.3″) Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Complete. Find spot- Dharadharapur area, Dt. Cuttack

No Colophon.

156

Dh. 95. **विभिन्न व्रत कथा**

Sanskrit Text with Oriya translation

Substance—palm-leaf, No. of folia 166 (13.5″ × 1.4″) Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition— good Incomplete, Find-spot- Ranapur area, Dt. Puri

Topics— सावित्री व्रतकथा, सत्यनारायण व्रतकथा, कालिकापुराणोक्ता शुक्ला-नवमी व्रतकथा । दूर्वाष्टमी व्रतकथा । उमामहेश्वर व्रतकथा (It is celebrated on भाद्रपूर्णिमा) वरलक्ष्मी व्रतकथा, गुरुपञ्चमी व्रतकथा, (Oriya) कालमाधवीये

Digitized by PPRACHIN, SOA

जन्माष्टमी व्रतकथा, भविष्योत्तरे सत्यनारायण व्रतकथा, विनायक व्रतकथा, देवीपुराणे मङ्गलसंक्रान्ति व्रतकथा, विष्णुधर्मोत्तरे सावित्री व्रतकथा, अनन्त व्रतकथा। (Oriya)

No colophon.

157

Dh.61. **पूजाविधिः**

Substance— Palm leaf, No of folia 114 (15.5" × 1.2") Character—Oriya. Date of copy is not given. Condition— bad, worm eaten and some on folia are broken, Incomplete. Find spot—Baripada Museum Dt. Mayurabhanja, Orissa

Topics— विष्णुपुराणोक्त श्री गोपाल पूजाविधिः, शालग्राम पूजाविधिः, पञ्च-पूजाविधिः, संक्षिप्तशिव पूजाविधिः, संक्षिप्त गणपति पूजाविधिः, आसनशुद्धिः। (Incomplete)

No colophon.

158

Dh. 61. **विभिन्न व्रत प्रकरणम्**

Substance— Palm leaf. No of folia 88 (16.5" × 1.3") Character—Oriya. Date of copy is not given. Condition-not so good. Complete, Find spot— Baripda Museum Dt. Mayurabhanja, Orissa

Topics— वैशाखमासकृत्य, ज्येष्ठ शुक्लतृतीयायां रम्भाव्रत, ज्येष्ठशुक्ला निर्जला एकादशी, रथयात्रा, श्रावणशुक्लैकादश्यां दधिव्रत, भाद्रमासकृत्य, भविष्यपुराणे हरि-तालिकाव्रत, भाद्रशुक्ल चतुर्थ्यां वरदचतुर्थीव्रत, गणनाथव्रत, नीलाद्रिपतेः पार्श्वपरिवर्तन विधिः, अनन्तव्रत, जिताष्टमी, उ० सप्तमी, दुर्गोत्सवविधि, नवरात्रि, कुमारीपूजाविधि, महाष्टमी व्रतप्रकरण, अपराजिता दशमी, कार्त्तिकमासकृत्य, मार्गशीर्षमास कृत्य, प्रथमा-ष्टमी, पौषमासकृत्य, माघस्नान, माघसप्तमी, माघशुक्लाष्टमी भीष्माष्टमी वा, रटन्ती चतु-

Digitized by PPRACHIN, SOA

दशी, फाल्गुन कृष्णाएकादशी, शिवरात्रि, चैत्रमासकृत्य, रामनवमी, स्नानोत्सव निर्णय-विधि, चन्दनयात्राविधि, वनयागविधि, द्वादशयात्रा विधि, वञ्जुलीव्रत etc.

No colophon.

159

P. 64. **विभूतियोगः** and **मधुसूदनमन्त्र विधिः**

Substance— Palm leaf, No of folia 85 (8.5"×1.5") Character-Oriya, Date of copy is not given, Condition- very bad, worm eaten Complete, Find spot- Baripada Museum, Dt. Mayurabhanja, Orissa

No colophon.

160

P. 24 **विरजा माहात्म्यम्**

Substance— Palm leaf. No of folia 189. (12.6"×1.4") Charecter—Oriya, Date of copy is not given. Condition—not good. Complete, Find spot—Puri town, Dt. Puri

Beginning— श्री गणेशाय नमः श्री विरजस्यै नमः

हिमाद्रे रुत्तरे भागे दिव्योद्याने महावने
माणिक्यमण्डपे रम्ये दिव्यगन्धसमन्विते ॥

End— इति श्री ब्रह्माण्डपुराणोत्तरखण्डे विरजामाहात्म्ये विमुक्तेश्वर महिम-कथनं नाम एकोविंशोऽध्यायः । विरजाक्षेत्रमाहात्म्यं समाप्तम् ।

No colophon

161

Dh. 17(o) **विश्वामित्रकल्पः**

Substence— Palm leaf, No of folia 15 (15.7"×1.5") Character

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Date of copy is not given, Condition—not good, Complete. Find-spot-not known.

Topics— विश्वामित्रकल्पे सावित्री कल्पे साधारणः प्रथमपटलः । विश्वामित्र प्रोक्ते प्रयोगविधि नाम द्वितीय पटलः । + × × शाप निग्रहो नाम षष्ठःपटलः । विश्वामित्र प्रोक्ता सर्वलोमगायत्री गायत्रीमुद्रा समाप्ता । विश्वामित्रप्रोक्ता सहस्रनाम कल्पः । नामत्रय कल्पः ।

No Colophon

162

Dh. 19 **विष्णुभक्ति चन्द्रोदयः**

By नृसिंहारण्य महामुनि

Substance—Palm leaf. No of folia 142 (17.3"×1.5") Character—Devanagari, Date of copy is not given. Condition worm eaten Complete, Find spot-Cuttack, Orissa

Beginning— श्री परमात्मने नमः

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम्
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ।

नमोभगवते श्री मङ्गलेश्वर श्रीमद्दिव्यलक्ष्मीनृसिंहाय ।

वन्दे श्रीमन्नृसिंहेशं पुण्यारण्यं गुरूत्तमम् ।
श्रीसाममन्त्रराजञ्च वैष्णवान् हार्दसिद्धये ॥

आविर्बभूव लोकेऽस्मिन् सद्भक्त्याह्लाददायकः ।
श्रीविष्णुभक्तिचन्द्रोयं विष्णुप्रेमाब्धिवर्धनः ॥

× × ×

स्मृत्वा प्रणम्य चाद्री गुरुं श्रीविष्णुभक्ति चन्द्रोदयम् ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

End— श्री विष्णुभक्ति चन्द्रोदयः सट्षोडश कलायुतः
सेव्यतां सेव्यतां सम्यक् भगवद्भक्तिवर्द्धनः ।

× × ×

नृसिंहारण्य इति ख्यातो विष्णुधर्म प्रकाशकः
विचार्य विष्णुशास्त्राणि चक्रे ग्रन्थं महामुनिः ।

इति श्री नृसिंहारण्य महामुनि विरचिते श्री विष्णुभक्ति चन्द्रोदये षोडशकला-प्रकरणम् ।

No Colophon.

163

Dh 127 **वृषोत्सर्ग विधिः**

By दक्ष

Substance—Palm leaf. No of folia 41 (15″×1.5″) Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition— good, Incomplete (up to अनड्वाह दान) Find-spot—Dharadharapur area, Dt. Cuttack.

Beginning— श्री गणेशाय नमः

अथ दक्षोक्त वृषोत्सर्ग विधिः ।

एकादशाहे प्रेतस्य यस्य नोत्सृज्यते वृषः ।
अपि प्रेतत्वमाप्नोति दत्तैः श्राद्ध शतैरपि ॥

No colophon.

There are 80 folia towards the end of the manuscript containing 15 chapters of Kāṇvasaṁhitā.

164

Dh.191. **शतरुद्र विनायक कल्पादयश्च**

Substance – Palm leaf. No of folia 29 (15.5″×1.5″) Character—

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Date of copy is not given, Condition good, Complete, Find-sopt Sakhigopal. Dt. Puri.

No colophon.

It contains some other subjects named एकाक्षरकोषः, लिङ्गपुराणोक्तिजव्रतकथा, सङ्कटतारिणी स्तोत्र, आदित्यपुराणोक्त उद्यापनविधि, विष्णुसहस्रनामशापोद्धार विधिः। etc. towards the end of the manuscript.

165

T. 13. शारदाशारदार्च्चन पद्धतिः

By गोदावर मिश्र

Substance—Palm leaf, No of folia 83 (13.5″×1.5″) Character-Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Complete. Find spot—Bhubaneshwar, Dt. Puri

Beginning— श्री दुर्गायै नमः

गुरुं गणपतिं नत्वा संहिताद्युक्तसत्क्रमात्
क्रियते शारदायाश्च शारदर्च्चन पद्धतिः।
देवालिमौलिनीलाश्म रश्मिभृङ्गकुलाकुले
देवि त्वच्चरणाम्भोजे रमतां मामकं मनः॥

राजकौत्सवंशभूषणमणिं नानागुणिग्रामणीं
कुक्षाताराणव तारणैकतरणिं शिष्यौघ चिन्तामणिम्।
सद्विद्या विपणि सुबोधसरणि विप्राग्रणीं मौग्दं
तातं श्री बलभद्रसञ्ज्ञममलां तामण्णपूर्णां प्रसूम्॥

End— नाना पुराण वचनानि मिथो विरुद्धा-
न्यालोच्य तानि गुणमुख्यतया विचार्य।
निर्माय शिष्टमत संस्कृतपद्धतिं तु
गोदावरोऽर्पयति पादतले शिवायाः॥

इति श्री गोदावर महापात्र विरचिता दुर्गाशारदुत्सव पूजाक्रम संस्कृत पद्धतिः समाप्ता।

Digitized by PPRACHIN, SOA

Authorities quoted—

ईशानसंहिता, भविष्योत्तरं, दुर्गाकल्प, कालिकापुराण, गृह्यसूत्र, शाश्वतसंहिता, दुर्गोत्सवः ।

No colophon.

N. B:- Sraddha paddhati is written on folia 84 to 115 and कुष्माण्डदानविधिः is written on folia 116 and 117.

166

T. 27 **शारदाशरदर्च्चन पद्धतिः**

By गोदावर मिश्र

Substance—Palm leaf, No of folia 81 (15.9"×1.2") Character—Oriya. Date of copy is not given. Condition— wormeaten on both the sides, Incomplete, Find spot-Ranapur area, Dt. Puri

This manuscript does not contain the first verse of the मङ्गलाचरणम् as found in T. 13 noted above.

No colophon.

167

Dh. 29 **श्राद्धविधिः**

Substance— Palm leaf, No. of folia 102 (8.8"×1.6") Character Oriya, Date of copy is not given, Condition good Complete, Find spot—Kodala Athagarah, Dt. Ganjam.

No Colophon.

168

Dn. 192 (a) **श्राद्धकल्पसूत्रम्**

According to कात्यायन

Substance—Palm leaf, No. of folia 35 (14."× 1.1".) Character--

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Date of copy is not given, but the old scripts are very old Condition-bad, both the sides worm eaten, Incomplete, Find spot-Bhubaneswar, Dt. Puri.

Topics— पार्वण श्राद्धपद्धति: By मिस्रुमिश्र, जलपूजा विधि:, श्रौताधान पद्धति: ।

No colophon.

169

Dh 41(a)

श्राद्धप्रदीप:

By दिव्यसिंह महापात्र

Substance—Palm leaf, No of folia 45, (14.5"×1.5") Character-Oriya. Date of copy is not given, Condition good. Incomplete, Find spot— Ranapur, area Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नम:

प्रणम्य देवं श्रीकृष्णं भवानीशङ्करावपि ।
तन्यते श्राद्धदीपोऽयं दिव्यसिंहेन धीमता ॥

End—इति श्री दिव्यसिंह महापात्रेण विरचित: श्राद्धदीप: समाप्त: ।

वत्सगोत्रे समुत्पन्नो दिव्यसिंहाभिध: सुधी:
श्राद्धदीपाभिधं ग्रन्थं चकार विदुषां मुदे ।
पुरारिप्रिया पार्वती शं करोतु ।

Topics — श्राद्धविचार:, क्रियाकर्तृ विचार:, अष्टकादिश्राद्धम्, सपिण्डीकरण श्राद्धम, साम्वत्सरिकश्राद्ध निर्णय: etc.

Authorities quoted—

आदित्यपुराण, आपस्तम्भ, कालादर्शकार, कात्यायन, गोभिल, गौडा, गौतम, छन्दोगपरिशिष्ट, तन्त्ररत्न, देवल, नारायण, बृहस्पति, पैठीनसी, हरिचरण, मुकुन्ददीक्षित, मरीचि, मञ्जरीकार, मात्स्य, माधवाचार्य, लक्ष्मीधर, लघुहारीत, व्यास:, विष्णुधर्मोत्तर, विज्ञानेश्वर, विष्णुपुराण, विष्णु, विप्रमिश्र, शङ्ख, शुद्धिचन्द्रिकाकार, शूलपाणि, वशिष्ठ,

Digitized by PPRACHIN, SOA

वराहपुराण, विवेक.विद्याकर वाजपेयी, वायुपुराण, विश्वनाथमिश्र, स्कन्दपुराण, सुमन्तु, स्मृतिरत्नमाला, सिंहवाजपेयी, हारीतभाष्यकार।

No colophon.

170

Dh. 9.(a) **श्राद्धदीपः**

त्रिविक्रमसिंह महापात्र

Substance— Palm leaf, No of folia 57. (16."×1.5") Character Oriya, Date of copy is not given, Condition bad, some folia are broken. Complete, Find spot Gada mānitri, Dt. Puri

Similar to No 169. No Colophon.

It contains some व्रतकथा named सुदशाव्रतकथा, रविनारायण व्रतकथा at the beginning of the manuscript.

171

B. S. 3 **श्राद्धपद्धतिः OR सपिण्डीकरण श्राद्धम्**

Substance— Palm leaf, No of folia 59 (9.2"×3.3") Character-Bengali. Date of copy is not given, Condition good. Complete, Find spot- Kujanga area, Dt. Cuttack

No colophon.

172

Dh.20(b) **श्राद्ध पद्धतिः**

Substance—palm leaf. No. of folia 65 (13.2"×1.2")

Digitized by PPRACHIN, SOA

Character Oriya, Date of copy is not given. Condition not so good Incomplete, Find-spot Balangir patna, Dt. Balangir.

No colophon.

173

Dh 158. **शाद्ध पद्धतिः**

Substance—Palm leaf, No of folia 99. (10."×1.2") Character—Oriya, Date of copy is 45 th Anka of Ramachandra Deva III or 1854 A.D. Complete.Condition-good. Find spot Dharadharapur-area. Dt. Cuttack

No Colophon—समस्त रामचन्द्रदेवङ्क ४५ अङ्क कन्यमास ९ दिन आश्विन्य कृष्ण पञ्चमी बृहस्पति वासरे वेलप्रहरक समयरे ए पोस्तेक सम्पूर्ण।

Post colophon - ए पोस्तक तिहिडाशासन रामचन्द्र पाणिगाहीङ्कर । ए पोस्तक लेखनकार वाइ पाणिग्राहीङ्क नाति भोवनि पाणिग्राहीङ्कर । श्री लक्ष्मीनृसिंह रक्षा करिवे भोवनिकि।

170

Dh.152. **शिव पूजाविधिः or शैव चिन्तामणिः**

Substance—Palm leaf. No. of folia 179. (11.1"+1.5") Character Oriya, Date of copy is not given. Condition good. Incomplete. Find spot—Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— ॐ नमः शिवाय

अथ शिवपूजाविधि लिख्यते ।

प्रणम्यादौ महादेवं हिमवत्तनया पतिम् ।
शैवचिन्तामणि ग्रन्थो वक्ष्यते मुक्तये नृणाम् ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

देवं नत्वा करिवरमुखं सर्वविघ्नापहारं
सर्वेशानं त्रिनयनमथो चन्द्रखण्डाङ्कितं हि ।
वक्ष्ये शैवागम जलनिधिप्लावमीशाननत्त्वं
प्रादुर्भाव· वृजिनकलहं शैवचिन्तामणिं च ॥

End — आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजाकर्म न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥
इति शिवपूजाविधिः ।

No colophon.

175

Dh. 22

शुद्धि चान्द्रिका

By कालिदास चयनी

Substance—Palm leaf, No. of folia 12, (12.8"×1.5") Character- Oriya, Date of copy is not given. Condition—not good, Incomplete, Find spot— Puri. Orissa.

Beginning— मन्वादिशास्त्रमतसंचयालयः
श्रीकालिदासाभिधधीर चन्द्रमाः ।
तेने सुधाविन्दु विवृद्ध्य शोचक
ध्वान्तान्धलोके-क्षणशुद्धिचन्द्रिकाम् ॥

No colophon.

176

Dh. 48.

शुद्धिचान्द्रिकाटीका

By शान्ति रथ

Substance—Palm leaf, No of folia 10to17 (1st to 9th lost)

Digitized by PPRACHIN, SOA

(13.9"×1.3") Character- Oriya, Date of copy is 24th Aṅka year of Rāmachandra Deva of Orissa, or 1837 A.D. Incomplete, Condtion good, Find-spot—Gaḍamśāṇitrī, P.S. Beguṇia, Dt. Puri.

End — कालिदासेन पूर्वार्थो निर्मिता शुद्धिचन्द्रिका
व्यक्तार्था हि हितार्थं च कृता शान्तिरथेन या ॥

या कालिदासेन कृता महत्तरा
मता बुधानां किल शुद्धि चन्द्रिका ।
सा साम्प्रतं शान्तिरथेन निर्मिता
नृणां हिताय स्फुट शुद्धिचन्द्रिका ॥

इति शान्तिरथ कृतौ शुद्धिचन्द्रिकाटीका समाप्ता ।

Colophon — श्रीरामचन्द्र नृपतेः कुलपद्मसूर्य्य-
स्याङ्के चतुर्विंशदङ्के परिपूर्णभावम्
प्राप्ता सुधीगण दिने सुकुहूतिथौ च
श्री शुद्धिपूर्वकथिता खलु चन्द्रिकेयम् ॥

177

Dh. 68

शुद्धिचन्द्रिका

of कालिदास चयनी with टीका By विद्यावागीश

Substance— Palm leaf, No of folia 33 (8.5"×1.2") Character— Oriya, Date of copy is the reign of Vira Keśari Deva who ruled Orissa on 1736—1793 A.D. Complete, Condition—worm-eaten, Find spot— Ranapur area, Dt. Puri.

No colophon.

इति श्री कालिदासकृता शुद्धिचन्द्रिका समाप्ता ।

विद्यावगीश लिखिता सम्पूर्णा शुद्धिचन्द्रिका
प्रीतये लिङ्गराजस्य सर्वदेकाम्रवासिनः ॥
श्री वीरकेशरि नृपस्य

Digitized by PPRACHIN, SOA

178

B.S. 20 **शुद्धितत्त्वम्**

With short notes, by रघुनन्दन भट्टाचार्य, son of हरिहर भट्टाचार्य

Substance—Palm leaf, No of folia 168 (13.5"×3.1") Character—Bengali, Condition—good, Complete, Date of copy is not given Find-spot— Kujanga area, Dt. Cuttack, Orissa

Beginning— ॐ नमो × × ×

प्रणम्य सच्चिदानन्दं जगतामीश्वरं हरिम्
शुद्धितत्त्वानि तत्प्रीत्यै वक्ति श्रीरघुनन्दनः ॥

End— इति वन्द्यघटीय श्री हरिहर भट्टाचार्यात्मज श्री रघुनन्दन भट्टाचार्य विरचिते स्मृतितत्त्वे शुद्धितत्त्वं समाप्तम् । श्री कृष्णायनमः ।

The contents of the work are given at the beginning of the manuscript.

179

Dh. 39 **शुद्धिदीपिका**

By महीत्तापनीय श्रीनिवास, with a tika named शुद्धिदीपिका विवरणम्, by गोविन्दानन्द क वेकङ्कणाचार्य

Substance—Palm leaf. No of folia 152 (16."×1.5") Character—Oriya, Date of copy is not given, Complete. Condition— not good. Find spot—Bhubaneswar. Dt. Puri

Beginning— श्री गणेशाय नमः

जगतिख्यात गुणौघो हरिरवतीर्णोऽंशतः पृथिव्याम्
श्रीमद्गणपतिःभट्टो ज्योतिर्विद्यासु मार्त्तंडः ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

कविकङ्कण पण्डितः प्रीत्या सहितस्तस्य सुतोऽथ कौमुदीम् ।
तनुते किल शुद्धिदीपिका विलसत्तत्वार्थ विवेचनाविधि ॥

End— सुविस्तरे ज्योतिषि यत्ततोद्धृतं
समस्तकर्म व्यवहार दर्शिकाम्
श्री श्रीनिवासेन समीक्षितामिमां
हे सत्तमाः पश्यत शुद्धिदीपिकाम् ॥

इति श्री महत्तारतीय पण्डित श्री श्रीनिवास विरचितायां शुद्धिदीपिकायां यात्रानिर्णयो नामाष्टमोऽध्यायः ।

इति श्री गोविन्दानन्द कविकङ्कणाचार्य्य कृतायां शुद्धिदीपिकायां टीकाविवरणं समाप्तम् । समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

No colophon.

180

Dh. 58.

शुद्धि दीपिका

By श्रीनिवास, with Oriya prose translation.

Substance—palm-leaf, No. of folia 108 (16.2"×1.3") Character—Oriya, Date of copy is the time of Jadunathe Bhanja of Mayurabhanja, in 1852 or 1853 A.D. Complete, Condition—not good, worm-eaten. Find-spot- Baripada Museum, Dt. Mayurabhanja. Orissa.

Beginning— श्री गणेशाय नमः, श्री सूर्य्याय नमः ।

तृष्णातरङ्ग दुस्तर संसाराम्भोधि लंघने तरणिः ।
उदयवसुधाधरारुणमुकुटमणिः पातु वस्तरणिः ॥

Oriya translation—

तरणि ये सूर्य से तुम्भमानङ्क रक्षा करन्तु । ग्रन्थ आद्य मङ्गलनिमित्ते कल्याण कहिला । सूर्य्य केमन्त,उदयपर्वतर, अरुणवर्ण, मुकुटमणि अटर । तरणि बोलि सूर्य्यङ्क, कहि नौका कहि । पुणि से सूर्य्य केमन्त, तृष्णा ये आशा से तरङ्ग हेला, तेणु करि दुस्तर होर संसार ये समुद्र तहिंकि तरणि होइले ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

End— मु ये श्रीनिवासाचार्य्य, विस्तार ज्योतिषरत्नरु व्यवहार दीपिका कलि । पर भलकु हेय न करिव ।

इति श्री महीनारवीय पण्डित श्रीनिवास विरचितायां यात्रानिर्णये नामाष्टमोऽध्यायः ।

Colophon.— सालस्यग्र नृप यदुनाथं
... ... जिवे पञ्च समाप्तौ ग्रन्थः ।
वासुदेव शर्मणः । खुण्टापुरी ग्रामवस्थित ए पुस्तक रामर

181

Dh. 13?. **शुद्धिदीपिका**

By श्रीनिवास, with अर्थ कौमुदी टीका,
By कविकङ्कण गोविन्दानन्द

Substance—Palm leaf, No of folia 58 (16.1"×1.5") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Complete. Find spot- Dharadharapur area, Dt. Cuttack.

No colophon. Same as in No 173

182

Dh. 193 **शुद्धिदीपिका**

By श्रीनिवास

Substance— Palm leaf, No of folia 93 (15.1"×1.1") Character-Oriya, Date of copy is not given, Condition -not good, worm-eaten on both the sides. Complete, Find spot— Bhubaneswar, Dt. Puri

No Colophon. Same as in No 174

There are some folia, containning Vaidya Sātra, towards the end of the manuscript.

Digitized by PPRACHIN, SOA

183

Db.194. **शुद्धिदीपिका**

By श्रीनिवास

Substance—Palm leaf. No. of folia 58 (12.1" × 1.5") Character—Oriya, Date of copy is not given. Condition good, Complete, Find-spot- Dharadharapur area, Dt. Cuttack.

No colophon Same as in No 179

There is another subject named केरलदशा towards the end of the manuscript.

184

Dh·31(c) **शूल्बभाष्यम्**

Substance— Palm leaf. No of folia 55. (16." × 1.3") Charecter—Oriya, Date of copy is not given. Condition—not good. Complete, Find spot—Ranapur area, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नमः

रज्जुत्रिगुणयाक्षेत्रा क्षत्राणि संक्षिपन् यजः ।
यस्तं विश्वसृजं नत्वा शुल्वभाष्यं समारभे ।

No colophon.

185

Dh. 86. **शूद्राह्निकपद्धतिः**

By गोपीनाथ पट्टनायक

Substence— Palm leaf, No of folia 52 (12.7" × 1.1") Character Oriya, Date of copy is not given, Condition—not good, Complete. Find spot Gaḍamāṇitrī. Dt Puri

Digitized by PPRACHIN, SOA

Beginning— श्री रुद्रशरणम्

तितिक्षुणा निस्पृह मानसेन वर्णाश्रमाचार समुद्यतेन।
यः प्राप्यते शुद्धतरेण पुंसा नारायणं तं सततं स्मरामि ।

श्री दामोदर पट्टनायक सुतोऽनल्पै गुणैरन्वितो
विख्यातो भरतो व्यराजत सदा सम्भावितो भूभुजा ।
तस्य श्रीपति-पाद चिन्तनरतस्याज्ञाविशेषावृतो
गोपीनाथ कृती तनोति विशदां शूद्राह्निकीं पद्धतिम् ॥

End— इति शूद्राह्निक पद्धतिः समाप्ता ।

No colophon.

186

Dh. 33.

शैव कल्पद्रुमः

By लक्ष्मधर मिश्र

Substance—Palm leaf. No of folia 149 (15.3″×1.1″) Character—Oriya, Date of copy is 38th Aṅka of Virakeśari Deva I or 1766 A.D. Complete, Condition— good, Find-spot—Bhubaneswar, Dt. Puri

Beginning— श्री गणेशाय नमः

एकदन्तमुमापुत्रं गजवक्त्रं त्रिलोचनम् ।
चन्द्रार्द्धधारिणं वन्दे सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

× × ×

श्रुतिस्मृतिपुराणानां भारतागमधर्मिणाम्
भूयात्सुधाकरश्रीजाच्च शैवकल्पद्रुमोदयः ॥

End— एकाम्रे भुवनेश्वरप्रियकरे चक्रेश्वरं यः पुरा
शालग्राम्य मुकुन्दनारायणपति कौन्तादाय द्योतयन् ॥

Digitized by PPRACHIN, SOA

अथ स्नाह त्रय गत शङ्करतनुः साक्षादिति प्रायहीत्
पादौ यस्य विलोक्य भालनयनः श्रीमन्नृसिंहो नृपः।
तत्पुत्रो मधुसूदनाग्रज उदग्रोजोऽस्ति हीवी शिव-
ध्यानानन्दविकाशिहृत्सरसिजः श्री रामकृष्णाभिधः।
तस्याभूत् तनयोऽस्ति हारितपति लक्ष्मीधरो मन्दधी-
स्तेनायं रचितः सतां सुखकरः श्रीशैवकल्पद्रुमः।

इति श्रीमदेकाम्र विपिन-विदित स्वर्णकूटाचल-शिखरि कन्दरोदर विनोदि शम्भुवर-त्रिभुवनेश्वरपदद्वन्द्वारविन्दमकरन्दपानतिमिरमत्तमधुकर श्रीलक्ष्मीधरमिश्र विरचिते श्रीशैव-कल्पद्रुमेऽष्टमः काण्डः।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः।

Colophon — भुवनेऽष्टिविंशाङ्के वीरकेशरिणो मघौ।
योगेश्वरेण लिखितः शैवकल्पद्रुमोदयः।
श्री शिवार्पणमस्तु।

1-7

Dh. 195

शैवकल्पद्रुमः

By लक्ष्मीधर मिश्र

Substance—Palm leaf. No of folia 44 (15.1" × 1.3") Character—Oriya, Date of copy is not given. Condition good, Incomplete, Find spot-Ranapur area, Dt. Puri

No colophon. Same as in No 186

188

P. 40(a).

शैवकल्पद्रुमः

By लक्ष्मीधर मिश्र

Substance— Palm leaf, No of folia 18? (14." × 1.") Character-

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Date of copy is 14th Aṅka year of Divyasiṃha Deva III or 1866/1867 A.D. Condition-good, Incomplete, Find spot- Ranapur area, Dt. Puri

Same as in No 186

Colophon— द्दिव्यसिंहस्य चतुर्दशाङ्के पुस्तक लिख्यते ।

189

Dh. 70

शैवार्चन चान्द्रिका

Substance— Palm leaf, No of folia 50 (12″ × 1.5″) Character— Oriya, Date of copy is not given, Condition—not good, Incomplete. Find spot—Ranapur area, Dt. Puri

Beginning— श्री गणेशाय नमः

गजाननं शारदचन्द्रमौलिं
त्रिलोचनं भोगि कलापभूषम ।
श्यामाङ्ग हस्वोदरचारुमूर्तिं
गन्धस्य हेतुं प्रणमामि शैवम ।

× × ×

नातिविस्तर भूतं मनोज्ञं
वक्ष्यामि शैवार्चन चन्द्रिकाख्यम् ।

No colophon.

190

Dh. 37.

शैवचिन्तामणिः

Substance— Palm leaf. No of folia 101 (11.5″ × 1.3″) Character—

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Complete, Find-sopt Ranapur area, Dt. Puri.

Beginning— ॐ नमः शिवाय ।

प्रणम्यादौ महादेवं हिमवत्तनया पतिम्
शैवचिन्तामणि ग्रन्थो वक्ष्यते मुक्तये नृणाम् ॥

End— इत्येवं शिवशास्त्रसंशयभिद् श्री शैवचिन्तामणि
शम्भो पादसरोरुहेऽम्बुजभवाद्यैः सेविते हर्षितः ।
शास्त्रामे शिवभक्तिरेव हृदये पुण्या सदा निश्चला
यां कृत्वामरसिद्धमानवपरा प्रापुः पदं शाङ्करम् ।

इति श्री शैवचिन्तामणौ दर्शनादि शिवरात्रि व्रतकथनं नामाष्टमः पटलः ।

No colophon. समाप्तोऽयं ग्रन्थः

191

Dh. 131. शैवचिन्तामणिः

Substance— Palm leaf, No. of folia 93 (14·8″×1.3″) Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition—good Complete, Find spot—Dharadharapur area, Dt. Cuttack.

No colophon.

श्रीमहेश्वर रक्षा करिबे प्रभाकरकु, Same as in No 190

192

Dn. 196 शैवचिंतामणिः

Substance—Palm leaf, No. of folia 91 (13·5″×1.2″) Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition-good, Incomplete, Find spot- Ranapur area, Dt. Puri.

No colophon. Same as in No 190

Digitized by PPRACHIN, SOA

193

Dh. 197

शैवचिंतामणिः

Substance—Palm leaf. No of folia 63 (13 8"×1.2") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition— good, Complete, Find spot-Gada Mānitiri, Dt. Puri.

No colophon. Same as in No 190

194

Dh 56.

शैवाचिंतामणिः

Substance—Palm leaf, No of folia 51, (13.8"×1.2") Character-Oriya. Date of copy is not given, Condition good. Incomplete, Find spot— Ranapur area, Dt. Puri.

Same as in No 190. No colophon.

195

Dh. 78.

शैव पद्धतिः

By मागुणि मिश्र

Substance—palm leaf. No. of folia 75 (14.7"×1.2") Character Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Complete. Find spot—Balangir town, Dt. Balangirpatana, Orissa.

Beginning— श्री हरये नमः।

शिवांघ्रिस्मृति मं शुद्धि चेतसा गुरुसेविना
कृतिनेयं मागुणिना लिखिता शैवपद्धतिः ।

End— इति श्री हयशीर्ष पञ्चरात्रोक्तपण्डितमागुणिविरचित लिङ्गस्थितप्रासाद-प्रतिष्ठा समाप्ता । No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

196

Dh. 113. शैवप्रतिष्ठा सार:

Substance- Palm leaf, No of folia 121 (15."×1.3") Character-Oriya, Date of copy is not given. Condition worm-eaten, Incomplete, Find-spot Bhubaneswar, Dt. Puri.

Topics— आत्मशुद्धि, भूतशुद्धि, अर्घ्यविधि, मङ्गलांकुरारोपण विधि, मन्त्राग्नि-पूजा, लिङ्गादि प्रतिष्ठाविधि: etc.

No colophon.

197

Dh 161. शौचाचार:

Substance—Palm leaf, No of folia 112. (16.6"×1.4") Character—Oriya, Date of copy is not given. Condition-good. Complete. Find-spot-Dharadharapur area. Dt. Cuttack

Beginning—श्री गणेशाय नम:, श्री सरस्वत्यै नम:, नमो भगवते वासुदेवाय ।

अथ नो हिमवच्छृंगे देवदारु महावने
व्यासमेकाग्रमासीनं पप्रच्छुऋषय: पुरा ।
मनुष्याणां हितं धर्मं वर्त्तमाने कलौ युगे
शौचाचारं यथावृत्तं वद सत्यवतीसुत !

No colophon—

198

Dh.216 सदाचार विवेक:

By वाणीदास बड़पण्डा महापात्र

Substance— Palm leaf. No. of folia 97. (15.1"+1.2")

Digitized by PPRACHIN, SOA

Character Oriya, Condition worm eaten on both the sides, Complete. Date of copy is not given. Find spot— Tulasipur, P.S. Nimāpada, Dt. Puri.

Topics—इति श्री वापीदास बडपण्डा महापात्रकृते सदाचार विवेके सूर्योदयात् पूर्व जयप्रकरणम् । सदाचार विवेके प्रथमघटिकाद्वय प्रकरणम् । द्वितीय घटिकाद्वय कृत्य प्रकरणम् । तृतीय घटिकाद्वय प्रकरणम्, चतुर्थघटिकाद्वय प्रकरणम् । अहोरात्रविहित नित्य-कृत्य प्रकरणम् । मन्त्रव्याख्या प्रकरणम् ।

No Colophon.

199

B. S. 22

सन्तान गोपालपूजा

Substance— Country made paper. No of folia 9 (11.1"×4.2") Character- Bengali. Condition good. Date of copy is not given, Incomplete, Find- spot- Kujanga area, Dt. Cuttack.

No Colophon.

200

Dh.93(a).

सर्वतोमुख पद्धतिः

Substance— Palm leaf, No of folia 11 (15.6"×1.3") Character Oriya, Date of copy is not given, Condition good, Complete, Find spot Ranapur area, Dt. Puri.

Beginning— श्रीगणेशाय नमः

अथ सर्वतोमुखस्य वेदसूत्र भाष्याणि लिख्यन्ते

End— इत्यनिरुचिता सर्वतोमुखपद्धतिः समाप्ता ।

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

201

Dh.219

स्वर्णाद्रि महोदयः

Substance—Palm leaf, No of folia 129 (12.2" × 1.2") Character—Oriya, Condition—good. Complete. Date of copy is not given Find-spot— Bhubaneswar. Dt. Puri

Beginning – श्री गणेशाय नमः, अविघ्नमस्तु ।

After of मङ्गलाचरण verses

वेदव्यास शिष्योऽसि सर्वज्ञ अपराजित ।
एकाम्रकस्य माहात्म्यं वक्तुमर्हस्यशेषतः ।

End—इति श्री स्वर्णाद्रि महोदये क्षेत्रप्रमाण माहात्म्य कथनं नाम विंशोऽध्यायः ।

No colophon.

N.B:- This work is already published is Oriya and Devanagiri characters.

202

Dh. 192.

स्मार्त्तरत्नावली

Substance— Palm leaf. No of folia 13 (14." × 1.2") Character—Oriya, Date of copy is not given. Complete. Condition – bad, worm-eaten. Scripts are illegible, Find spot—Bhubaneswar, Dt. Puri

Beginning – ॐ नमो यज्ञपुरुषाय ।

प्रणम्य श्री महादेवपादपङ्करुहद्वयम्
लिखामि शास्त्रसम्मत्या स्मार्त्तरत्नावलीं शुभाम् ॥

End— इति स्मार्त्तरत्नावल्यां मन्त्रकर्म समाप्तम् ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

Topics — पात्रघटना, कुण्डघटना, अग्न्याधानानुकूल, प्रथमाग्न्याधाने नान्दीमुखश्राद्ध, प्रथमाग्न्याधानेपुनराधान, मणिकाधानविधि, पञ्चमहायज्ञ, स्मार्त्तप्रायश्चित्तानि, अनादेशप्रायश्चित्तहोम, प्रातः होमविधि, पिण्डपितृयज्ञ, पक्षादिकर्म, प्रवासप्रवेशविधि, प्रवेशधर्म, नवान्नभक्षण विधि, मन्त्रकर्म ।

No colophon.

203

Dh. 26

सूरिसर्वस्वम् (प्रथमखण्ड)

By गोविन्द कविभूषण सामन्तराय

Substance—Palm leaf, No of folia 97 (11.3" × 1.3") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Complete, Find spot— Ranapur area, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नमः

ब्रह्मेन्द्रलक्ष्मी नयनैकधामा सत्सच्चिदानन्द पवित्रनामा ।
व्यक्तिर्जगत्काविदशेषसेव्या नित्यात्मसत्याहतशक्तिरव्यात् ॥

यत्पादपाथोजरजोऽभिषिक्तः सर्वाशुभं हन्ति जनो जगत्याम्
प्राप्नोति चानन्दमयं पुमांसं तमीश्वरं श्रीगुरुदेवमीडे ।

आसीत् श्री विश्वनाथः प्रवरतरभरद्वाज वंशावतंसः ।

× × ×

श्रीमानसामन्तरायेत्यधिपदपदवीं मास्थितः ख्यातकीर्त्तिः ।

तदात्मजन्मा किल रामशर्म्मा प्रीत्यै हरेस्त्यक्त समस्तकर्म्मा ।
गृहाश्रमस्थोऽपि महाविरक्तः सतां मतः संसदि कृष्णभक्तः ॥
तत्पुत्रोऽखिलगद्यपद्यरचना चातुर्य्य चिन्तामणिः
शान्तात्मागमशास्त्रतत्त्वविदुषां संसत् सदा चाग्रणीः ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

भूभृद्भूसुर मञ्जन्नेषु सुहृदां प्रेमप्रमोदास्पदं
गोविन्दः कविभूषणो विजयते सामन्तरायोत्तरः ।

ग्रन्थास्तेनारभ्यते मन्त्रचेतः-
मन्त्रोपार्थं सूरिसर्वस्वनामा ।
सर्वार्थानां साधने साधकानां
साक्षात्क्ष्मायां कल्पवृक्षानुकल्पः ।

End —इति श्री गोविन्द कविभूषण सामन्तराय विरचिते सूरिसर्वस्वे गुरुशिष्यादि-क्रियाकथने नाम एकादशः संग्रहः ।

Topics— ग्रन्थमुख निबन्धानुदित दीक्षास्वरूप कथनं नाम प्रथमः संग्रहः । दीक्षाङ्ग भूत मण्डपादि स्वरूप निरूपणं नाम द्वितीयः संग्रहः । कुण्डादिनिरूपणं नाम तृतीयः-संग्रहः । कालशुद्ध्यादि मन्त्रानुकूल्य कथनं नाम चतुर्थः संग्रहः । चक्रसिद्धि निरूपणं नाम पञ्चमः संग्रहः । दीक्षाङ्गसमुद्देशो नाम षष्ठः संग्रहः । मण्डलविभागो नाम सप्तमः संग्रहः । कलशार्च्चनविधिर्नामाष्टमः संग्रहः । वह्निजनन विधिर्नाम नवमः संग्रहः । होमविधिर्नाम दशमः संग्रहः । मन्त्रदीक्षा विधिर्नाम एकादशः स ग्रहः ।

Colophon - लेखकेनास्ति दूषः
ए पुस्तक सिकेड चन्द्रशेखरपुर रहुणि महाजनमानमिश्रङ्कर । शुभमस्तु +

204

Dh 27.

सूरिसर्वस्वम्

By गोविन्दकविभूषण सामन्तराय

Substance— Palm leaf. No of folia 201. (14.5" × 1.5") Charecter—

+ The following topics are found in chapters 12th to 21st of the 1st part of 'Sūri Sarvasva' printed by the Asiatic Society of Bengal in 1912.
पुरश्चरणनिर्द्देशोनाम द्वादशः संग्रहः । मालानिर्णयो नाम त्रयोदशः संग्रहः । जपादिप्रयोग-विनिर्णयो नाम चतुर्दशः संग्रहः, मन्त्रसिद्ध्युपाय पुरश्चरण विधिर्नाम पंचदशः संग्रहः । निशान्तकृत्य नाम षोडशः संग्रहः, प्रातःकृत्य नाम सप्तदशः संग्रहः, निशान्तकृत्यं नाम अष्टादशः संग्रहः, पूजनाङ्ग व्यवस्था निरूपणं नाम ऊनविंशतिः संग्रहः, प्रातःकृत्ये सन्ध्यार्च्चनं विधिर्नाम विंशः संग्रहः,सर्वग्रहमोक्षणं नाम एकविंशः संग्रहः ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Date of copy is not given. Condition— good. Complete, Find spot—Ranapur area, Dt. Puri.

Beginning— राजोपचारे रथ ये नियुक्ताः-
स्तौर्यत्रिकाद्यैः कृतिनश्च ये स्युः ।
ये स्तावका भक्तजनाश्च विष्णो-
स्तांस्तान्नियोक्ष्यागुन एव तत्र ॥

End— आसीत् भरद्वाजकुल प्रसूतो द्विजोत्तमः कश्चन दुर्गदासः ।
यदीयसम्बन्धमवाप्य विप्रा इहोत्कले श्लाघ्यतमा बभूवुः ॥
स च स्वनाम्नाकृत शासनैकं संस्थाप्य बन्धूनिह सोऽपि तस्थौ ।
देवर्षिपूर्वान्निवसन्निह यज्ञस्वाध्यायसन्तानवितानयोगात् ॥

तस्यात्मजोऽभूत किल विश्वनाथो भक्त्या च यस्तोषितविश्वनाथः
संप्राप्य भूपात् कविचन्द्रसंज्ञां सम्मानितोऽभूत् कवि पण्डितानाम् ॥
काले प्रविष्टं नृपमानसिंहं पाश्चात्यभूपैः सह वर्त्तमानम् ।
अतोषयत् काव्यरसोपहारैर्हारैरिवात्युज्ज्वलरत्नसारैः ॥

नीत्वा सहामुं स नृपः स्वदेशं सम्मेलयामास च पत्तिशाहा ।
प्राज्ञः कवीन्द्रः परिचायितोऽसौ कालं कियन्तं च निनाय तत्र ।
ततो धनैर्भूमि विभूषणाद्यैः स सत्कृतो हास्तिन पत्तिशाहा ।
स्वदेशमागात् प्रथितप्रतिष्ठस्तिष्ठन्ति यत्र स्वजनास्स सर्वे ॥

कृतालयश्चालपुरेऽथ काश्चित् समाः समास्थाय सुखं स्वगेहे ।
दैवान्मृतायां निजधर्म पत्न्यां पुनः परां कांचित्थोदुवाह ।
जातेऽथ तस्यां तनयद्वयेऽसौ पूर्वात्मजानामनुमाय तेषां ।
सापत्न्यबुद्ध्याऽपरितोषमीर्ष्यां समर्पयामास गृहं च तेभ्यः ॥

स्वयं पृथक् भूय सहात्मजाभ्यां पत्न्या च तत्राप्यभिनन्दमानः
प्रतापपूर्वं किल रामचन्द्रपुरं पुरा शासनमध्युवास ।
सम्बन्धिभिस्तत्र निवासिविप्रैः सुसत्कृतोऽसौ कविचन्द्रनामा ।
कियत्समान्ते समवाप मुक्तिं योगेन हित्वा किल भौतिकं सः ।

तद्दायदेहेन सहास्य पत्नी प्रविश्य वाहनं स्वपुर्विहाय ।
जगाम सालोक्यमथ स्वभर्त्तुः संत्यज्य पुत्रा बु नीतमात्रौ ॥
तौ चाथ पुत्रावपनीत शोकौ स्वबन्धुभिः प्रेतकृतिं स्वपित्रोः ।
समाप्य दिग् देश विवेशशून्यावाश्वासितौ बन्धुभिरूचतुश्च ॥

Digitized by PPRACHIN, SOA

कालेऽथ तस्मिन्नृपतेरमात्यः श्रीदास विद्याधर नामकोऽभूत् ।
तौ बालकौ कालवशादुपेत्य विज्ञाप्य गोत्रं श्रयतेस्म तामुम् ॥
पितुः समक्षा मनुशीलयन् स श्री मन्त्रिराज स्तदुभौ ररक्ष ।
तदाश्रयाद्भूरि समृद्धिभाजौ सुखेन तौ तस्थतुरल्पकालम् ॥

ततो महादेव महेश्वराभिधाववाप्तविद्यौ धृतयौवनावुभौ ।
यदा निजोद्वाह समुद्यतौ मुदा बभूवतुः क्षोभमवापतुस्तदा ॥
जघान राजा कपटेन मन्त्रिणं तं दासविद्याधरमज्ञशिक्षया ।
तदीयपत्नी भयशोक विह्वलामुभावुपादाय परिच्छदैः सह ॥

ततोऽस्य जामातु रुपेत्य निवृत्तं समक्षे तां वक्रमहीपतेश्च तौ ।
निवेदयामासतु रार्तिवत्तदा तदीयभर्तु र्विपदं यथाश्रुताम् ॥
स वक्रदुर्गाधिपतिश्च सादरं ररक्ष तां मातरमात्मयोषितः ।
अथोड्रदेशे तदनन्तरं महानुपप्लवोऽजायत लोकदुःसहः ॥

ततः प्रभृत्येव सुखं सहोदरौ समूषतुस्तत्र च वक्र भूभुजा ।
अवाप्य वृत्तिं कविचन्द्र पुत्रकावमात्य पत्यापि तथा समर्चितौ ॥
गते कियत्येवमनेहसि स्वयं स्वतुल्यसम्बन्धिकुलं मलभ्य तौ ।
विवाहकृत्ये विधुरौ बभूवतुः समृद्धिमाप्तामपि नो ननन्दतुः ॥

ततस्तयोरग्रज एकएव सहोदरं तत्र विहाय निर्गतः ।
विलोक्य सोपद्रवमुड्रनीवृतं निवृत्तधीर्वाणपुरान्तरं ययौ ॥
अथो कनीयानिह वक्रदुर्गपप्रसादलब्धाशय एव तस्थिवान् ।
तदीयदेशस्थितविप्र कन्यका मतुल्यकुल्यामपि पाणिनाग्रहीत् ॥

महेश्वराख्यस्य च तस्य वंशजा बभूवुरार्य्या बहवो हि ये पुरा ।
तदन्वये कोऽपि कनिष्ठवंशकृत् बभूव भूदेववरः त्रिलोचनः ॥
तस्यात्मजः कृष्णसमाख्ययाभवत्स पद्मनाभस्तनयस्ततोऽभवत् ।
तदात्मजो दाशरथि र्बभूव यः सामन्तरायोत्तरनामतः श्रुतः ॥

श्री विश्वनाथस्तनयोऽस्य चाभूत्सामन्तरायं पदमाप्तवान् यः ।
प्रापात्मजं भाग्यवशेन रामचन्द्रं वृहत् पण्डितनामधेयम् ॥
तदात्मजोऽहं महत मनुग्रहात् विचार्य्य शास्त्र स्मृति तन्त्रसंहिताः ।
चकार यद्यत् सदसत्तदस्तु वा सतां मुदे स्यात्तृषिते जलं यथा ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

नमः खलेभ्यस्तु महाबलेभ्यः दोषोदये मित्रपुरोदयेभ्यः ।
न जातु यत् काव्यकथाप्रसङ्गे भूयादमीषां श्रवणावधानम् ।

End—इति श्री गोविन्दकविभूषणसामन्तराय विरचिते सूरिसर्वस्वे शेषसंग्रहो नाम चत्वारिंशः संग्रहः

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

Topics— प्रातकृत्ये सर्वोपचार निर्णयो नाम द्वाविंशः संग्रहः, प्रातः कृत्ये पूजा-मुख्याङ्ग भूतशुद्धि निरूपणंनाम त्रयोविंशः संग्रहः,पूजाङ्गनिरूपणे षट्चक्रान्त निरूपणंनाम-चतुर्विंशः संग्रहः, प्रातः कृत्यान्तर्गत मनुषङ्गमातृकाविधिः नाम पञ्चविंशः संग्रहः, मातृकाभेद निरूपणं नाम षड्विंशः संग्रहः । प्रातःकालपूजानुषङ्ग भावचतुष्टय पर्यन्त-न्यास प्रपञ्चोनाम सप्तविंशः संग्रहः, प्रातःपूजादिषु मन्त्रनिर्द्देशो नामाष्टाविंशः संग्रहः, ध्याननिर्द्देशो नाम ऊनत्रिंशः संग्रहः, अन्तर्यजन विधिर्नाम त्रिंशः संग्रहः, बहिःपूजायां-मावाहनादि विधिर्नामैक त्रिंशतमः संग्रहः, पुष्पप्रदान विधिर्नाम द्वात्रिंशः संग्रहः, नैवेद्य-दानादि विधिर्नाम त्रयस्त्रिंशः संग्रहः,तर्पणविधिर्नाम चतुस्त्रिंश संग्रहः, मध्याह्नपूजा विधि र्नाम पञ्चत्रिंशः संग्रहः, रात्रिपूजाविधिर्नाम षट्त्रिंशः संग्रहः, भगवन्नैमित्तिक परिचर्य्याविधि र्नाम सप्तत्रिंशः संग्रहः, मानसीय भगवदाराधनविधि र्नामाष्टत्रिंशः संग्रहः, शेषरहस्य प्रकाशनंनाम एकोनचत्वारिंशः संग्रहः, शेषसंग्रहोनाम चत्वारिंशः संग्रहः ।

No colophon

205

सूरिसर्वस्वम्

Dh. 82.

By गोविन्द कविभूषण सामन्तराय

Substence—Palm leaf, No of folia 145 (16.2"×1.2") Character Oriya, Date of copy 1786-87, A.D. Complete. Condition—not good, Find spot-not known.

Colophon— वीरकेशरिमनङ्गजराज प्रोद्यनेत्र ऽधिक षष्ठितमेऽङ्के
मत्कृतं लिखितमत्र मयासीत्तन्त्रमेतदनुशीलयतार्य्याः ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः, Similar to No 187

Digitized by PPRACHIN, SOA

206

Dh. 96. (a) स्मृतिसरोज कलिका

By विष्णु शर्म्मा

Substance— Palm leaf. No of folia 142 (13.1″×1.2″) Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition-good, Incomplete, Find spot Ranapur area, Dt. Puri.

Beginning— श्री रामचन्द्राय नमः, ॐ गणेशाय नमः, अविघ्नमस्तु

नत्वा विष्णुं गणेशञ्च गोभिलादीन्मुनींस्तथा ।
क्रियते नित्यकृत्येषु छन्दोगयानां च पद्धतिः ।

Authorities quoted—

भाषिता विष्णुशर्म्मेण प्रयत्नेन स्फुटीकृता
सरोज-कलिकानाम्ना स्मृतिस्नानादि कर्मणा ॥
मनुना याज्ञ वल्क्येन विश्वामित्रेण चात्रिणा
विष्णुना च व सिष्ठेन व्यासेनोशनसा तथा ॥

वोधायनेन दक्षेण शङ्खेनाङ्गिरसा तथा ।
आपस्तम्बेनागस्त्येन हारीतगुरुनारदैः ॥
पराशरेण गार्ग्येण गौतमेन यमेन च
शातातपेन लिखिते सम्वर्त्तेन तथैव च ।

गोभिलेन सुमन्तेन मनुस्वायम्भुवेन च ॥
अष्टाविंशतिभि र्जुष्टं शास्त्र लोकहितैरपि ।

End— सरोजकलिकाग्रन्थः स्मृ तिग्रन्थाष्टकं शुभम् ।
नाना स्मृतिं समालोक्य क्रियते विष्णुशर्म्मणा ॥

इति विष्णुशर्मकृतौ स्मृतिसरोज कलिकायां पंचगव्यादि प्रायश्चित्ताष्टमखण्डप्रकरणं सम्पूर्णम् ।

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

207

Dh.198 **स्मृति चन्द्रिका**

With Oriya prose translation.

Substance—Palm leaf, No of folia 43 (12.7″×1.3″) Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition—not good, Complete. Find spot—Parlakhemundi, Dt. Ganjam

Beginning— श्री शिवदुर्गा शरणम्

अथ स्मृतिशास्त्रोक्त सूक्ष्मभाषा लिख्यते ।

End— इति स्मृतिचन्द्रिका समाप्ता ।

Topics-अशोकाष्टमी, रामनवमी, नृसिंहजन्म, चैत्रमासकृत्य, वैशाखमासकृत्य, ज्येष्ठमास कृत्य, शीतलषष्ठी, देवस्नान, श्रीगुण्डिचा, श्रावणीपूर्णिमा, बलदेव पूजाकालनिर्णय । रक्षापंचमी, जन्माष्टमी, गौरीव्रत, विघ्नराजव्रत विधि, कुक्कुटीव्रत विधि, वामनजन्म, मूलाष्टमी, महालयानिर्णय, अपराजिता विधि, दीपावली, कार्त्तिकपौर्णमासीनिरूपण, प्रथमाष्टमी वसन्तपंचमी, भीष्माष्टमी, माघत्रयोदशी, शिवरात्रि, दोलयात्रा, शुद्धिनिरूपण, कन्याशौच विधि, बालाशौच, प्रोषितस्य मरणनिर्णय, सपिण्डीकरण विधि, तर्पण निर्णय, श्राद्धवैश्वदेवयोः कालनिर्णय, शस्त्रघातिनां मरणनिर्णय, अमावास्या निर्णय, एकोद्दिष्ट काल निर्णय, पार्वणश्राद्ध निर्णय, बालकपिण्डमाह, अर्द्धपथ, मातृपिंडमाह, सहगमनश्राद्धविधि, अपरपक्षे पितृश्राद्धविधि, प्रवास निर्णय ।

तिथि निरूपण, तिथिविचार, मासनिरूपण, ऋतुनिर्णय, अयननिर्णय; सम्वत्सर निर्णय ।

No colophon.

208

Dh. 199. **स्मृतिसंग्रहः or दिव्यसिंह कारिका**

By दिव्यसिंह सुधी

Substance—Palm leaf, No of folia 133 (13.3″×1.5″) Character-

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Date of copy is not given, Condition not so good, Incomplete, Find spot— Bhubaneswar, Dt. Puri.

Beginning— श्री गणेशाय नमः

वात्सान्वयसमुत्पन्नो द्विजसिंहाभिधः सुधीः
एकत्र स्मृतिवाक्यानि सगृह्येव लिखाम्यहम् ॥

No colophon.

209

Dh 13. स्मृतिसार संग्रहः

By विश्वनाथ मिश्र

Substance—Palm leaf. No of folia 82 (16.1"×1.8"), Character—Oriya, Date of copy is about 1725 A.D. Condition—good, Complete Find-spot—not known.

Beginning— श्री गणेशाय नमः

मन्वादिशास्त्राणि गुरोरधीत्य
सम्यक् तथाशास्त्रमतं प्रतीत्य ।
दृष्ट्वा च शिष्टाचरणं करोमि
श्री विश्वनाथः स्मृतिसार संग्रहः ॥

End— इति श्री विश्वनाथमिश्र.विरचितः स्मृतिसार संग्रहः समाप्तम् ।

Topics—सम्वत्सरनिर्णय,अयन निर्णय, ऋतु निर्णय,मास निर्णय, एकभक्तनिर्णय,नक्तनिर्णय, तिथिनिर्णय, शुद्धातिथि निर्णय, विद्धातिथिनिर्णय, वेधतिथि निर्णय, खण्डितनिर्णय.प्रतिपदादि निर्णय। अशोकाष्टमी निर्णय मदनत्रयोदशी निर्णय. दमनक चतुर्दशी निर्णय, अक्षयतृतीया, सावित्रीव्रत निर्णय, दशहरादशमी निर्णय, चम्पकद्वादशी निर्णय, देवस्नान निर्णय, भूमि-रजस्वला निर्णय, श्रीगुण्डिचा निर्णय, ब्रह्मदेवशयन कालविचार, सङ्कमस्नान निर्णय, नाग-पञ्चमीनिर्णय,वलदेवपूजा निर्णय, रक्षापंचमी निर्णय, जन्माष्टमी निर्णय, जयन्ती उपवास

Digitized by PPRACHIN, SOA

निर्णय, सतपूरिकामावास्या निर्णय, गौरीव्रत निर्णय, शिवचतुर्थी निर्णय, गणेश्वर चतुर्थी निर्णय, ऋषिपंचमी निर्णय, अगस्त्यर्घ्य निर्णय, दुर्गाष्टमी निर्णय, अनन्तचतुर्दशी निर्णय, शक्रोत्थापन निर्णय, इन्द्रपौर्णमी निर्णय, महाष्टमी निर्णय, अपराजितादशमी निर्णयः, कुष्माण्डदशमी निर्णय, कौमुदी पौर्णमी निर्णय, चित्राकृष्ण चतुर्द्दशी, प्रदीपामावास्या- निर्णय. सुखरात्रि निर्णय, गोष्टाष्टमी निर्णय, देवोत्थापनैकादशी, प्रथमाष्टमी, दीपावलिको- त्सव प्रावरणषष्ठी, पाषाणचतुर्दशी, बकुलामावास्या, भद्राष्टमी, पुष्पचन्दापना, घृतकम्बल निर्णय, माघकृष्णचतुर्दशी निर्णय, वरदा चतुर्थी, श्रीपंचमी, माघकृष्ण सप्तमी, भीष्मा- ष्टमी, भैम्येकादशी, भीमद्वादशी, वह्न्युत्सव पौर्णमासी, शिवरात्रि, तिथिभेद निर्णय, दोल- यात्रा निर्णय, चैत्रकृष्ण चतुर्द्दशी, मासकृत्यानि, मासादि निर्णय, प्रतिपदादितिथि निर्णय एकादशी निर्णय, द्वादशी निर्णय, अष्टकाश्राद्ध निर्णय, अन्वष्टका निर्णय, युगादि निर्णय, मन्वन्तर निर्णय, आकामावै निर्णय, अपरपक्ष निर्णय, काम्यतिथि श्राद्धकाल निर्णय, सम्पा- तिनो महालयश्राद्ध निर्णय, शस्त्रादिहतानां च श्राद्धनिर्णय, गयासमयोग निर्णय, संक्रान्ति श्राद्धनिर्णय, उदकुम्भश्राद्ध निर्णय, मासिकश्राद्ध निर्णय, सपाक्षिकश्राद्ध निर्णय, etc.

Authorities quoted—

अत्रि, अनन्तभट्ट, अङ्गिरा, आग्नेय पुराण, आपस्तम्भ, अश्वलायन, ईशानसंहिता, उशना, कर्कोपाध्याय, कर्कभाष्य, कल्पसूत्रभाष्य, कात्यायन, कण्व, कालादर्श, लक्ष्मीधर, कल्पतरुभाष्य, काश्यप, कूर्मपुराण, गरुड पुराण, गार्ग्य, गालव, गोभिल, गोविन्दराज, गौतम। etc.

No Colophon.

210

Dh.14(b).

स्मृतिसार संग्रह

By विश्वनाथ मिश्र

Substance— Palm leaf, No of folia 33 to 111. (16.7"×1.4") Character Oriya, Date of copy is not given, Condition worm, eaten Complete, Find spot Puri town

Same as in No 209. No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

211

Dh.15. **स्मतिसार संग्रह:**

By विश्वनाथ मिश्र

Substance—Palm leaf, No of folia 105 (15.2"×1.5") Character-Oriya. Date of copy is not given, Condition not good worm eaten. Scripts are not legp ible Find- spot- Govt. manuscripts Library. Madras. No colophon. Same as in No 289

212

Dh.16. **स्मतिसार संग्रह:**

By विश्वनाथ मिश्र

Substance— Palm leaf, No of folia 89 (13.7"×1.4")Character Oriya, Date of copy is not given, Condition lead worm, eaten Complete, Find spot Puri town

Same as in No192. No colophon.

213

Dh. 108. **स्मतिसार संग्रह**

By विश्वनाथ मिश्र

Substance—Palm leaf. No of folia 86 (14.6"×1.2") Character—Oriya, Condition—not good,worm eaten. on both the sides. Complete. Date of copy is 1720 A.D. Find spot— Parlakhemundi, Dt. Ganjam.

Colophon — श्लोकानांतु सहस्रे द्वे द्वे शते द्वे च विंशतिः
तते दश पुन श्लोका ग्रन्थस्यास्य प्रकीर्तिताः ।
गोपीनाथ नृपस्याऽङ्के तृतीये मासि कार्तिके
वासरेऽर्के भगवता लिखितः स्मृतिसंग्रहः ॥

214

Dh 157 **स्मतिसार संग्रह:**

By विश्वनाथ मिश्र

Substance—Palm leaf, No of folia 148 (16.3"×1.3") Character—

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Date of copy is not given Condition—good. Incomplete. Find-spot— Dharadharapur area, Dt. Cuttack.

No colophon. Same as in No 212.

215

Dh.200

स्मृतिसारोद्धारः

Substance— Palm leaf. No. of folia 45. (14.2"×1.3") Character Oriya, Date of copy is not given. Condition—good, Incomplete. (up to the 8th chapter) Find spot village— Charampa P. S. Bhadrak. Dt. Baleswar

Topics— चतुर्द्दश शुद्धिः, गर्भसंचयनव्यवस्था, दशकर्म व्यवस्था, शुद्धिगृहणं, रजस्वला विचारः, चन्द्रक्षये भोजनदोषः, श्राद्धविचारः, पार्वणलक्षणं, शिवरात्रिविचार, एकादशी निरूपणं, दूर्गाष्टमी विचारं, रुद्राक्षमाहात्म्यं ।

There are two other works namely Śudhhi chandrikā, by Kālidāsa chayanī, with Oriya translation, and Ashṭākshara Nārāyaṇa mantra, towards the end of the manuscript.

No colophon

216

Dh 60.

स्मृतिसारोद्धारः

Substance— Palm leaf, No of folia 28. (14."×1.3") Character— Oriya, Date of copy is not given. Condition—not good. worm eaten Incomplete. Find-spot Baripada Museum, Dt. Mayurabhnja, Orissa

No colophon.

Same as in No 198

Digitized by PPRACHIN, SOA

217

Dh. 72 हरिभक्तिविलास: or भगवद् भक्ति विलास.

• By गोपालभट्ट, Part II

Substance—Palm leaf, No of folia 156 (18.1" × 1.4") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Complete, Find spot— Parlakhemundi, Dt. Ganjam, Orissa

Beginning— श्रीकृष्ण शरणम्

वन्दे चैतन्यरूपं तं भगवन्तं यदिच्छया ।
प्रसभं नर्त्तते चित्तं लेखरङ्गे जडोऽप्ययम् ॥

End— श्री नन्दनन्दन सुगन्धपदारविन्द
प्रेमामृताब्धि रसतुन्दिल मानसा ये ।
नात्मार्थवृन्दमनुसंदधते नच स्वं
तेषां पदाब्जमकरन्दमधुव्रतः स्याम् ।

इतिश्री गोपालभट्ट विलिखिते श्री भगवद्भक्तिविलासे प्रासादिको नाम विंशो विलासः ।

Colophon— शकाब्दे पंचषट् शकसंख्ये सूर्ये तुलां गते ।
वृन्दावनान्त ग्रन्थोऽयं नन्दवासे समापित: ।

समाप्तोऽयं द्वादशसहस्र भगवद्भक्तिविलासो नामग्रन्थ: ।
श्री रामाय नमः ।

Topics— एकादशी निर्णयोनाम द्वादशो विलास: । विष्णुव्रतोत्सवो नाम त्रयोदशो विलास: । षाण्मासिकोनाम चतुर्दशो विलासः । दिव्याविर्भावो नाम पंचदशो विलास: । दामोदरप्रियो नाम षोडशो विलास: । पौरश्चरणिकोनाम सप्तदशो विलासः । मूर्त्तिप्रादुर्भावोनाम अष्टादशो विलास: । प्रातिष्ठिको नाम एकोनविंशो विलास: । प्रासादिकोनाम विंशो-विलास: ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

218

Db. 89. **हरिभक्ति विलास:**

By गोपालभट्ट

Substance- Palm leaf, No of folia 44 (14.5″×1.2″) Character-Oriya, Date of copy is not given, Condition not good, Incomplete, 10th chapter only. Find-spot Ranapur area, Dt. Puri.

Topics— सत्सङ्गमो नाम दशमो विलास:

No colophon.

There are some other subjects named 'Nāmatraya Rahasya' according to Rudrayamala, 'Yantra paddhati' नित्याष्टक (according to वैष्णव संग्रह:) and 'Gopāla sahasranāma' towards the end of the manuscript.

No colophon.

219

B.S. 21 **हरिभक्ति विलास:** Parts I & II

By गोपालभट्ट, with Tikā named दिग्दर्शनी

Substance—Country made paper, No. of folia 390 (13.5″×5.″) Character- Bengali, Date of copy is 1770 A.D. Condition- good, Complete, Find spot—Kujanga area, Dt. Cuttack.

Beginning— टीका श्रीकृष्ण चैतन्यचन्द्रो जयति

ब्रह्मादिशक्तिप्रदमीश्वरं तं दान्तं स्वभक्तिरूपयाघतीन्द्रम्
चैतन्यदेवं शरणं प्रपद्ये यस्य प्रसादात् स्मरणेऽर्थसिद्धि: ।

मूल— ॐ जेष्टाय नम:, ॐ विघ्नेश्वराय नम:, ॐ राधाकृष्णाभ्यां नम: ।

Digitized by PPRACHIN, SOA

चैतन्यदेवं भगवन्तमाश्रये
श्री वैष्णवानां प्रमुदे × × लिखामि ।
आवश्यकं कर्म विचार्य साधुभिः
सार्द्धं समाहृत्य समस्तशास्त्रतः ।

End— इति श्री गोपालभट्ट लिखिते श्रीभगवद्भक्तिविलासे प्रासादिको नाम विंशोविलासः ।

Colophon— शकाब्द १६९२

जयति विद्या ··· कृपार हरिचरणो हृदय नन्दन: श्री ब्रजनन्दन:
तस्यात्मजः श्री जगन्नाथदेव शर्म्मण: सुत: ।
श्री भुवनानन्द:, फाल्गुने शुक्लैकादशी तिथि:
समाप्तश्चेति ग्रन्थोऽयं श्री हरिभक्तिविलासयान् ।

× × ×

श्री मुर्शीदा ए ग्रन्थ संग्रह करिलाम, श्री गद्दीजार आशीर्वादे । × × वादे ए
श्री जगन्नाथदेव शर्मणोऽयं ग्रन्थ: ।

Topics— गौरवोनाम प्रथमो विलासः । दैक्षिको नाम द्वितीयो विलासः । वैष्णवालङ्कारो नाम चतुर्थो विलासः । स्नापयनिको नाम षष्ठो विलासः । पौष्पिकोनाम सप्तमोविलासः ।

220

Dh. 103 (b)

हरिहर चतुरङ्ग

By गोदावर मिश्र

Substence—Palm leaf, No of folia 58 (15."×1.4") Character Oriya, Date of copy is not given, Condition—worm eaten Incomplete. Find spot- Badakhemundi, Dt. Ganjam

There is no mangalā charaṇa at the beginning of the manuscript

Digitized by PPRACHIN, SOA

but in the printed book, published by Govt. Oriental manuscripts Library, Madras, there are three verses in the mangalacharaṇa, which are quoted below.

प्रत्यूह प्रति नागेन्द्र वारण' वारणाननम् ।
वन्दे चन्दनसिन्दूरबिन्दुभिश्चित्रिताननम् ॥

वन्दे हरिहरौ वीरौ चतुरङ्ग बलान्वितौ
वाणासुर पुरे पूर्वं युध्यमानौ रणप्रियौं ।

श्री दुर्गाचरणाम्भ ज द्वन्द्वचन्दन बिन्दुना
कृति गोदावरेणेय' तत्प्रसादाद् विरच्यते ।

Topicsn— गजपरिच्छेदः, रथपरिच्छेदः, अश्वपरिच्छेदः (Incomplete)

End of the first chapter.

इति श्रीमन्महाराजाधिराज गजपति प्रतापरुद्रदेव स्वहस्तधारितकनककेशरिचतुष्टया-वेष्टित शातकुम्भमय कुम्भस भृत,मेघाडम्बराभिधान सितातपत्रशोभमान कविपुङ्गव पण्डित राजगुरु वाजपेययाजी मन्त्रिवरगोदावरमिश्रविरचिते हरिहरचतुरङ्गे प्रथमो गज-परिच्छेदः ।

No colophon.

स्तवस्तोत्राणि—

221

Dh. 201. अष्टकमाला

Substance—palm leaf. No. of 32 folia (16.7" × 1.5") Character Oriya, Date of copy is not given, Condition—not good, Complete. Find spot—Ranapur area, Dt. Ganjam

Topics— पतितपावनाष्टक, गणेशाष्टक, व्यासविरचित व्यासाष्टक, रूपगोस्वामि-विरचिता मुकुन्दमुक्तावली, दुर्गापराधभञ्जन स्तोत्र', शङ्कराचार्य विरचित शङ्कराष्टक, शङ्कराचार्य विरचिता मानसीपूजा, दुर्गाष्टक ।

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

222

Dh 106.(a) **आनन्द लहरी** with टीका

By रघुनन्दन

Substance—Palm leaf, No of folia 48 (12.1"×1.8") Character--Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Complete. Find spot- Khalikota, Dt. Ganjam.

Beginning— of टीका

उत्थायाम्बुनिधे र्निरीक्ष्य च पुरः पुंसःप्रतापोद्भटान्
नारीरूपधरस्य कैटभरिपोः सान्निध्यमभ्यागता ।
अन्त र्मोदभरेण विभ्रति पुनस्तस्मिन निजामाकृतिं
व्रीडाविस्मयमोहिता भगवती देवी शिवायास्तु मे ॥

श्री चन्द्रमौलितनयः कविचक्रवर्त्ती
वाणीविलासरसिको रघुनन्दनोऽयम् ।
श्री शङ्कर प्रतिकृते रिह शङ्करस्य
काव्ये दुरूहविषमे विदधाति टीकाम् ।

End— इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री शङ्कराचार्य्य विरचिता आनन्द-लहरी समाप्ता ।

No colophon.

223

Dh. 88 (a) **केशव सहस्रनाम**

Substance—Palm leaf, No. of folia 15 (11.6"×1.3") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition good, Complete, Find-spot- Kapileswar, P. S. Bhubaneswar Dt. Puri

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

224

Dh. 49.(a) **गोपाल सहस्रनाम**

Substance—Palm-leaf. No of folia 33 (8.5"×1.6") Character—Oriya. Date of copy is sana 1290 Sala or 1883A.D. Condition-good. Complete, Find spot— Ranapur area, Dt. Puri

Colophon—दास कृपासिन्धु, २०, अङ्क सन् १२९० साल तुलमास १५दिन कार्त्तिक-कृष्णपक्ष तृतीया रविवार बेल चउद घडि समयकु लेखिला सम्पूर्ण यथा दृष्टि लेखितम् ।

225

B.S. 1. **गोपाल सहस्रनाम**

Substance—Country made paper, No of folia 15, (7.2"4.") Character- Bengali, Date of copy is not given. Condition— good, Incomplete, Find spot— Kujanga area, Dt. Cuttack

Colophon – गोपालसहस्रनाम (पुस्तक) मिद' श्री रामतत्त्व देवशर्म्मण: । श्रीहरि:

226

Dh. 84. **गोविन्दविरुदावली**

Substance— Palm leaf. No of folia 29 (6.7"×1.4") Character—Oriya, Date of copy is not given. Incomplete, Condition— good, Find-spot—Begunia, P.S. Khurda, Dt. Puri.

Beginning— श्री गुरुभ्यो नम:

इयं मङ्गल रूपा सा गोविन्द विरुदावली ।
यस्या: पठनमात्रेण श्री गोविन्द: प्रसीदति ॥

Digitized by PPRACHIN, SOA

End— यस्तौति विरुदावल्यां मथुरामण्डले हरिम्
अनया रमया तस्मै तूर्णमेव प्रसीदति ॥

इति श्री गोविन्द विरुदावली सम्पूर्णा ।

Colophon— श्रीगुरुगौराङ्ग उद्धार करिबे अधम सत्यवादीकु ।

27

Dh. 202 **दुर्गाष्टकादय:**

Substance—Palm leaf, No of folia 50 (9.5" × 1.3") Character—Oriya. Date of copy is not given, Condition—good, Complete, Find spot – Ranapur area, Dt. Puri.

There are some अष्टकs named शिवाष्टक, नृसिंहाष्टक etc. towards the end of the mss.

No colophon

228

Dh 203. **देवीस्तव** with टीका

Substance—Palm leaf, No of folia 21-71 First 20 folia are lost. Incomplete. Condition— worm eaten on both the sides. (10.2" ×1.3") Find-spot- Dharadharapur area, Dt. Cuttack.

It contains अनन्तव्रतकथा and some verses regarding आङ्गिरस at the end of the manuscript.

No colophon.

229

Dh.204 **नृसिंहपुराणोक्त वक्रतुण्ड कवचादय:**

Substance – Palm leaf. No. of folia 59. (7.1"×1.2")

Digitized by PPRACHIN, SOA

Character Oriya, Date of copy is not given. Condition—good, Incomplete. Find spot village— Charampa P. S. Bhadrak. Dt Balasore.

Topics— नृसिंह पुराणोक्त वक्रतुण्ड कवच, दुर्गारापधअञ्जा स्तोत्र, मृत्युञ्जय-स्तोत्र, कवच, शिवरहस्ये प्रदोष स्तवराज, देवकीनन्दन कविराजकृत वैष्णवाभिधानम्।

No colophon.

230

Dh.102. **विभिन्न पंजरस्तोत्रादय:**

Substance—Palm leaf, No of folia 81 (13.2"×1.2" Character - Oriya. Date of copy is not given, Condition good. Find spot Begunia P. S. Khurdha, Dt. Puri.

Topics— आथर्वणेय गायत्री कवच, स्कन्दपुराणोक्त सोममहाग्रहस्तोत्र, गौतमी-तन्त्रे गोपाल स्तवराज, नवग्रह स्तोत्र, विनायक व्रतकथा, विष्णुपञ्जर, पद्मपुराणोक्त दुर्गा-पञ्जर, नारदोक्ता परमवैष्णवी महाविद्या अपराजिता, भट्टारिका स्तोत्र, रुद्रयामले बगला-मुखी स्तोत्र, नारदीय पञ्चरात्रे ब्रह्मानारद सम्वादे नृसिंह कवच, रुद्राध्याय। etc.

No colophon.

231

Dh.107. **विभिन्नस्तवस्तोत्रादय:**

Substance— Palm leaf, No of folia 10 (12."×1.3") Character Oriya, Date of copy is not given, Condition good. Complete, Find spot Kujanga area, Dt. Cuttack.

Topics— गङ्गाष्टक by शङ्कराचार्य, गङ्गाष्टक by वाल्मीकि, यजुर्वेदोक्ता सन्ध्या पद्धति, सूर्यद्वादशनाम, शाम्बपुराणोक्त सूर्यस्तवराज, नृसिंहपुराणोक्त सिद्ध विनायक स्तोत्र गौतमतन्त्रे गोपालस्तवराज स्तोत्र, पद्मपुराणोक्त सरस्वती स्तोत्र, ब्रह्मोक्त महालक्ष्मीस्तोत्र,

Digitized by PPRACHIN, SOA

स्कन्द पुराणोक्त इन्द्राक्षी स्तोत्र, विष्णुसहस्रनाम, आदित्यहृदय, वज्रकवच (in Oriya) सन्तानगोपालपूजाविधि ।

No colophon.

232

Dh. 139. **विभिन्न स्तोत्रादय:**

Substance—Palm leaf. No of folia 65 (8.1" × 1.5") Character—Oriya, Condition—good, Date of copy is not given. Find spot—Bhubaneswar, Dt. Puri.

Topics — शङ्कराचार्य विरचित गङ्गाष्टक, गायत्री हृदय, विश्वामित्र प्रोक्त: गायत्री कल्प, परमहंसदीक्षा, राधाकृष्णलीला (Oriya) by जगन्नाथ दास, नवग्रह ध्यान, श्री वैष्णव चिन्तामणौ श्रीधर स्वामिना विरचितं नाम माहात्म्यम् ।

No colophon.

233

Dh 120 **विभिन्न स्तोत्रादय:**

Substance—Palm leaf, No of folia 153 (15.5" × 1.2") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Find-spot—Dharadharapur area, Dt. Cuttack.

Topics — पाण्डवगीता, शक्रादिस्तुति, नृसिंहकवच, इन्द्राक्षीस्तोत्र, नवग्रह स्तोत्राणि, शीतलाष्टक, गायत्री सहस्रनाम, आनन्द लहरी, महिम्नस्तोत्र, भवानीसहस्रनाम सरस्वती स्तोत्र, हनुमत् स्तोत्र, विष्णुनामाष्टक, मुकुन्दस्तोत्र । etc.

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

234

Dh. 205

मदन सारमोहपंजर

By सिद्धदास

Substance--Palm leaf, No of folia 48 (6.7″×1.2″) Character-Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Complete, Find-spot—village, Charampa, P. S. Bhadrak Dt. Balasore.

Beginning— ॐ सिद्धेश्वराय नमः

शृणु गौरि प्रवक्ष्यामि पटलं दशकारकम्
येन विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्य जयकारकम् ।

End— इति श्री मदनसार मोहपञ्जरे शिवोक्ते पार्वती सम्वादे दशमः पटलः ।
No colophon.

There is another subject named देवीपटलः on folia 49-87.

235

Dh. 106 (b)

महिम्न स्तोत्रम् with Tika

By मधुसूदन सरस्वती

Substance—Palm leaf, No. of folia 39 (12.1″×1.3″)Character--Oriya, Date of copy is not given, Condition- good, Complete, Find spot—Khalikota, Dt. Ganjam

Beginning— श्रीगणेशाय नमः

विश्वेश्वरं गुरुं नत्वा महिम्नाख्यस्तुतेरयम्
पूर्वाचार्य्यकृतव्याख्या संग्रहः क्रियते मया ।

End— इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्रीमद् विश्वेश्वर सरस्वतीचरणारविन्दमधुकरेण श्रीमधुसूदन सरस्वती समाख्यादरेण केनचिद् विवृत्या महिम्नाख्यस्तुतिव्याख्या समाप्ता ।

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

There are some other subjects named भवानीभुजङ्ग प्रयात, कनकधारा by शङ्कराचार्य, स्कन्दपुराणोक्त अन्नपूर्णा स्तोत्र, विष्णु पुराणोक्त लक्ष्मीस्तुति, रविप्रणीत विलोचनाष्टकम् etc.

236

Dh. 49 (b).

राधा सहस्रनाम

Substance—Palm leaf, No of folia 28 (8.6"×1.4") Character Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Incomplete, Find-spot- Ranapur area, Dt. Puri.

End – इति श्री ब्रह्मयामले शिवपार्वती सम्वादे राधिकादेव्याः सहस्रनाम सम्पूर्णम् ।

No colophon.

237

Dh.140.

बगलामुखीप्रयोगः and others

Substance—Palm leaf. No of folia 20 (13.2"×1.2") Character—Oriya. Date of copy is not given, Condition-not good. Complete, Find spot— Dharadharapur area. Dt. Cuttack.

Topics—बगलामुखी प्रयोग, अष्टाक्षर नारायणमन्त्र, शिवाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र, रामकवच, सावित्री स्तोत्र, (according to महाभारत) भैरवकल्पद्रुमे बगलामुखी प्रयोग, फेत्कारिणीतन्त्रे श्री दक्षिणकालिकायाः महाकालकृत कर्पूर स्तोत्र, विमलास्तोत्र कृष्णयामले सिद्धविमलास्तोत्र, सनत्कुमारतन्त्रे पौलस्त्य सम्वादे त्रैलोक्यमङ्गल नाम श्रीगोपाल कवचम् । etc.

No colophon.

238

Dh. 206.

बटुक भैरवस्तोत्रम्

Substance— Palm leaf. No. of folia 86, (12.×1"4.")

Digitized by PPRACHIN, SOA

Character- Oriya, Date of copy is not given. Condition— good, Find spot— Village-Charampa, P. S. Bhadrak, Dt. Balasore

Topics— वटुकभैरवस्तोत्र, नव ह पूजा, पञ्चमुख हनुमत् कवचम् । etc.

No colophon

239

Dh. 207. वटुक भैरवस्तोत्रम् and others

Substance— Palm leaf. No of folia 155 (8.9"×1.8") Character— Oriya, Date of copy is not given. Condition— good, Find-spot— Sakhigopal,, Dt. Puri.

Topics— वटुकभैरवशतनाम स्तोत्र, षडक्षरी राधिकामन्त्र, सरस्वती मन्त्र, महालक्ष्मी मन्त्र, दक्षिणकालिका माहात्म्य, गायत्री बहिर्जपविधि, गायत्री शापोद्धार, गायत्रीरूपनिर्णय, गायत्री हृदय, आथर्वणीय गायत्री कवच, गायत्री कीलक, गायत्री अर्गल, मन्त्रार्थनिरूपण, आदित्याग्नि संस्कार, त्रैलोक्यमङ्गल कवच, यजुर्वेदोक्त नीलसूक्त प्रयोग, कालिका कुङ्कुम ।

No colophon.

240

Db. 88 (b) विष्णु सहस्रनाम and others

Substance—Palm leaf. No. of folia 25 (11.6" × 1.3") Character— Oriya, Date of copy is not given. Condition good, Complete, Find-spot- Kapileswar, P. S. Bhubaneswar, Dt. Puri.

241

Db. 220. विष्णुसहस्र नाम and others

Substance—palm leaf. No. of folia 61 (9." × 1.2") Character-

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Date of copy is not given, Condition— good, Complete. Find spot—Ranapur area, Dt. Puri.

No colophon.

Topics— विष्णु सहस्रनाम, भगवद्गीता, बगलामन्त्रराज, शीतलाष्टक, अपराजिता-स्तोत्र, विष्णुपञ्जर स्तोत्र । etc.

242

P. 108. **विष्णु सहस्रनाम** with टीका

Substance—Palm leaf, No of folia 61 (9.1″×1.1″) Character-Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Complete. Find-spot- Village-Kapileswar, P. S. Bhubaneswar, Dt. Puri

No colophon.

Topics — विष्णु सहस्रनाम, शिव सहस्रनाम, विष्णुधर्मोत्तरे अपामार्जनक स्तोत्, सिद्धविद्या महालक्ष्मी स्तोत्र, रुद्रयामले पार्थिवशिवपूजा, आकाश भैरवकल्पे प्रतिक्रिया-स्तोत्रकथन नाम द्वादशोपदेशः, बौधायनोक्त महारुद्राभिषेक, गायत्रीकल्प, शिवबन्ध्या, वटुकभैरव कवच, गायत्री कीलक, ब्रह्मयाज्ञीतन्त्रे गायत्रीकल्प, विश्वामित्र विरचितगायत्री स्तवराज । etc.

No colophon.

243

Dh. 98. **विष्णु सहस्रनाम** with टीका

Substance—Palm leaf, No of folia 44 (12.8″×1.1″)Character-Oriya, Condition— good, Some folia are broken, Complete, Date of-copy is not given, Find spot— Ranapur area, Dt. Puri.

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

244

Dh.208. **शिव सहस्रनाम**

Substance—Palm leaf. No of folia 18 (10.9"×1.1") Character—Oriya. Date of copy is not given, Condition— good, Complete Find-spot—Ranapur area, Dt. Puri.

No colophon.

There are some folia. containing the procedure of writing of invitation letter, towards the end of the manuscript.

245

Dh.128 **शिव सहस्रनाम**

Substance—Palm leaf, No of folia 100 (12.7"×1.3") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition— good, Complete. Find spot—Dharadharapur area, Dt. Cuttack.

Topics— शिवसहस्रनाम, आपदुद्धारकल्प, भवानी सहस्र नाम, सूर्य सहस्रनाम, विष्णुसहस्र नाम। etc.

No colophon.

246

Dh. 209. **श्रीकृष्ण स्तोत्रावली**

Substance— Palm leaf. No of folia 131 (2.7"×1.4") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition-good, Incomplete, Find spot- Puri town, Orissa

Digitized by PPRACHIN, SOA

Topics— विश्वनाथ चक्रवर्ति विरचित गुरुदेवाष्टक, नित्यानन्दाष्टक, चैतन्याष्टक, शचीसुताष्टक, चैतन्याष्टक गौराङ्गस्तवकल्पतरु, गौराङ्गाष्टक, सार्वभौमभट्टाचार्य्य विरचित चैतन्यचन्द्रामृत, कुञ्जविहारि अष्टक, रूपगोस्वामी विरचित कुसुम स्तवक, दैन्यबोधिका प्रार्थना, सप्तविंशति लालसामयी प्रार्थना, रघुनाथ गोस्वामिविरचित कुसुमाञ्जलि स्तव, रूपगोस्वामि विरचित यमुनाष्टक, दास गोस्वामि विरचित राधाकुण्डाष्टक, सार्वभौम विरचित नित्यानन्दनामाष्टोत्तर शतनाम, सार्वभौम विरचित चैतन्यशतक, ब्रह्माण्डपुराणे शेषधरणी सम्वादे कृष्णनामाष्टोत्तरशतक, गौतमीतन्त्रे गोपालस्तवराजस्तोत्र, कृष्णनामदशक, नारदोक्त श्रीकृष्णस्तोत्र, श्रीमदनानन्दस्वामिकाख्य स्तोत्र, जीवगोस्वामि विरचित जाह्नवी अष्टक, ब्रह्माण्ड पुराणे शेषधरणीसम्वादे नारायणकृत राधिका स्तोत्र, कृष्णदास गोस्वामि विरचित राधाकृष्णलीला, जगन्नाथाष्टक, गोपीजनवल्लभाष्टक, राधाप्रार्थनाष्टक, रूपगोस्वामि विरचित श्रीराधाष्टक, गोपालवल्लभाष्टक, स्मरणमङ्गल, दासगोस्वामि विरचित मनःशिष्यार्थकादशक, दासगोस्वामि विरचित स्व नियमस्तव, रूपगोस्वामि विरचित पञ्चश्लोक, चैतन्यदेवस्य पञ्चश्लोक, चन्द्रशेखराचार्य्य विरचित वक्रेश्वराष्टक, चैतन्यमुख पद्मविगलित जगन्नाथाष्टक श्रीचरणारविन्दाष्टक, पद्मपुराणे मरीचिवशिष्ठसम्वादे यमुनामाहात्म्ये यमुनास्तोत्र ।

No colophon.

247

Dh. 101. **स्तवस्तोत्र माला**

Substance—Palm leaf. No of folia 133 (9.6"×1.2") Character—Oriya. Condition— good, Date of copy is not given. Find spot—Ranapur area, Dt. Puri.

Topics— सूर्य्यस्तव, सूर्य्यकल्प, बगलामुखीस्तोत्र, विनायकस्तोत्र, देवीसूक्त, देवीकल्प, रात्रिसूक्त, रात्रिकल्प, श्रीसूक्त, श्रीकल्प, शत्रुपलायन स्तोत्र, शत्रु पलायनकल्प, नृसिंहकवच, नृसिंहकल्प, वाराहीतन्त्रोक्त चण्डिकास्तोत्र, क्रोडतन्त्रोक्त चण्डीशतावृत्तिक्रम हरगौरीतन्त्रोक्त शतावृत्तिविधान, मारीचकल्प, रुद्राध्याय, पार्थिवलिङ्गार्चन, विष्णुसहस्रनाम, गायत्री प्रकरण, शिवसहस्रनामकल्प । etc.

No colophon.

Digitized by PPRACHIN, SOA

248

Dh.210

स्तव स्तोत्रमाला

Substance—Palm leaf, No of folia 80 (7.6"×1.4") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Find-spot—Sakhigopal, Dt. Puri.

Topics— गायत्री हृदय, प्रत्यङ्गिरामहाविद्या, नवग्रहस्तोत्र, दशरथप्रोक्त शनैश्चरस्तोत्र, वगलामुखी सहस्रनाम, वगलामुखी कल्प, वगलामुखीकवच माहात्म्य etc.

No colophon.

249

Dh.211.

स्तवावली

Substance—Palm leaf, No of folia 127 (4.8"×1.1") Character—Oriya. Date of copy is not given, Condition not good, Find-spot—Sakhigopal, Dt. Puri.

Topics— स्कन्दपुराणोक्त-महामृत्युञ्जय स्तोत्र, ब्रह्मयामले त्रैलोक्यमङ्गलनाम सूर्य्य कवच, ब्रह्मयामले नारदनारायण सम्वादे सुदर्शन कवच, वशिष्ठसंहितायां गायत्रीकवच, शिवपुराणे उत्तरखण्डे त्रिभुवनेश्वर अष्टोत्तर शतक, ब्रह्मास्वायम्भुव सम्वादे गायत्रीहृदय, पद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्रीकृष्णोत्तरशतनाम, नारदीय पञ्चरात्रे ब्रह्मनारद सम्वादे नृसिंहकवच, काशीखण्डे अन्नपूर्णा स्तोत्र, स्कन्दपुराणे तुलसी स्तोत्र, वगलामुखी स्तोत्र, रुद्रयामले प्रत्यङ्गिरा महाविद्या कवच, शङ्कराचार्य विरचित भवानीषोडशाष्टक, शीतलास्तोत्र, गायत्रीकवच etc.

No colophon.

250

Dh. 212.

स्तुतिस्तोत्रादय:

Substance—Palm leaf No of folia 149 (6.9"×1.2") Character—

Digitized by PPRACHIN, SOA

Oriya, Date of copy is not given. Condition—good, Find spot-Ranapur area, Dt. Puri.

Topics— मधुसूदनमन्त्र, शालग्राममन्त्र, गोपालमन्त्र, शीतलास्तोत्र, अध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्वादे श्रीरामहृदय, नृसिंहकवच, विष्णुसहस्रनाम, आथर्वणे गायत्रीकवच, नवग्रहदान, विष्णुपुराणे महालक्ष्मीध्यान, ब्रह्माण्डपुराणे शिवकवच, विश्वसारोद्धारे आपदुद्धारकल्पे भैरवस्तवराज।

Colophon — रामचन्द्र षड्ङ्गी लिखित।

251

Dh. 140.(b) **स्तोत्रकवचादय**:

Substance— Palm leaf, No of folia 50 (13.7" × 1.-") Character-Oriya, Date of copy is not given, Condition not good. Find-spot-Dharadharapur area, Dt. Cuttack.

Topics— शिवरहस्ये गौरीनारायण सम्वादे शिवाष्टोत्तर शतनाम, भैरवीतन्त्रे हर गौरीसम्वादे त्रैलोक्यमङ्गल नाम श्रीरामकवच, पद्मपुराणे व्यासशुक सम्वादे महारहस्यातिरहस्ये मनःशिरोमणितन्त्रे, शिवहृदय, महाभारते सावित्री स्तोत्र, भैरवतन्त्रे कल्पद्रुमे फेत्कारिणीतन्त्रे, दक्षिणकालिकायाः महाकालकृत कर्पूरस्तोत्र, कृष्णयामले सिद्धचिन्ता स्तोत्र, सनत्कुमारीतन्त्रे, पौलस्त्य सम्वादे त्रैलोक्यमङ्गल नाम श्री गोपाल कवच, शाम्भवीतन्त्रे, महारहस्ये देवीदेवसम्वादे गणेशस्तोत्र, आदियामले प्रत्यङ्गिरा महाविद्या।

No colophon.

252

Dh. 218 **स्तोत्रमन्त्रावली**

Substance—Palm leaf, No of folia 60, (7.2"+1.2") Character--Oriya. Date of copy is not given. Condition good. Find spot—Sakhigopal, Dt. Puri.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Topics— काशीखण्डे श्यासाष्टक, उपमन्युकृत शिवस्तव, ब्रह्मखण्डे सदाशिव माहात्म्य, ऋग्वेदोक्त देवीसूक्त, रात्रिसूक्त, अश्वत्थप्रदक्षिणविधि, शैवीमानसीपूजा, ऋक्वेदोक्तो श्रीसूक्त, बगलामुखी स्तोत्र, विघ्नेश्वर स्तोत्र, यज्ञोपवीतलक्षणानि etc.

253

Dh. 214

स्तोत्रावली

Substance—Palm leaf. No of folia 120(7.6"×1.2") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition— good, Find spot-Ranapur area, Dt. Puri.

Topics— स्कन्दपुराणे क्षेत्रमाहात्म्य, स्कन्दपुराणोक्त नवग्रह स्तोत्र, सनत्कुमार पौलस्त्य सम्वादे त्रैलोक्यमङ्गल नाम कवच, स्कन्दपुराणे इन्द्राक्षी स्तोत्र। etc.

No colophon

254

Db.215.

स्तोत्रावली

Substance—Palm leaf, No of folia 18 (14.5"×1.2"), Character--Oriya. Date of copy is not given, Condition good. Find- spot Khurdha area, Dt. Puri.

No colophon.

255

Dh. 81

स्तोत्रावली

Substance— Palm leaf, No of folia 66 (6.7"×1.2") Character-Oriya, Date of copy is not given, Condition—good, Find-sopt-Ranapur area, Dt. Puri.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Topics—त्रिपुरसुन्दरी स्तोत्र, रुद्रयामले त्रैलोक्यमङ्गल नाम कवच. वामदेव संहितायां षडक्षर स्तोत्र. ब्रह्मयामले पार्थिवार्चन कवच, सनत्कुमारतन्त्रे श्रीरुद्र कवच। etc.

256

B S. 17

स्तोत्रावली

Substance—Palm leaf. No of folia 85 (8.7" × 1.2") Character—Bengali, Date of copy is not given. Condition good, Find spot-Dharadharapur area, Dt. Cuttack

Topics— विष्णुसहस्रनाम, सूर्यस्तव, आदित्यस्तोत्र. विनायक स्तोत्र. राम कवच : etc.

No colophon.

257

Dh. 136.

हनुमत् कावम

Substance— palm-leaf, No. of folia 50 (13.7" × 1.7") Character—Oriya, Date of copy is not given, Condition – good, Find-spot-Khallikota, Dt. Ganjam.

Beginning – श्रीहनुमते नमः।

ऋष्यमूकगिरेः प्रान्तः सीता विरहकातरः।
भगवन् किं .... तत्सर्वं ब्रूहि विस्तरम्।

End— शान्तिमेतां प्रकुर्वीत पुत्रान्दीर्घायुषो भजेत्।
इदं रहस्यं परमं तवस्नेहात् प्रकाशितम्।
न देयं यस्यकस्यापि ... ...

No colophon.

—THE END—

Printed by A. T. Sarma, Siromani Press, Berhampur.

Digitized by PPRACHIN, SOA

Digitized by PPRACHIN, SOA

APPENDIX

Authors and works cited in the Smṛti works compiled in Orissa.

(1)

नित्याचार पद्धति by विद्याकर वाजपेयी *

अ— अग्निपुराण (1) अग्निसंहिता (2) अनन्त भट्टीय (1) अरुणाधिकार वार्त्तिक (1)

आ— आदित्यपुराण (1) आपस्तम्ब (7) आपस्तम्बकल्प (2) आपस्तम्बगृह्य (1) आश्वलायनसूत्र (2)

उ— उत्थानाख्य परिशिष्ट (1)

ऋ— ऋग्वेद ब्राह्मण (2) ऋग्विधान (1)

क— कर्क (1) कर्काचार्य (6) कल्प (7) कल्पतरु (24) कल्पतरुकार (2) कात्यायन (12) काण्वस्मृति (1 कालाग्निरुद्रोपनिषद् (1) कालादर्श (1) कालोत्तर (2) कूर्मपुराण (3) कृत्यचिन्तामणि (1) क्रमदीपिका (1)

ग— गृह्य (6) गृह्यगौतम (1) गृह्यसूत्र (2 गोभिल (1) गोभिलसूत्र (4) गौतम (1)

घ— घटनाग्रन्थ (1)

च— चिन्तामणि (1), चिन्तामणिकार (1)

छ— छन्दोगगृह्य (1) छन्दोग परिशिष्ट (9)

ज— जाबालोपनिषद् (2) जैमिनि (1), ज्ञानस्वरूप (ज्ञानस्वरूपाख्य प्रपञ्चसार टीकायां) ज्ञानार्णव (1) ज्ञानकाण्ड (1)

त— तन्त्रान्तर· पशुतन्त्रान्तरे (2) पञ्चमतन्त्रान्तर (1) तैत्तिरीयश्रुति (4)

द— दानधर्म (5) देवल (1) देवीपुराण (1)

ध— धूर्तस्वामी (1)

न— नरसिंह पुराण (11) नारदीय कल्प (2) नारायणोपनिषद् (1) नृसिंहकल्प (4)

प— पञ्चरात्र (10) पाञ्चरात्रिका (1) पतञ्जलि (2) पद्मपुराण (7) परिशिष्ट (2) पैठीनसि (1) प्रपञ्चसार (12) प्रभाकर (1) पाणिनि (1) प्राचीन पद्धति (1) प्राचीनाचार पद्धति (1) पाशुपत ग्रन्थः (1)

ब— बृद्धमनु (1) बृहत्कल्प (2) बृहदारण्यक (3 बौधायन (13) ब्रह्मसूत्र (1) ब्रह्मोपनिषद् (1)

भ— भट्टपाद (11) भट्टाचार्य (1) भवदेव (1) भविष्यपुराण (3) भरद्वाजसूत्र (3) भारत सावित्री (2) भाष्यकार (4)

---

* The figures within brackets indicate the number of reference

म— मत्स्यपुराण (1) मनु (3) मन्त्रमुक्तावली (1) मन्त्रावली (1) मरीचि (3) महाभारत (2) मार्कण्डेय (1) माध्यन्दिनधर्म (1) माध्यन्दिन प्रकरण (1) मेधातिथि-(1), मोक्षधर्म (1) मोक्ष परीक्षा written by the author(1).
य— यक्षपार्श्व (3) यजुर्विधान (1), याज्ञवल्क्य (7) योगसार (1), योगी याज्ञवल्क्य (7)
र— राजधर्म (1)
ल— लाटसूत्र (1), लिङ्गपुराण (3)
श— शङ्कराचार्य (2) शङ्ख (11) शाकुन (1) शारदातिलक (8) शास्त्रदीपिका (1) श्राद्ध-प्रकरण (2) श्रीधर (1) शुद्धिप्रकरण (1) श्रुति (2) शैव मन्त्रार्थमाला (1) शौनक-(1) श्रौतसूत्र (1)
स— समुच्चय (1) सम्प्रदाय ग्रन्थ (1) स्कन्दपुराण (3), स्वामी (1) सांख्य (1) सुरेश्वराचार्य (1) स्मृतिरत्नमाला (2)

---

[2]

कृत्य कौमुदी by बृहस्पति सूरी

अ— अङ्गीरा (15) अत्रि (1)
आ—आग्नेय पुराण (17) आदित्यपुराण (4 आपस्तम्ब (25) आश्वलायन (1)
उ— उद्दालक (1) उशना (3)
ऋ— ऋष्यशृङ्ग (4)
क— कात्यायन (11) कात्यायन परिशिष्ट (2) कालादर्श (1) कार्ष्णाजिनि (6) कुथुमि (1) कूर्मपुराण (12) कृच्छ्रवाद (1)
ग— गर्ग (2) गरुड पुराण (8) गार्ग्य (4) गालव (2) गृह्य परिशिष्ट (2) गोभिल (9) गौतम (7)
च— चन्द्रकेतु चरित (1) च्यवन (1)
छ— छन्दोग परिशिष्ट (3) छागलेय (2)
ज— जाबालि (6) जीमूतवाहन (1) ज्योतिः पराशर (1) ज्योतिःशास्त्र (9)
त— तत्वसागर संहिता (2)
द— दक्ष (1) देवल (9) देवीपुराण (8)
ध— धौम्य (1)
न— नरसिंह पुराण (2) नन्दीपुराण (2) नन्दिकेश्वर (1) नारद (1) नारदीय (5) नारदीय-पुराण (12)
प— पराशर (18) परिशिष्ट (1) पद्मपुराण (8) पितामह (1) पुलस्त्य (1) पैठीनसि (3) प्रचेता (6)

Digitized by PPRACHIN, SOA

ब— ब्रह्मपुराण (28) ब्रह्मवैवर्तपुराण (1) ब्रह्माण्डपुराण (16) बृद्धगार्ग्य (2) बृद्धवशिष्ठ (4) बृद्धशातातप (8) बृहत् प्रचेता (1) बृहत् मनु (2) बृहत् विष्णु (2) बृहत् वशिष्ठ (21) बृहस्पति (7) बौधायन (18)

भ— भगवती पुराण (3) भविष्य पुराण (15) भविष्योत्तर पुराण (24) भारद्वाज (1) भागवत पुराण (2) भारत (2)

म— मनु (14) मरीचि (5) महाभारत (13) मत्स्यपुराण (19) मार्कण्डेय (10) मार्कण्डेय-पुराण (3) मृत्युञ्जय पुराण (3) मोहनचूडोत्तर (2)

य— यम (11) यवन (1) यजुर्विधान (1) याज्ञवल्क्य (20) योगियाज्ञवल्क्य (1)

र— रामार्चितण्ड (14) रामायण (2)

ल— लक्ष्मीधर (6) लघु आपस्तम्ब (1) लघु हारीत (2) लिङ्गपुराण (8) लौगाक्षि (2)

व— वराह पुराण (8) वशिष्ठ (10) वह्निपुराण (3) वादरायण (1) वायुपुराण (1) व्यास-(5) विश्वानेश्वर (7) विरञ्चि (1) विश्वामित्र (3) विष्णु (9) विष्णुगुप्त (1) विष्णुपुराण (7) विष्णुधर्मोत्तर पुराण (41) विष्णुरहस्य (8) विष्णुसंहिता (1) वैशम्पायन (2)

श— शङ्करगीता (3) शङ्करसंहिता (1) शङ्ख (6) शतपथ स्मृति (1) शतानन्द (2) शतानन्द संग्रह (1) शब्दसमुच्चय (1) शातातप (16) शाम्बपुराण (1) शाङ्ख (2) शिवपुराण (5) शुद्धिदीपिका (3)

स— सनत्कुमारीय (1) सत्यव्रत (2) संवर्त (3) स्कन्द (2) स्कन्दपुराण (24) स्कन्द-विजय (1) सुमन्तु (5) सुव्रत (1) स्मृतिमीमांसा (2) स्मृतिसमुच्चय (5) स्मृति-सार (2) सौरभि (1)

ह— हरिवंश (1) हारीत (15)

---

[3]

नित्याचारप्रदीप -- प्रथमभाग, द्वितीयभाग

by नरसिंह वाजपेयी

अ— अग्न्याधान (1) अग्निमीमांसा (अस्मत् वृद्धप्रपितामह नरसिंह वाजपेयिभिः प्रपंचितं) (1) अङ्गीरा (24) अङ्गीरस कल्प (1) अत्रि (1) अश्वमेध प्रकरण (1) अक्षरकल्प (1)

Digitized by PPRACHIN, SOA

आ—आगम (1) आग्नेय पुराण (6) आचार पल्लव (2) आटवि (1) आदिपुराण (2) आदित्यपुराण (5) आपस्तम्ब (45) आपस्तम्बीय धर्मसूत्र (2) आथर्वणीय तापनीय श्रुति (1) आश्वलायन (1)

ई— ईशान (1) ईशान संहिता (2)

उ— उत्तरसौर (1) उशना (4)

ऋ— ऋग्विधान (2) ऋग्वेद ब्राह्मण (1) ऋष्यशृङ्ग (1)

ओ— ओङ्काराधिकार (1)

क— कक्क and कर्काचार्य (5) कपिल (1) कर्मविपाक (5) कर्मविपाक (शातातपीय) (1) and शातातपीय कर्मविपाक परिभाषा (1) कर्मविपाक संग्रह (9) कर्मविपाकसार (3) कर्मविपाक (महार्णव) (2) कर्मविपाक समुच्चय (11) कल्पतरु (8) कल्पतरुकार (10) कल्पसूत्र (2) कात्यायन (18) कात्यायन सूत्र (1) काण्वस्मृति (1) कामिक (4) काल निर्णय (1) कालादर्श (2) कालाग्निरुद्रोपनिषद् (1) कालिका पुराण (3) कालिदास वचनी (1) कालोत्तर (2) काश्यप (1) क्रियासार (2) कूर्मपुराण (12) कौत्स (1)

ग— गजेन्द्रमोक्षण (1) गरुड पुराण (8) गार्ग्य (3) गायत्री कल्प (1) गीता (9) गुह्यकुष्ठ (1) गृह्य परिशिष्ट (2) गोभिल (5) गोभिल गृह्यसूत्र (1) गोपथ ब्राह्मण (1) गौतम (31) गौतमीय (1) ग्रहयज्ञ प्रकरण (1)

घ— घटनागम (5)

च— चन्द्रिका (1) चिन्तामणि and चिन्तामणिकार (2)

छ— छन्दोगब्राह्मण (1) छन्दोगानुक्रमणी (1) छन्दोगपरिशिष्ट (25) छागलेय (5)

ज—जाबालि (5) जाबालोपनिषत्(1) जातुकर्ण्य (2) जैमिनि (5) ज्योतिश्शास्त्र (5) ज्योतिः-सिद्धान्त (1)

त— तन्त्रराज (1) तन्त्ररत्न (1) तन्त्रसार संहिता (5) तत्त्वसागर संहिता (2) तान्त्रिक-पद्धति (1) तापनीय वार्त्तिक (1) तापनीय श्रुति (2) त्रिपुरासार (2) त्रिपुरासार समुच्चय (2) तुलसीप्रक्रम (2) तैत्तरीयश्रुति (2)

द— दक्ष (14) दक्षस्मृति (2) दानसागर (2) दानधर्म (2) दानविवेक (2) दानप्रकाश (2) दाल्भ्य (3) दाक्षिणात्य निबन्ध (1) देवल (50) देवेन्द्राश्रम (2) देवीपुराण (21) देवी माहात्म्य (15)

ध — धौम्य (1)

न— नरसिंह पुराण (15) नान्दिपुराण (4) नारद (16) नारदकल्प (2)नारदीय(2) नारद पञ्चरात्र (1) नारद स्मृति (1) नारायणोपनिषत् (1) निघंटु (1) निगम (1) निगम-परिशिष्ट (1) नीलसरस्वती (1) नृसिंह माहात्म्य (1) नृसिंह कल्प (1)

Digitized by PPRACHIN, SOA

प— पञ्चरात्र (7) पञ्चरत्न (1) पद्मपुराण (14) पराशर (6) पशुपतन्त्र (1) पारस्कर (9) पाणिनि (1) पितामह (2) पिङ्गलागम (1) पिङ्गलामत (1) पुरश्चरण चन्द्रिका (1) पुरुषोत्तममाहात्म्यम् (2) पुलस्त्य (1) पूजाधिकार (1) पूर्वतापनीय उपनिषत् (2) पैठीनसि (24) प्रतिष्ठासार (1) प्रतिष्ठागम (1) प्रतिष्ठाप्रदीप (1) प्रचेता (2) प्रजापति (1) प्रभासखण्ड (2) प्रपञ्चसार (12) प्राचीनपद्धति (1) प्रायश्चित्त प्रकरण (2) प्रायश्चित्त प्रदीप (2).

ब— बभ्रु (1) बह्वृचपरिशिष्ट (1) बह्वृचगृह्य (1) बौद्धायन (45) ब्रह्मपुराण (27) ब्रह्मवैवर्त्त (2) ब्रह्मोपनिषत् (1) ब्रह्मांडपुराण (14) ब्रह्मसिद्धान्त (1) ब्रह्मगुप्त (1) ब्रह्मसूत्र (1) ब्राह्मणसंहिता (1) बृहस्पति (27) बृहत्कालोत्तर (2) बृद्धअत्रि (1) बृद्धमनु (3) बृद्धगार्ग्य (2) बृद्धपराशर (3) बृद्धवशिष्ठ (2) बृद्धयाज्ञवल्क्य (1) बृद्धशातातप (4) बृद्धगौतम (1).

भ— भगवद्गीता (1) भट्टपाद (9) भट्टाचार्य (13) भविष्यपुराण (30) भविष्योत्तर (4) भक्तिप्रदीप (1) भारद्वाजीयभाष्य (1) भास्कराचार्य्य (1) भाष्यकार (1) भूपालनिबन्ध (1) भोजपद्धति (1).

म— मनु (149) मन्त्रागम (5) मन्त्रसंहिता (1) मन्त्रराज (1) मन्त्रदेव प्रकाशिका (1) मण्डनमिश्र (3) मत्स्यपुराण (26) महाभारत (24) महार्णवकार (2) महाभाष्य (6) मय (1) मयसंग्रह (2) महागुरु (1) मरीचि (8) महाप्रतापाधिकार (1) माधवाचार्य्य (3) माधवीय (2) माधवस्वामी (1) माध्यन्दिनस्मृति (1) मार्कंडेय (1) मार्कंडेयपुराण (18) मीमांसा (3) मेधातिथि (6) मैत्रायणीय परिशिष्ट (2) मोहनचूडोत्तर (1)

य— यम (1) यज्ञपार्श्व (1) यजुर्विधान (2) याज्ञवल्क्य (71) याज्ञवल्क्यकार (1) योगीश्वर (1) योगीयाज्ञवल्क्य (33) योगशिखीय (5).

र— रत्नाकर (1) रसाल शिखरिणी (2) रामायण (5) राजमार्त्तंड (1) रामवाजपेयी (1).

ल— लक्षण संग्रह (1) लक्ष्मीधर (27) लक्ष्मीप्रतिष्ठाधिकार (1) लघुव्यास (5) लघुहारीत (3) लघुआपस्तम्ब (1) लाटसूत्र (1) लिङ्गकांड (1) लिङ्गपुराण (3).

व - वशिष्ठ (39) वशिष्ठयोग (1) वशिष्ठ संहिता (1) वशिष्ठकल्प (1) वत्स (1) वर्षप्रदीप (1) वलाबलाधिकरण (1) वामनपुराण (4) वराह (10) वाराहीतन्त्र (1) वार्त्तिक (2) वार्त्तिककार (4) वायुपुराण (15) वायुसंहिता (1) विज्ञानेश्वर (13) विज्ञान ललित (4) विश्वकर्मा (2) विश्वामित्र (2) विश्वामित्रकल्प (1) विश्वामित्र-

Digitized by PPRACHIN, SOA

गायत्री कल्प (2) विद्याकर.वाजपेयी (2) विद्याकर पद्धति (9) विष्णु (46) विष्णुधर्म-(7) विष्णुधर्मोत्तर (21) विष्णुपुराण (40) विष्णुरहस्य (4) विष्णु भारती (1) विष्णु-सहस्रनाम (1) विष्णुगुप्त (1) विरंचि (1) वैद्यशास्त्र (1) वैष्णवानां प्रतिज्ञा (2) व्यास (17) व्यासराज (2).

श— शतानन्द (6) शबरस्वामी (1) शङ्कराचार्य (3) शतपथश्रुति (2) शङ्ख (19) शङ्ख-लिखित (29) शातातप (18) शातातपीय कर्मविपाक (1) शाबर भाष्य (20) शाबर-भाष्यप्रदीप (1) श्राद्धप्रदीप (1) शाट्यायन (1) शारदातिलक (15) शिवपुराण-(18) शिवगीता (1) शिवधर्म (2) शिवरहस्य (1) शिष्ट (24) श्रीधर (1) शुनःपुच्छ-(1) शुद्धिगुच्छ (1) शुद्धिचन्द्रिका (1) शुद्धिमुक्तावली (1) श्रुति (1) श्लोकगौतम-(1) शौनक (1).

ष— षट्त्रिंशन्मत (4).

स— सप्तत्रय (1) सम्वर्त (6) स्कन्दपुराण (39) साहित्यशास्त्र (1) सांख्यायन गृह्य-सूत्र (3) स्नानाधिकार (1) स्नानप्रकरण (1) सुमन्तु (6) सुवर्णदानाधिकार (1) सुरेश्वर आचार्य (1) सुरेश्वर वार्त्तिक (1) सूर्यसिद्धान्त (2) सूत्रकार शास्त्र (1) स्मृति (8) स्मृतिरत्नमाला (1) स्मृतिरत्नमालाकार (1) स्मृतिमीमांसा (1) स्मृति-समुच्चय (2) सोमशम्भुतन्त्र (1) सौरकाण्ड (3).

ह— हयशीर्ष (10) हारीत (38) हेमाद्रि (4) होलाधिकरण (1).

---

[4]

विश्वनाथकृत स्मृतिसार संग्रह

अ— अत्रि (1) अनन्तभट्ट (16) अङ्गिरा (1).

आ— आग्नेय पुराण (4) आदित्यपुराण (3) आपस्तम्ब (10) आश्वलायन (2) आश्वला-गृह्यपरिशिष्ट (1)

Digitized by PPRACHIN, SOA

ई— ईशान संहिता (2).

उ— उशना (3).

ऋ— ऋष्यशृङ्ग (3).

क— कर्कोपाध्याय (2) कर्कभाष्य (4) कल्पतरु (8) कल्पतरुकार (लक्ष्मीधर) (21) कल्पतरुभाष्य (2) कल्पसूत्रभाष्य (1) कात्यायन (14) काण्व (1) कालादर्श and कालादर्शकार (27) काश्यप पञ्चरात्र (1) काश्यपसंहिता (1) कार्ष्णाजिनि (3) कूर्मपुराण (7) क्रिया कौमुदी (8).

ग— गरुड पुराण ( ) गार्ग्य (10) गालव (4) गृह्य परिशिष्ट (1) गोभिल (8) गोविन्दराज (3) गौतम (4).

च— चिन्तामणि (1) च्यवन (1).

छ— छन्दोग्य परिशिष्ट (8).

ज— जमदग्नि (1) जयन्ती (1) जयन्तीप्रकरण (1) जातुकर्ण्य (4) जाबाली (7) जीमूतवाहन (1) ज्योतिःशास्त्र (11) ज्योतिःसार समुच्चय (2).

द— दक्ष (2) दिवाकर (1) देवीपुराण (5) देवल (11) दैवज्ञचूडामणि (1).

ध— धवलनिबन्ध (1) धवल संग्रह (9)

न— नन्दीपुराण (1) नागरखण्ड ( ) नारद (3) नारद संहिता (1) नारदीय (14) नारदीयपुराण (3) निगम (3).

प— पद्मपुराण (1) परिशिष्ट (1) पारस्कर (3) पारस्करगृह्यभाष्य (1) पितामह (4) पुरुषोत्तम माहात्म्य (1) पुष्कर पुराण (1) पैठीनसि (16) प्रचेता (3) प्रजापति (1) प्रायश्चित्त प्रकरण (1).

ब— ब्रह्मपुराण (20) ब्रह्मवैवर्त पुराण (8) ब्रह्मसिद्धान्त (4) ब्रह्मांडपुराण (7) बौधायन (5) बह्वृचपरिशिष्टकारिका (1) बलभद्र संग्रह (1) व्याघ्र (1).

भ— भगवती पुराण (1) भगवद्गीता (1) भविष्यपुराण (19) भविष्योत्तर पुराण (12) भागवत (2) भारत (9).

म— मनु (20) मदनपारिजातकार (2) मरिचि (7) मत्स्य पुराण (18) महार्णव प्रकाशकार (1) माधवीय (11) माधवीकार (0) माण्डव्य (1) मार्कंडेय (3) मार्कंडेयपुराण (3).

य— यम (20) यमस्मृति (1) याज्ञवल्क्य (13) योगीश्वर (1).

र— राजमार्तंड (10).

Digitized by PPRACHIN, SOA

ल— लघुहारीत (1) लिङ्गपुराण (5) लौगाक्षि (2).

व— वराह पुराण (7) वशिष्ठ (4) वाक्यरत्नावली (1) वायुपुराण (12) वाल्मीकि (1) व्यास (6) विज्ञानेश्वर (7) विद्याकर (7) विद्याकर पद्धति (3) विश्वरूपाचार्य (1) विश्वामित्र (3) विष्णु (5) विष्णुधर्म (8) विष्णुधर्मोत्तर (18) विष्णुपद्धति (1) विष्णु पुराण (5) विष्णुरहस्य (4) वृद्धगार्ग्य (4) वृद्धशातातप (2) बृहदारण्यक (3) वृद्ध-मनु (2) वृद्ध वशिष्ठ (3) वैश्वानर संहिता (1) वैशम्पायन (1).

श— शङ्करगीता (1) शङ्ख (5) शतानन्द (11) शतानन्द संग्रह (24) शतानन्दसंग्रह रत्नावली (1) शतानन्द रत्नमाला (1) शम्भुकर पद्धति (5) शम्भुपुराण (1) शातातप (4) शिवखण्ड (1) शिवरहस्य (2) शिवराघव सम्वाद (2) शुद्धिमुक्तावली (1) शौनक-सूत्र (1) श्राद्धविवेक (9) श्राद्धविवेककार (5).

स— संग्रह निर्णय (1) सत्यव्रत (2) सनत्कुमार (3) समयप्रकाश (1) सम्वर्त (1) सम्व-त्सर प्रदीप (2) सावित्री स्मृतिसंग्रहकार (1) सिद्धान्त शिरोमणि (3) सुमन्तु (5) स्मृतिसार (1) स्मृतिसंग्रह (1) स्मृति समुच्चय (4) स्मृति रत्नमाला (2) स्कन्द-पुराण (37).

ह— हरिहर समुच्चय (1) हारीत (8).

---

(5)

दिव्यसिंह कृत—कालदीपः

क— कात्यायन (1) कालमाधवीय (1).
ग— गोविन्दराज (1).
छ— छन्दोग्य परिशिष्ट (1).
ब— बृहस्पति (1).
भ— भविष्यपुराण (1).
म— माधवाचार्य्य (2) माध्याचार्य्य (9).
व— विष्णु धर्मोत्तर (1) वैखानस (1).

Digitized by PPRACHIN, SOA

(6)

दिव्यसिंहकृत—श्राद्धदीपः

आ— आदित्यपुराण (1) आर्पस्तम्ब (5).

क— कात्यायन (1) कालादर्शकार (2).

ग— गोभिल (3) गौडाः (2) गौतम (1).

छ— छन्दोग्य परिशिष्ट (2).

त— तन्त्ररत्न (1).

द— देवल (2).

न— नारायण (1).

प— पैठीनसि (2).

ब— बृहस्पति (2).

म— मनु (3) मञ्जरीकार (1) मरीचि (1) मात्स्य (4) माधवाचार्य (3) मुकुन्द दीक्षित (1).

ल— लक्ष्मीधर (2) लघुहारीत (1).

व— व्यास (4) विज्ञानेश्वर (6) विप्रमिश्र (5) विष्णु (3) विष्णुधर्मोत्तर (1) विष्णुपुराण- (1) वशिष्ठ (1) वराह पुराण (1) विद्याकर वाजपेयी (2) वायुपुराण (6) विश्वनाथ-मिश्र (1).

श – शङ्ख (2) शुद्धिचन्द्रिकाकार (2) शूलपाणि (1).

स— स्कन्द पुराण (28) सुमन्तु (16) स्मृतिरत्नमाला (1) सिंहवाजपेयी (2).

ह— हारीत भाष्यकार (1).

---

(7)

रघुनाथदास कृत—कालनिर्णयः

अ— अगस्त्यसंहिता (1) अङ्गिरा (1) अनन्तभट्ट (4).

Digitized by PPRACHIN, SOA

आ— आग्नेय पुराण (4) आङ्गिरस (1) आचार प्रकाश (1) आदित्य पुराण (2) आपस्तम्ब (4).

ई— ईशानसंहिता (1).

ऋ— ऋष्यशृङ्ग (3).

ए— एकाम्रपुराण (4).

क— कण्व (2) कपिलसंहिता (1) कल्पतरु (2) काण्वसंहिता (1) कात्यायन (15) कार्ष्णाजिनि (1) कालादर्श (7) कालिकापुराण (1) काशीखण्ड (1) कूर्मपुराण (17) कृत्यकौमुदी (6) कोठक (1).

ग— गरुड पुराण (8) गार्ग्य (7) गालव (1) गोभिल (10) गोविन्दराज (1) गौतम (4) गौतमीय (1).

ज— जातुकर्ण्य (1) जाबालि (6) जैमिनि (1) ज्योतिःशास्त्र (12) ज्योतिःसार (1) ज्योतिसिद्धान्त (2).

त— तत्त्वसागर (1) तार्क्ष्यपुराण(2) तैत्तिरीय(1).

द— दक्ष (1) देवल (14) देवीपुराण (7) देवीरहस्य (1).

ध— धवलसंग्रह (5).

न— नन्दीपुराण (1) नागरखण्ड (3) नारद (9) नारदसंहिता (1) नारदीय (26) नारसिंह (1) निर्णय संग्रह (1).

प— पञ्चरात्र (1) पद्मपुराण (44) प्रचेता (2) प्रजापति (1) पारस्कर (1) पितामह (2) पैठीनसि (5)

ब— ब्रह्मपुराण (28) ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (18) ब्रह्मसिद्धान्त (5) ब्रह्मांड पुराण (5) व्याघ्रपाद (1) वृद्धगार्ग्य (2) वृद्ध गौतम (2) वृद्धवशिष्ठ (9) वृद्धशातातप (2) वृहदारण्यक (1) वृहन्नारदीय (3) वृहन्नारसिंह (1) वृहत्मनु (4) वृहस्पति (6) बौधायन (11).

भ— भविष्य पुराण (23) भविष्योत्तर पुराण (15) भृगु (3)

म— मनु (9) मरीचि (2) मत्स्यपुराण (15) महाभारत (19) माधवाचार्य्य(3) माधवीय (4) मार्कण्डेय (8)

य— यम (4) यज्ञपार्श्व (1) याज्ञवल्क्य (4).

र— रत्नमाला (1) राजमार्त्तंड (12)

ल— लिङ्गपुराण (9) लौगाक्षि (2)

Digitized by PPRACHIN, SOA

व— वराह पुराण (18) वराह संहिता (1) वर्द्धमान (1) वर्द्धमानकारिका (4) वशिष्ठ (8) वत्स (1) वह्नि पुराण (3) वाजसनेय (2) वादरायण (3) वायु पुराण (11) व्यास (14) विज्ञानेश्वर (11) विद्याकर पद्धति (6) विष्णु (3) विष्णुधर्मामृत (1) विष्णुधर्मोत्तर (29) विष्णुपुराण (7) विष्णु रहस्य (8) विष्णुस्मृति (1).

श— शङ्कर गीता (3) शङ्ख (3) शतानन्द (7) शतानन्दसंग्रह (10) शातातप (9) शाम्बपुराण (1) शिवरहस्य (3) शैवसारोद्धार (1) शैवोत्तर (4)

स— सङ्कर्षणकाण्ड (1) सत्यतपा (1) सनत्कुमार संहिता (5) सह्यखण्ड (1) स्कन्दपुराण (73) सिद्धान्तशिरोमणि (2) सुमन्तु (4) सूतसंहिता (1) सूर्यसिद्धान्त (1) स्मृतिरत्नमाला (1) स्मृतिसमुच्चय (3) स्मृतिसार संग्रह (1) सौरधर्मोत्तर (2) सौरपुराण (2).

ह— हरिवंश (2) हारीत (9).

:— ० —:

(8)

गदाधर राजगुरु कृत— कालसारः

अ— अगस्त्य संहिता (6) अङ्गिरा (21) अत्रि (2) अनन्त भट्ट (3) अशौचाधिकार (1)

आ— आगम संग्रह (1) आग्नेय पुराण (10) आचारसार (6) आदित्यपुराण (15) आपस्तम्ब (23) आश्वलायन (3).

ई— ईशान संहिता (3)

उ— उशना (12)

ऋ— ऋष्यश्रृङ्ग (5)

ए— एकाम्रपुराण (8).

क— कण्व (2) कर्काचार्य्य (4) कल्पतरुकार (41) कश्यप (5) काठकगृह्य (2) कात्यायन (31) कामधेनुकार (1) कामिक (1) कालमाधवीय (1) कालादर्श (16) कालिका-

Digitized by PPRACHIN, SOA

पुराण (1) कालिदास वचनि (3) काशीखण्ड (1) कार्ष्णाजनि (8) कूर्मपुराण (26) कृत्यकौमुदी (4) कैयट (I) कौथुमी (1).

ग— गरुड पुराण (10) गार्ग्य (9) गालव (6) गृह्यसूत्रभाष्य (1) गृह्य परिशिष्ट (2) गोभिल (20) गोविन्दराज (1) गौडाः (5) गौडीय चिन्तामणि (1) गौतम (17) गौडीय सम्वत्सर प्रदीप (1).

च— चतुर्विंशतिमत (I) चन्द्रशर्माकृत देवाच्चाप्रतिज्ञा (1).

छ— छन्दोग्य परिशिष्ट (27) छागलेय (1).

ज— जातुकर्ण्य (7) जाबालि (17) जैमिनी (3) जैमिनिरामायण (1) जैमिनीय सूत्र (1) ज्योतिःशास्त्र (23) ज्योतिःसागर (1) ज्योतिसिद्धान्त (2).

त— तार्क्ष्य पुराण (2) तिथितत्त्वकार (12).

द— दक्ष (5) दानसार (1) दाक्षिणात्य संग्रहकारिका (1) दुर्गाकल्प (1) दुर्गोत्सव चन्द्रिका (1) देवल (39) देवीपुराण (24).

ध— धवल संग्रह (7) धर्माब्धि (1).

न— नन्दिकेश्वर पुराण (1) नन्दीपुराण (2) नागरखण्ड (1) नारद (9) नारदीय (23) नारसिंह (3) नारायण उपाध्याय (1) नारायण भट्ट (1) नारायण भाष्य (6) निगम (6) निर्णयामृत (1) नीतिरत्नाकर (4) नृसिंहतापनीय (1).

प— प्रजापति (4) पञ्चानन (1) पण्डित सर्वस्व (2) पद्मपुराण (24) पराशर (9) पारस्कर(24) पितामह (1) पुरुषोत्तम पुराण (1) पुलस्त्य(2) पुष्कर पुराण (1) पूर्वमीमांसा (2) पैठीनसि (32).

ब— ब्रतसार (3) ब्रह्मपुराण (84) ब्रह्मवैवर्त्त (17) ब्रह्मसिद्धान्त (6) ब्रह्मांड पुराण (18) बह्वृच परिशिष्ट (1) व्याघ्रपाद (9) वृद्धगार्ग्य (8) वृद्धगौतम (3) वृद्धवशिष्ठ (4) वृद्धमनु (4) वृद्धमिहिर (2) वृद्धयाज्ञवल्क्य (2) वृद्धशातातप (7) वृहस्पति (26) वृहत् प्रचेता (2) वृहद् वशिष्ठ (1) वृहत् मनु (14) वृहत् शातातप (1) बौधायन-(21).

भ— भगवद् गीता (1) भगवत् स्मृति (1) भगवती पुराण (4) भविष्य पुराण (48) भविष्योत्तर (33) भरद्वाज (4) भागवत (1) भीम पराक्रम (1) भृगु (3) भोजराज-शैवागम संग्रह (1).

Digitized by PPRACHIN, SOA

म— मत्स्यपुराण (46) मण्डलाचार्य (1) मदन पारिजात (2) मदनपाल (1) मनु (69) मरीचि (16) मलमास कारिका (1) महाभारत (45) महाष्टमी पद्धतिकार (1) माधवाचार्य (32) माधवीय (9) मार्कंडेय (22) मेधातिथि (1) मैत्रेय गृह्यपरिशिष्ट (1).

य— यम (41) यमदग्नि (1) याज्ञवल्क्य (47) योगीयाज्ञवल्क्य (3) योगीश्वर (3).

र— रत्नमाला (2) राघवभट्ट (1) राजमार्त्तंड (10) रामायण (5) रुद्रधर (1) रुद्रयामल (2).

ल— लघुहारीत (8) लक्ष्मीधर (4) लिङ्गपुराण (14) लौगाक्षि (5).

व— वटेश्वर सिद्धांत (1) वत्स (1) वर्द्धमानस्मृति (2) वराह (14) वराह पुराण (3) वशिष्ठ (23) वशिष्ठ रामायण (1) वह्निपुराण (3) वात्स्यायन सूत्र (1) वामन (1) वामन पुराण (1) वाक्य रत्नावली (1) वायुपुराण (27) वाल्मीकि (1) व्यास (25) विज्ञानेश्वर (22) विप्रमिश्र (8) विलाससंग्रह कारिका (3) विवाहकारिका (1) विश्वनाथ मिश्र (1) विश्वप्रकाशकोष (1) विश्वरूपनिबन्ध (1) विश्वामित्र (5) विष्णु (26) विष्णुधर्म (5) विष्णुधर्मोत्तर (37) विष्णु पुराण (16) विष्णुरहस्य (11) विष्णुस्मृति (6) वैशम्पायन (1) वैश्वानर संहिता (2).

श— शङ्करगीता ( ) शङ्ख (27) शङ्खलिखित (8) शतानन्द (6) शतानन्द संग्रह (17) शबरस्वामी (1) शाट्यायन (2) शातातप (0) शाम्बपुराण (1) श्राद्धविवेक (3) श्राद्धसूत्रभाष्य (1) शिवपुराण (8) शिवरहस्य (6) श्रीधरस्वामि (1) शुद्धिगुच्छकार (2) शुद्धिसार (4) शूनपुच्छ (1) शूलपाणि (1) शैव पुराण (7) शौनक (2) शौनकसूत्र (1).

ष— षट्त्रिंशन्मत (8).

स— सत्यव्रत (4) सनत्कुमार संहिता (3) संग्रहकारिका (4) संवर्त्त (4) सह्याद्रिखण्ड (1) सिद्धांतशिरोमणि (2) सुमन्तु (11) स्मृतिमहार्णव (1) स्मृतिमीमांसा (1) स्मृतिसमुच्चय (2) स्मृतिसंग्रह (4) सौरधर्म (1) सौर पुराण (3) स्कान्द (85)

ह— हयशीर्ष (1) हरिभक्ति विलास (4) हरिभक्ति विलासकारिका (3) हरिवंश (2) हरिहरभाष्य (1) हरिहर समुच्चय (1) हरिस्वाप विवेक (1) हारालता (1) हारीत (47) हेमाद्रि (3).

—❀❀❀❀—

Digitized by PPRACHIN, SOA

[7]

गदाधर राजगुरु कृतः— आचारसारः

अ— अग्निपुराण (1) अङ्गिरा (16) अत्रि (1).

आ— आचार्य (1) आचारपल्लव (1) आथर्वण श्रुति (1) आदित्य पुराण (1) आपस्तम्ब-(52).

उ— उशना 7 .

ऋ— ऋग विधान (1) ऋष्यशृङ्ग (1).

क— कपर्द्दिभाष्य (1) ककाचार्य (5) कर्मविपाक समुच्चय (1) कल्पतरुकार (6) काण्वपाठ (1) कात्यायन सूत्र (1) कात्यायन (30) कालसार (2) कालमाधवीयकारिका (1) कालादर्शकार (1) कालिका पुराण (2) कालोत्तर (1) काश्यप (2) कुमार (1) कुल्लुकभट्ट (1) कूर्मपुराण (6) कृष्णवृहत् पण्डित महाराज (4) क्रतु (1).

ग—गरुड पुराण (2) गृह्यपरिशिष्ट (2) गृह्यसूत्र (2) गृह्योपनिषद् (1) गोभिल (4) गौतम (18)

च— चरक (1) चिन्तामणि (2) च्यवन (1).

छ— छन्दोग्य परिशिष्ट (4).

ज— जमदग्नि (1) जयस्वामी (2). जाबालि (1) ज्योतिःशास्त्र (2).

त— तत्त्वयामल (1) तत्त्वसार संहिता (3) तैत्तरीय श्रुति (.) तैत्तरीयशाखा नारायणीय-(1).

द— दक्ष (21) दानधर्म (2) देवल (28) देवीपुराण (2)-

ध— धौम्य (1).

न—नन्दा (2) नरसिंह पुराण (15) नारद (4) नारदीय पञ्चरात्र (2) नारदीय पुराण (1) निबन्धकृत् (3) निरुक्त (1) नीतिरत्नाकर (?) नृसिंहकल्प (1)

प— पद्मपुराण (9) पराशर (16) पाणिनि (1) पारस्कर (9) पारस्कर सूत्र (1) पुरुषसूक्त याज्ञवल्कीय कल्प (1) पैठीनसि (9) पौलस्त्य (1) प्रचेता (2) प्रपञ्चसार (3) प्राचीनाः (4).

ब — वृद्धमनु (2) वृद्धशातातप (5) वृद्धाः (1) वृद्धपराशर (1) वृहस्पति (12) वृहदारण्यक (2) वृहद्वशिष्ठ (1) वृहद्विष्णु (1) वृहद्विष्णुपुराण (1) बौधायन (27) ब्रह्मपुराण (32) ब्रह्मवैवर्त्त पुराण (6) ब्रह्मांड पुराण (22) ब्रह्मोपनिषत् (1) ब्राह्मण (2)

Digitized by PPRACHIN, SOA

भ— भगवद्गीता (3) भट्ट (2) भट्टाचार्य्य (4) भरद्वाज (3) भविष्य पुराण (26) भाष्यकार (1).

म— मण्डलाचार्य (2) मत्स्यपुराण (2) मदन पारिजात (1) मनु (97) मरीचि (5) महाभारत (15) मार्कंडेय (4) मार्कंडेय पुराण (5) मेधातिथि (2).

य— यजुर्विधान (3) यम (38) याज्ञवल्क्य (57) यज्ञपार्श्व (1) याज्ञिकाः (1) योगशिखीय (1) योगीयाज्ञवल्क्य (30).

र— रत्नाकर (1) रत्नमाला (1) राजमार्तंड (1) रुद्रधर (1).

ल— लक्ष्मीधर (18) लघुव्यास (1) लघुहारीत (3) लक्षणावस्तम्भ (1) लिङ्गपुराण (1).

व— वराह पुराण (6) वशिष्ठ (18) वाचस्पति (1) वामन पुराण (7) वायु पुराण (7) वार्तिक (1) वशिष्ठ रामायण (1) विज्ञाः (1) विज्ञानेश्वर(8) विश्वामित्र (2) विष्णु- (38) विष्णुधर्मोत्तर (4) विष्णुपुराण (39) विष्णुयामल (1) विष्णुस्मृति (4) वैद्यशास्त्र- (5) व्याघ्रपाद (1) व्यास (12

श— शङ्ख शङ्खलिखित (39) शब्दार्णव (1) शातातप (19) शारदातिलक (1) शिवपुराण (3) शिष्टाः(36) शुद्धिसार(3) संग्रहकारिका (1) शौनक (1) श्री क्षेत्रमाहात्म्य (1) श्रुति (14).

ष— षट्त्रिंशमत (4).

स— संग्रहकारिका (1) संस्कारसार (1) सत्यव्रत (1) संवर्त्त (5) सारसंग्रह (1) सुमन्तु (7) स्कन्दपुराण (7) स्नानसार (1) स्मृति (17) स्मृतिरत्नमाला (2) स्मृत्यन्तर (29).

ह— हरिहरभाष्य (3) हारीत (32).

(8)

महामहोपाध्याय कृष्णमिश्र कृत = कालसर्वस्वम् ।

अ— अगस्तिसंहिता (4) अङ्गिरा (2) अध्यात्मरामायण (1) अनन्त भट्ट (3)

आ—आग्नेय पुराण (3) आनन्द वन (2) आपस्तम्ब (1).

इ— इतिहास पुराण (4).

ई— ईशान संहिता (1).

Digitized by PPRACHIN, SOA

ऋ— ऋक् वेद (1).
ए— एकाम्रपुराण (10).

क— कर्काचार्य्य (1) कपिल (1) कण्व (1) कात्यायन (4) कालनिर्णयदीपिका (1) कालादर्श (10) कालिकापुराण (6) कामाभट्ट देवीदास (2) काशीखण्ड (1) कूर्मपुराण (9) कृत्यकौमुदी (2) कौमुदीकार (6) कृत्यचिन्तामणि (1) कोशलखण्ड (1)

ग— गर्ग (1) गरुडपुराण (6) गार्ग्य गङ्गामाहात्म्य (1) गीता (1) गोपाल (1) गोपालोपनिषत् (1) गोपालभट्ट (13) गोपीनाथ (गोपीनाथ वाजपेयी) (3) गोविन्दराज (1) गोभिल (1) गौडभट्टाचार्य (1) गौडाः (10) गौतम (6) गौतमीय (1).

च— चन्द्रिका (2).
ज— जाबालि (2) जीमूतवाहन (1) जैमिनीसूत्र (2) ज्योतिःसिद्धान्त (हेमाद्रि) (1).
त— तत्त्वसार संहिता (1) तिथितत्त्व (2).
द— दुर्गतत्त्व (1) दिव्यसिंह (13) दीपिका (2) दीक्षासार (1) देवल (5) देवीपुराण (6).
ध— धवल संग्रह (2).

न—नागरखण्ड (1) नामकौमुदी 1) नारद (2) नारदस्मृति (1) नारदपञ्चरात्र (1) नारदीय- (9) नरसिंह (1 नारायण (1) नारायण भट्ट (7) नारायण भट्टाचार्य (1) निगम- (3) निर्णयामृत (1) नृसिंहाचार्य (2) नृसिंह परिचर्याविलास (1) नृसिंह पुराण (1)

प— पञ्चरात्र (3) पण्डित सर्वस्व (1) पद्मपुराण (31) पराशर (1) पुष्कर पुराण (1). पैठीनसि (3) प्रतापमार्तंड (1) प्रपञ्च संहिता (1) प्रश्न पञ्चरात्र (1) प्रह्लाद-संहिता (1).

ब— वह्नि पुराण (2) ब्रह्मपुराण (13) ब्रह्म रामायण (2) ब्रह्मसिद्धांत ( ) ब्रह्मवैवर्त्त- (13) ब्रह्मांड पुराण (3) ब्राह्मण (1) वृद्धमनु (1) वृहद् वशिष्ठ (3) वृहन्नरसिंह-पुराण (1) वृहस्पति (1) बौधायन (3).

भ— भक्ति प्रदीप (2) भट्टाचार्य (2) भविष्य पुराण (19) भविष्योत्तर पुराण (17) भागवत (5) भारद्वाज (9) भास्वती (2) भास्कराचार्य ( ) भीमपराक्रम (1) भुजबल-स्मृति (1) भोज (1) भृगु (1).

म— मनु (7) मन्त्रप्रकाश (1) महाभारत (1) मार्कंडेय (3) मार्कंडेय पुराण (2) माधव- (15) माधवाचार्य (13) माधवीय (11) मात्स्य (6) मेदिनीकर (1).
य— यम (5) याज्ञवल्क्य (1) योगसार (1) योगी याज्ञवल्क्य (3) योगिनीतन्त्र (1).
र— रघुनन्दन (23) राजमार्त्तंड (10) रामतत्त्व प्रकाश (1) रामार्च्चन चन्द्रिका (6) रामायण (2).
ल— लक्ष्मीधर (2) लङ्काकांड (1) लिङ्गपुराण (12) लिङ्गवैभव (1).

Digitized by PPRACHIN, SOA

व— वराह (3) वराह पुराण (5) वराह संहिता (1) वसन्तराज (1) वर्द्धमान स्मृति-(2) वशिष्ठ (2) वशिष्ठरामायण (2) वाक्य निर्णय (1) वाचस्पति मिश्र (1) वाजपेयी (2) वाजसनेय (1) वामन पुराण (1) वायु पुराण (3) वालकांड (रामायण) (1) वाल्मीकि (1) व्यास (6) विद्याकर (4) विद्याकर पद्धति (1) विप्रमिश्र (2) विश्वनाथ (4) विश्वामित्र (3) विष्णु (2) विष्णुतन्त्र (1) विष्णुधर्मोत्तर (6) विष्णु पुराण (7) विष्णु-रहस्य (2) विष्णु श्रृङ्खल (1) विष्णु स्मृति (1) वैश्वानर संहिता (1) वैष्णव सर्वस्व-(1) वैष्णव नामारुणोदय (1).

श— शतानन्द (7) शब्दशक्ति प्रकाशिका (1) शम्भुकर (4) शाम्ब पुराण (1) श्राद्धा-धिकार (1) शिवरहस्य (1) शिरोमणि (1) श्रीधरस्वामि (2).

स— सनत् कुमार संहिता (1) सप्तखण्ड (1) सम्वत्सर प्रदीप (2) स्कन्द (38) स्मार्त-भट्टाचार्य (3) साधन दीपिका (2) सिद्धवाजपेयी (10) सिद्धांत शिरोमणि (2) सुप्रकाशकार (2) सुमन्तु (1) सूर्य्यसिद्धांत शिरोमणि (1) स्मृति महार्णव (1) स्मृतिसार (21) स्मृतिसारकार (3) स्मृतिसार संग्रह (1) स्मृतिसिद्धांत (1).

ह— हरिवंश स्मृति (1) हरिभक्ति विलास (7) हारीत (1) हेमाद्रि (3).

Digitized by PPRACHIN, SOA

Digitized by PPRACHIN, SOA